श्रीगणेशाय नमः ।

भाषानुवादसहितं

श्रीगोपालनामसहस्रम् ।

महावनाख्यविदुषा विहाणीपुरवासिना ।
गोपालनामसाहस्रं भाषया विवृतं स्फुटम् ॥

तच्च

श्रीकृष्णदासात्मज-गङ्गाविष्णोः
"लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" मुद्रणालये
रामचंद्र राघो इत्यनेन स्वाम्यर्थं
मुद्रितम् ।

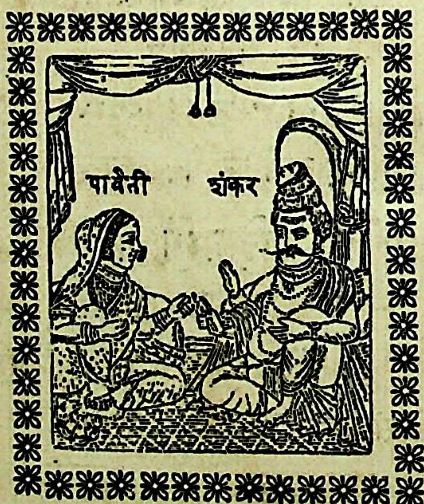
कल्याण-मुंबई.

संवत् १९६७, शके १८३२.

॥ श्रीराधाकृष्णाय नमः ॥



॥ उमाकान्ताय नमः ॥



प्रस्तावना ।

निखिलमहाशयोंको सविनय निवेदन करनेमें आताहै कि, इस अत्यन्त दुःखप्रद विकराल कलियुगमें संसाररूपसमुद्रसे पार होनेके लिये भगवन्नामकीर्तनरूप नौका परमकारुणिकभगवान्ने व्यासादिकमहर्षियोंद्वारा आरोहणार्थ (चढनेके वास्ते) स्थापित की है यद्यपि सकलभगवन्नामकीर्तनही सर्वथा संसारका मूलछेदनकरनहार है तथापि सकलभगवन्नामकीर्तनके मध्यमें गोपालसहस्रनामका कीर्तनही ऐहिकद्रव्यप्राप्तिरूप फल देनेमें अनुपम है अतएव " देशान्तरगता लक्ष्मीः समायाति न संशयः " ऐसा इसस्तवके फलश्रुतिमेंभी कहाहै पर अद्यावधि जितने श्रीगोपालसहस्रनामके पुस्तक हमने देशान्तरसे मँगवाकर देखे उनमें नानाप्रकारका पाठभेद विद्वज्जनोंद्वारा प्रतीत भया इसका कारण श्रीगोपालसहस्रनामका अर्थनिर्णायकसव्याख्यान पुस्तक नहीं मिला यही है इसीसेही प्रथम विद्वज्जनोंने अपनी समझमें जैसा आया वैसाही बनाकर छपादिया पर अब अनन्तकोटिब्रह्माण्डनायक " लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर " जीकी निर्हेतुककृपाकटाक्षसे कुरुक्षेत्रान्तपातिफतेपुरलब्धजनि बिहाणीवास्तव्य श्रीमहावनशास्त्रीजी द्वारा उक्त व्याख्यानका पुस्तक मैंने प्राप्त कियाहै सो उक्त श्रीशास्त्रीजीद्वारा टीकानुकूल श्रीगोपालसहस्रनामका पुस्तक शुद्ध करवाकर तथा श्रीगोपालसहस्रनामके प्रत्येक नामका अर्थ सरलहिन्दीभाषासे करवाकर ऐसी व्यवस्थासे छपाया है कि, जिसमें प्रत्ये-

क नाम जलदी दीखनेके वास्ते इस [ ] चिह्नमें दियाहै. कठिन शब्दका अर्थ इस ( ) चिह्नमें दियाहै. नामकी संख्या समझनेके वास्ते दश २ नामका अंक धराहै. तथा कितनेक नामपर श्रुति-स्मृतिइतिहास-पुराणोंके वचनभी प्रमाणभूत दियेहैं. गूढ-शब्दका अर्थ टिप्पणीमें करदियाहै. तथा पाठभेदभी दिखायेहैं. ऐसी ऐसी व्यवस्थासे छपायाहै कि, देखनेसे मनःसन्तोष अवश्य होजायगा मैं अपने श्रमको जबही सफल समझूंगा यदि इस स्तवको अपने दृष्टिके गोचर करोगे.

प्रार्थयिता-

गंगाविष्णु श्रीकृष्णद[ास]

"लक्ष्मीवेंकटेश्वर" छापखाना,

कल्याण-मुंबई.



॥ श्रीः ॥

श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः।

अथ

भाषानुवादसहित-
श्रीगोपालनामसहस्रम्।

उपोद्घातः।

कैलासशिखरे रम्ये गौरी पृच्छति शङ्करम्।
ब्रह्माण्डाखिलनाथस्त्वं सृष्टिसंहारकारकः ॥ १ ॥
त्वमेव पूज्यसे लोकैर्ब्रह्मविष्णुसुरादिभिः।
नित्यं पठसि देवेश कस्य स्तोत्रं महेश्वर ॥ २ ॥
आश्चर्यमिदमाख्यानं जायते मयि शङ्कर।
तत्प्राणेश महाप्राज्ञ संशयं छिन्धि मे प्रभो ॥ ३ ॥

श्रीकृष्णगुणमाधुर्यलीलासंसक्तमानसः।
गोपालनामसाहस्रं भाषया विवृणोम्यहम् ॥

किसी समय कैलासपर्वतके शिखरके ऊपर रमणीय एकांतस्थानमें बैठे हुए श्रीकृष्णचन्द्रभगवान्के हजार नामोंका पाठ करनेवाले अपने प्राणप्रिय महादेवजीको देखकर महादेवजीकी अर्धांगी महादेवजीका अंतर्ज्ञान जाननेवालीभी रही, तथापि स्त्रीस्वभावसे विस्मययुक्त होकर अन्यपुरुषोंके उपकारके लिये अपने प्राणप्रि-

यस्वामीके अत्यंत गुप्तवस्तुको बहुमानपुरःसरं पूंछने लगी कि,—

हे प्राणप्रिय ! ब्रह्मांडके विषैं रहनेवाले सकल पुरुषोंके नाथ (स्वामी) तथा सृष्टिका संहार करनेवाले आपही अपना हित-दर्शी मनुष्योंसे तथा चतुर्मुख आदि देवतोंसे पूजित हुए हे देवे-श्वर ! तथा हे महेश्वर ! ! किसकी नित्य स्तुति करते हो ? अर्थात् आपसे अन्य कोई स्तुतियोग्य है जिसकी स्तुति करते हो सो यह अन्यदेवका स्तोत्रपाठ मुझको बडा आश्चर्य (संशय) करनेवाला है तस्मात् हे प्राणेश ! तथा हे महाप्राज्ञ (सर्वसं-शय छेदनहार) ! ! आपके सिवाय मेरेको कोईभी अधिक प्रतीत नहीं होता है. आपसे अधिक अन्य कोई है वा नहीं है. यह मेरे संशयको हे प्रभो (समर्थ) ! आप दूर करो ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥

॥ श्रीमहादेव उवाच ॥

धन्यासि कृतपुण्यासि पार्वति प्राणवल्लभे ।
रहस्यातिरहस्यं च यत्पृच्छसि वरानने ॥ ४ ॥

भगवन्नामकीर्तनही मुझसे होगा ऐसा विचारकर महादेवजी अपनी प्राणप्रियपार्वतीके मुखको देखकर संबोधनप्रयोग करतेहैं. हे पर्वतसुते ! हे मम प्राणतुल्य प्रिये ! ! हे वरानने (शोभन-मुखि) ! ! ! अतिगोपनीय मंत्र आदिसेभी अत्यंत गोपनीय भगवन्नामकीर्तनरूप रहस्य तू पूछती है इससे तू धन्य है. और तू जीवोंके ऊपर उपकार करनेवाली है ॥ ४ ॥

स्त्रीस्वभावान्महादेवि पुनस्त्वं परिपृच्छसि ।
गोपनीयं गोपनीयं गोपनीयं प्रयत्नतः ॥ ५ ॥
दत्ते च सिद्धिहानिः स्यात्तस्माद्यत्नेन गोपयेत् ॥
इदं रहस्यं परमं पुरुषार्थप्रदायकम् ॥ ६ ॥

हे महादेवि (मेरे अनुष्ठानसे बडा मोदवाली) ! स्त्रीस्वभावसे (साहससे) जो तू फिर मुझसे पूछती है सो यह भगवन्नामकीर्तनरूप अतिरहस्य प्रयत्नसे गोपन करने योग्य है. सहसा सब पुरुषोंके अगाडी वक्ष्यमाणरहस्य कहना नहीं. अनधिकारी इतरपुरुषोंको रहस्य देनेसे स्वार्थकी हानि होतीहै. तस्मात् हे भद्रे ! परम उत्कृष्ट पुरुषार्थचतुष्टयका देनहार यह रहस्य अति यत्नसे रक्षणीय है ॥ ५ ॥ ६ ॥

धनरत्नौघमाणिक्यं तुरङ्गमगजादिकम् ।
ददाति स्मरणादेव महामोक्षप्रदायकम् ॥ ७ ॥
तत्तेऽहं संप्रवक्ष्यामि शृणुष्वावहिता प्रिये ।
योऽसौ निरञ्जनो देवश्चित्स्वरूपी जनार्दनः ॥८॥
संसारसागरोत्तीर्णकारणाय सदा नृणाम् ।
श्रीरङ्गादिकरूपेण त्रैलोक्यं व्याप्य तिष्ठति ॥९॥

जो यह वक्ष्यमाण रहस्य भगवन्नामकीर्तन करनेवाले पुरुषोंको धन, रत्नोंका ओघ (समुदाय), अश्व, गज आदिकोंको इस लोकमें स्मरणमात्रसेही देताहै. और अंतमें मोक्षको देताहै

१ आगे कहा जायगा सो । २ धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष । ३ राखने योग्य ।

सो हे प्रिये ! तेरेताईं मैं कहूंगा तू सावधान होकर श्रवण कर जो संपूर्णोंका अंतर्यामी निरंजन (त्रिविध[1]कर्म तन्निमित्तक देहइंद्रियरूप प्रकृतिसंबंधाख्य अंजनरहित) भक्तमोदक चित्स्वरूपी (ज्ञानस्वरूपी) जनार्दन भगवान् है सोही भगवान् नरोंके काम, क्रोध आदि महाग्राहोंकरके दुस्तर संसाररूप सागरके तरनेके लिये श्रीरंग आदि रूपसे त्रिलोकीमें व्याप्त होकर स्थित है ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥

ततो लोका महामूढा विष्णुभक्तिविवर्जिताः ।
निश्चयं नाधिगच्छन्ति पुनर्नारायणो हरिः ॥ १० ॥
निरञ्जनो निराकारो भक्तानां प्रीतिकारकः ।
वृन्दावनविहाराय गोपालं रूपमुद्वहन् ॥ ११ ॥
मुरलीवादनाधारी राधायै प्रीतिमावहन् ।
अंशांशेभ्यः समुन्मील्य पूर्णरूपकलायुतः ॥ १२ ॥
श्रीकृष्णचन्द्रो भगवान्नन्दगोपवरोद्यतः ।
धरणीरूपिणीमा[3]तृयशोदानन्ददायकः[4] ॥ १३ ॥
द्वाभ्यां प्रयाचितो नाथो देवक्यां वसुदेवतः ।
ब्रह्मणा प्रार्थितो देवो देवैः सर्वैः सुरेश्वरि ॥ १४ ॥
जातोऽवन्याऽपि च नुतो मुरली वेदरेचिका ।
तया सार्द्धं वचः कृत्वा ततो जातो महीतले ॥ १५ ॥

---

१ मनोवाक्कायकृत किंवा राजसादि । २ दुःख । ३ मातेति पा० । ४ दायिनीति० ।

संसारसारसर्वस्वं श्यामलं महदुज्ज्वलम्।
एतज्ज्योतिरहं वन्द्यं चिन्तयामि सनातनम्॥ १६॥

तिस श्रीरंगआदिरूप भगवान्‌के विषैं प्रत्यक्षफल देनहार देवतांतरोंके उपासक महामूढपुरुष भगवान्‌ही सब फल देनहार है ऐसा निश्चय नहीं करतेहैं. ऐसी लोगोंकी स्थिति देखकर फिर निरंजन (दुःखरहित) निराकार (प्राकृत आकारकरके रहित) प्रपन्नोंके ऊपर प्रीति करनेवाले वृंदावनमें विहार (क्रीडा) करनेके लिये गोपवेषको धारण करनेवाले संपूर्णचेतनाचेतनके अंतरात्मा शरणागतोंकी आर्ति दूर करनेवाले वंशीके सुखोंको चारों तरफसे धारण करनेवाले और श्रीराधाके विषैं अत्यंत प्रीति करनेवाले मत्स्य, कूर्म, वराह, वामन, हयग्रीव, हंस, श्रीनृसिंह, श्रीराम, धन्वंतरि, परशुराम, नारद व्यासादिरूप जो अंशावतार तथा आवेशावतार इन सबोंकी अपेक्षासे सौशील्य आदिकगुणोंका अधिक प्रकाश करनेवाले पूर्ण कलायुक्त और नंदगोपके वरके लिये अर्थात् ब्रह्मदत्तवरको सफल करनेके लिये उद्यत (प्रवृत्त) और धरणीरूप माता यशोदाको आनंद देनेवाले पूर्वजन्ममें पृश्नि सुतपोरूपसे होनेवाले इस जन्ममें जो देवकी वसुदेव इन दोनोंकी प्रार्थनाके विषय तथा भूभार दूर करनेके लिये सब देवतोंकरके सहित ब्रह्माजीकी प्रार्थनाके गोचर तथा पृथ्वीसे स्तुत अर्थात् अपने २ कामकी प्राप्तिके लिये संपूर्णोंके प्रार्थनीय भगवान्, हे सुरेश्वरि! वसुदेवकी भार्या देवकीमें श्रीकृष्णचंद्रनामसे अव-

तार लेतेभये परंतु यह अवतार स्वरूपज्ञानसे च्युत करनेवाली जो मुरलीरूप योगमाया तिसके साथ " गच्छ देवि व्रजं भद्रे " इत्याद्युक्तप्रकारसे वचन कहकरके हे प्रिये ! महीतलमें उत्पन्न है तिसही संसारसारके सर्वस्व (मूलरूप) उज्ज्वलवर्ण राधा श्यामलवर्ण माधव रूपसे वंदनीय सनातन श्रीकृष्णचंद्रजीको मैं चितवन करताहूं अर्थात् तिसही अखिलाधार राधामाधवयुंगल (जोडी) का स्तोत्रपाठ करताहूं ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥

गौरतेजो विना यस्तु श्यामतेजः समर्चयेत् ।
जपेद्वा ध्यायते वापि स भवेत्पातकी शिवे ॥ १७ ॥
स ब्रह्महा सुरापी च स्वर्णस्तेयी च पञ्चमः ।
एतैर्दोषैर्विलिप्येत तेजोभेदान्महेश्वरि ॥ १८ ॥

हे शिवे ! गौरतेज (राधा) के विना श्यामतेज (श्रीकृष्णचंद्र) का जो पुरुष भेदबुद्धिसे उपासना (पूजन) जप ध्यान

१ कोईक सांप्रदायिक जैसे मृत्तिका (मट्टी) का और घटका स्वरूपसे अभेद है वैसाही श्रीराधिका श्रीकृष्णजीका स्वरूपैक्यरूप अभेद है ऐसा जानकर जो पुरुष पूजन करताहै उसकाही कल्याण होताहै ऐसा अर्थ करते हैं और कोईक सांप्रदायिक जैसे " रामसुग्रीवयोरैक्यं देव्येवं समजायत " इत्यादिस्थलमें स्वरूपैक्यरूप अभेद नहीं है किंतु अपृथक्सिद्धरूप अभेदही है ऐसा अभेद जानकर जो पूजन करतेहैं उन्होंकाही कल्याण होताहै तात्पर्य यह है कि स्वयंप्रकाशरूप श्रीकृष्णजी यद्यपि गौर और श्याम रूपके भेदसे भिन्न प्रतीत होते हैं परंतु शरीर शरीरिभाव तथा अर्धाङ्गीभाव तथा " अनन्या हि

करता है वह पुरुष ब्रह्मघाती मद्यपान करनेवाला स्वर्णका चोरी करनेवाला गुरुके शय्यापर सोनेवाला गौओंको मारनेवाला ऐसा २ पातकी होयगा तस्मात् हे महेश्वरि ! राधाके विना श्रीकृष्णजीका फलभेदप्रयुक्त भेदबुद्धिसे जो पूजन करता है वह पुरुष ब्रह्महत्यादिक दोषोंकरके लिपायमान है तात्पर्य्य यह है कि, वह पुरुष ब्रह्महत्यादि दोषवालाही है ऐसा तू निश्चय कर ॥ १७ ॥ १८ ॥

तस्माज्ज्योतिरभूद्द्वेधा राधामाधवरूपकम् ।
तस्मादिदं महादेवि गोपालेनैव भाषितम् ॥ १९ ॥

तस्मात् (भक्तवात्सल्यहेतुसे) वह स्वयंप्रकाशस्वरूप भगवान् एकही राधामाधव ये दो रूपसे विद्यमान है. हे महादेवि ! गौरतेज (श्रीराधा) के अर्थ श्रीगोपालजीनेही अपना नामकीर्तनरूप रहस्य कहाहै ॥ १९ ॥

' किस कालमें कहा सो दर्शातेहैं '—

दुर्वाससो मुनेर्मोहे कार्तिक्यां रासमण्डले ।
ततः पृष्टवती राधा संदेहं भेदमात्मनः ॥ २० ॥

मया सीता भास्करेण प्रभा यथा ।" इत्युक्तरीतिकरके तेजस्तेजस्विभाव धर्मधर्मिभाव शक्तिशक्तिमद्भावआदिहेतुसे श्रीराधिका श्रीकृष्णजी एकही हैं ऐसे कहतेहैं भेदबुद्धिसे पूजन करनेमें भगवान्ही दोष कहतेहैं " आवयोर्भेदबुद्धिं च करोति स नराधमः । तस्य वासः कालसूत्रे यावच्चन्द्रदिवाकरौ ॥ आदौ राधां समुच्चार्य पश्चात्कृष्णं वदेद्बुधः । व्यतिक्रमे ब्रह्महत्यां लभते नात्र संशयः ॥ " इति ॥

कार्तिकमासकी पूर्णमासीकी रात्रिमें रासमंडलके समय श्री-कृष्णचंद्रजीको देखने वास्ते आनेवाले दुर्वासामुनि जिस कालमें कहने लगे कि, अहो! अच्युतभगवान् किस प्रकार गोपोंकी स्त्रि-योंके संग रमण करतेहैं? ऐसे उक्त ऋषिके मोहके अनंतर श्रीराधा अपने भेदविषयक संदेहको जब पूछतीरही तिसही कालमें हे देवि! श्रीराधाके अर्थ श्रीगोपालजीने अपना रहस्य कहा है ॥ २० ॥

निरञ्जनात्समुत्पन्नं मयाधीतं जगन्मयि ।
श्रीकृष्णेन ततः प्रोक्तं राधायै नारदाय च ॥ २१ ॥
ततो नारदतः शर्वे विरला वैष्णवा जनाः ।
कलौ जानन्ति देवेशि गोपनीयं प्रयत्नतः ॥ २२ ॥

प्रकृतिसंबंधरूप अंजनरहित श्रीकृष्णजीसे उत्पन्न होनेवाला वक्ष्यमाण रहस्य श्रीराधिकाके द्वारा मैंने हे जगन्मयि! सर्वज्ञे! अ-ध्ययन कियाहै और तिसके अनंतर श्रीकृष्णजीने राधिका तथा नारद इन्होंके अर्थ वह रहस्य कहाहै और हे शर्वाणि! तिसके अनं-तर नारदजीसे वैष्णवजनही कलिमें जानते हैं तात्पर्य यह है कि, विष्णुभक्तिशून्यजनोंको तो यह रहस्य जाननाही अतिदुर्लभ है इससे हे देवेशि! वक्ष्यमाणरहस्य अत्यंतप्रयत्नसे गुप्त रखना अर्थात् अनधिकारी पुरुषोंको इस रहस्यका उपदेश नहीं करना ॥ २१ ॥ २२ ॥

---

१ इह अनुगाद्यभाव आर्षः ।

'अनधिकारी जनोंको दर्शातेहैं'—

शठाय कृपणायाथ दाम्भिकाय सुरेश्वरि।
ब्रह्महत्यामवाप्नोति तस्माद्यत्नेन गोपयेत् ॥ २३ ॥

शठ, कदर्य, जनोंको ठगनेके लिये झूंठ आचरण करनेवाला, इन पुरुषोंको हे सुरेश्वरि! वह रहस्य जो उपदेश करताहै वह ब्रह्महत्यादोषको प्राप्त होताहै तिससे हे भद्रे! अतियत्नसे इस रहस्यको गुप्त रखना ॥ २३ ॥

ॐ अस्य श्रीगोपालसहस्रनामस्तोत्रमन्त्रस्य श्रीनारद ऋषिः। अनुष्टुप् छन्दः। श्रीगोपालो देवता। कामो बीजम्। माया शक्तिः। चन्द्रः कीलकम्। श्रीकृष्णचन्द्रभक्तिजन्यफलप्राप्तये श्रीगोपालसहस्रनामपाठे विनियोगः।

इस मेरे अनुष्ठीयमान श्रीगोपालसहस्रनामस्तोत्रमन्त्रका नारद ऋषि (प्रवर्तक) और अनुष्टुप्संज्ञक छंद (वृत्त) है और श्रीगोपाल इसकी देवता (उपास्य) है काम बीज (क्लीम् ऐसा सारभूत) है माया शक्ति (सामर्थ्य) है चंद्र कीलक है इस प्रकारसे ऋष्यादि स्मरण कर श्रीकृष्णचंद्रकी भक्तिसे उत्पन्न फलकी प्राप्तिके लिये श्रीगोपालसहस्रनामके पाठकरणसमय अर्थात् मंत्रपरंपराकरके उच्चारणसमयमें दक्षिणहस्तसे जलका उत्सर्ग (त्याग) करे यह उत्सर्ग स्मरणार्थ है ॥

---

१ कृपण।

अथ ध्यानम् ।

फुल्लेन्दीवरकान्तिमिन्दुवदनं बर्हावतंसप्रियं
श्रीवत्साङ्कमुदारकौस्तुभधरं पीताम्बरं सुन्दरम् ।
गोपीनां नयनोत्पलार्चिततनुं गोगोपसंघावृतं
गोविन्दं कलवेणुवादनपरं दिव्याङ्गभूषं भजे ॥ १ ॥

अब ध्यान दर्शातेहैं फूलेहुए नीलकमलकी तुल्य विद्यमान है कांति (शोभा) जिनकी और पूर्णमासीके चन्द्रकी नाईं है मुख जिनका और मयूरके पिच्छोंका शिरोभूषण है प्रिय जिनको और श्रीवत्सरूप चिह्न है वक्षःस्थलमें जिनके उदारकौस्तुभमणिको धारण करनेवाले और पीतांबरको धारण करनेवाले और गोपियोंके नयनरूप कमलोंकरके पूजित है तनु (दिव्यमंगलविग्रह) जिनका और गोगोपोंके जो संघ (समूह) तिन्होंकरके आवृत (चारों तरफसे परिवारे हुए) और सुमनोहर वंशीके बजानेमें तत्पर अप्राकृत अंगोंमें विद्यमान है भूषण जिनके भूमि किंवा वेदमें विदित ऐसे श्रीकृष्णजीका वाणी मन काय कर्मोंकरके मैं ध्यान करताहूं " उत्कण्ठापूर्वकं ध्यानं भक्तिरित्यभिधीयते " इस वचनसे भजधातुका ध्यानही अर्थ है ॥ १ ॥

इति उपोद्घातः समाप्तः ।

श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः ।

अथ श्रीगोपालनामसहस्रस्य प्रथमशतकम् ।

ॐ श्रीगोपालो महीपालो वेदवेदाङ्गपारगः ।
कृष्णः कमलपत्राक्षः पुण्डरीकः सनातनः ॥ १ ॥

यद्भक्तिं न विना मुक्तिर्यः सेव्यः सर्वयोगिनाम् ।
तं वन्दे परमानन्दघनं श्रीनन्दनन्दनम् ॥

ॐ [श्रीगोपालः] श्रीशब्दो मङ्गलार्थः गोशब्दो वाग्वाचकः श्रियं मङ्गलरूपां गां वेदवाणीं पालयति तत्प्रतिपाद्यतया तद्विषयो भवतीति श्रीगोपालः—मंगलरूप वेदवाणीसे प्रतिपाद्य अर्थात् जो वेदसे जानेजावे १ राधा, रुक्मिणी, सत्यभामा इन्होंके वाणी-का पालन (अनुसरण) करनेवाले २ [महीपालः] पृथु आदि-रूपसे पृथ्वीका पालन करनेवाले. [वेदवेदाङ्गपारगः] वेद (ऋक् यजुः साम अथर्व) और वेदाङ्ग (शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष, निघण्टु) इन्होंके पारगामी. [कृष्णः] भक्तोंके मनको आकर्षण करनेवाले. " श्रुतमात्रोऽपि यः स्त्रीणां प्रसह्याकर्षते मनः " इति श्रीभागवतवचनात् । १ परमानंदस्वरूप २ [कमलपत्राक्षः] कमलपत्रके समान विस्तृत आह्लाद (आनंद) जनक है अक्षि (नेत्र) जिनके. [पुण्डरीकः] हृत्कमलमें रहनेवाले. " अथ यदिदमस्मिन्ब्रह्मपुरे दहरं पुण्डरीकं वेश्मे-त्यादि " श्रुतेः । [सनातनः] सना (सदा) विद्यमान ॥ १ ॥

गोपतिर्भूपतिः शास्ता प्रहर्ता विश्वतोमुखः ।
आदिकर्ता महाकर्ता महाकालः प्रतापवान् ॥ २ ॥

[गोपतिः] इंद्रिय और धेनु इन्होंके पालक अर्थात् इंद्रियोंके नियंता और गोओंकी गोपवेश धारण करके रक्षा करनेवाले. [भूपतिः] पृथ्वीका भार दूर करनेसेही भूपति नामवाले. [शास्ता] १० मन्वादिरूपसे धर्मकी शिक्षा करनेवाले. अर्थात् सत्पुरुषोंको धर्मका उपदेश तथा असत्पुरुषोंको दंड देनेवाले. [प्रहर्ता] भक्तोंके दिये हुए तुलसीपत्रादिकोंको अत्यंत प्रीतिसे स्वीकार[1] करनेवाले १ भक्तोंके क्लेशनाश करनेवाले २ भक्तोंके सुखकी प्राप्ति करनेवाले ३ [विश्वतोमुखः] सकलदेवोंमें प्रधान अर्थात् उन्होंके उपासनीय १ अनंतसुख २ [आदिकर्ता] चतुर्मुख आदिकोंके कर्ता. [महाकर्ता] ब्रह्मा आदि देवतोंके प्रयोजक कर्ता. [महाकालः] सबका संहार करनेवाले अर्थात् कालकेभी काल. "ज्ञः कालकालः" इति श्रुतेः । [प्रतापवान्] अप्रतिहत है आज्ञा जिनकी अर्थात् जिनकी आज्ञा हटे नहीं " यद्भयाद्वाति वातोऽयम् " इति श्रुतेः ॥ २ ॥

जगज्जीवो जगद्धाता जगद्भर्ता जगद्वसुः ।
मत्स्यो भीमः कुहूभर्ता हर्ता वाराहमूर्तिमान् ॥ ३ ॥

[जगज्जीवः] जगत्के प्राण धारण करनेवाले. [जगद्धाता] जगत्का अन्नरूपसे पोषण करनेवाले. " अहमन्नमिति " श्रुतेः

१ अङ्गीकार ।

[जगद्भर्ता] संपूर्णजगत्के आधार. [जगद्वसुः]२० सब जगत्में अंतर्यामिरूपसे रहनेवाले. [मत्स्यः] वेदोंके उद्धारके लिये मत्स्यरूपसे अवतार लेनेवाले. [भीमः] दुष्टजनोंको भय करनेवाले. [कुहूभर्ता] अमावास्याके दिन पितृरूपसे पोषण करनेवाले. "पितृरूपी जनार्दनः" इति स्मरणात्। [हर्ता] भक्तोंके पापराशिको दूर करनेवाले. " अनेकजन्मार्जितपापसंचयं हरत्यशेषं स्मृतमात्र एवेति" स्मरणात्। [वाराहमूर्तिमान्] हिरण्याक्षहृत पृथ्वीके उद्धारके लिये वराहरूपसे अवतार लेनेवाले ॥ ३ ॥

नारायणो हृषीकेशो गोविन्दो गरुडध्वजः ।
गोकुलेन्द्रो महीचन्द्रः शर्वरीप्रियकारकः ॥ ४ ॥

[नारायणः] नरके अपत्य, अथवा नरसमूह जिनका रहनेका स्थान. [हृषीकेशः] इंद्रियोंके नियंता. [गोविन्दः] वामन वा वाराहरूपसे पृथ्वीको प्राप्त होनेवाले १ इंद्रियोंके नियंता २ जलशायी होनेसे जलोंका प्रकाश करनेवाले ३ प्रकाशकत्व होनेसे सूर्यके प्रकाश करनेवाले ४ गौओंके पालक ५ ज्ञानसे जो जाने जाय ६ [गरुडध्वजः] गरुड है ध्वज नाम वाहन जिनका १ गरुड है पताकामें जिनके २. [गोकुलेन्द्रः] ३० गोसमूहके स्वामी अर्थात् गोसमूहके ऊपर प्रेमवृष्टि करनेवाले. " अहं किलेंद्रो देवानां त्वं गवामिन्द्रतां गतः " इति महेन्द्रोक्तेः । [महीचन्द्रः] चंद्रकी तुल्य पृथ्वीको आह्लाद देनेवाले १

---

१ हिरण्याक्षने हरीहुई ।

चंद्रमाकोभी आनंद देनेवाले २. [शर्वरीप्रियकारकः] सूर्यके तापकरके तप्तपुरुषोंको रात्रिमें चंद्ररूपसे प्रिय करनेवाले १ दिनमें गौओंको चरानेके वास्ते वनमें गये हुए अपने वि- रहसे तप्त हुए पुरुषोंको रात्रिमें चंद्ररूपसे प्रिय करनेवाले ॥ ४ ॥

कमलामुखलोलाक्षः पुण्डरीकः शुभावहः ।
दूर्वाशः कपिलो भौमः सिन्धुसागरसंगमः ॥ ५ ॥

[कमलामुखलोलाक्षः] लक्ष्मीजीका जो मुख तिसमें लोल बारंवार देखनेमें आसक्त है नेत्र जिनके. [पुण्डरीकः] शु- क्लवर्ण अर्थात् श्वेतकमलतुल्य. [शुभावहः] संपूर्णपुरुषोंको शुभ देनेवाले. [दूर्वाशः] ब्रह्माके वत्सोंके हरणसमयमें स्वयं (आप) ही धेनुरूपसे और बछडेके रूपसे दूर्वा (दूब) को चरनेवाले १ दूर है संसाररूपी वृक्षके फलोंका भोग जिनके २ [कपिलः] वानरोंके ताईं नवनीत (माखन आदि वस्तु) को देनेवाले. "मर्कान् भोक्ष्न्विभजती " त्युक्ते । १ उपनिषद्भागका व्याख्यान करके रक्षा करनेवाले २ दैत्योंको कपावनेवाले ३ स्मरण करनेवालोंके पापोंको दूर करनेवाले ४ भक्तोंको सुख देनेवाले ५ कपि नाम मेघ उसका अपने रूपसे स्वीकार करनेवाले अर्थात् मेघश्याम ६ दाशरथिरूपसे वानरोंका स्वीकार करनेवाले ७ कं नाम जलको पीनहार सूर्य तिसको अपना तेज देनेवाले ८ [भौमः] भूमिरूपी सत्यभामाके हित करनेवाले १ सत्यभामाके स्वामी २ अश्वत्थरू-

१ महाचन्द्रः इस पाठान्तरसे यह अर्थ है ।

पसे भूमिमें उत्पन्न होनेवाले ३ [सिन्धुसागरसङ्गमः] गंगा और सागरका संगमस्थल है स्थान जिनका अर्थात् कपिलरूपसे वहां रहनेवाले ॥ ५ ॥

गोविन्दो गोपतिर्गोत्रं कालिन्दीप्रेमपूरकः ।
गोस्वामी गोकुलेन्द्रो गोगोवर्धनवरप्रदः ॥ ६ ॥

[गोविन्दः] ४० संपूर्णयज्ञोंको प्राप्त होनेवाले अर्थात् भोगनेवाले. "अहं हि सर्वयज्ञानां भोक्ता च प्रभुरेव च" इति स्मृतेः । [गोपतिः] किरणोंके पति सूर्यरूप. 'ज्योतिषां रविरंशुमान्" इति स्मरणात् । [गोत्रम्] पृथ्वीका स्वामिभावसे पालन करनेवाले. [कालिन्दीप्रेमपूरकः] जलक्रीडा आदि करके यमुनाके प्रेमकी वृद्धि करनेवाले. [गोस्वामी] इंद्रादिरूपसे दिशाओंके स्वामी १ गो नाम बुद्धियोंके स्वामी २ [गोकुलेन्द्रः] गोकुल (ब्रज) में इंद्रके समान परमसमृद्धिवाले. [गोगोवर्धनवरप्रदः] गोवर्धनरूपसे भूमिमें वर (ईप्सित) देनेवाले १ गौओंकी वृद्धि करतेहुए गोपोंको गाओंकी वृद्धिरूप वर देनेवाले ॥ ६ ॥

नन्दादिगोकुलत्राता दाता दारिद्र्यभञ्जनः ।
सर्वमङ्गलदाता च सर्वकामप्रदायकः ॥ ७ ॥

[नन्दादिगोकुलत्राता] गोवर्धनके उद्धरण (उठाना) आदिकर्मसे नंद आदि ब्रजवासियोंकी रक्षा करनेवाले. [दाता] स्मरण करनेवालोंको अपने आत्माको देनेवाले. "स्मरतः पादकमलमात्मानमपि यच्छति" इति वचनात् । [दारिद्र्यभञ्जनः]

दारिद्र्यके नाशक. [सर्वमङ्गलदाता] ७० पुत्रजन्म आदि सब मंगलोंको देनेवाले. [सर्वकामप्रदायकः] भक्तोंको अभिलषित (चाही) वस्तु देनेवाले ॥ ७ ॥

आदिकर्ता महीभर्ता सर्वसागरसिन्धुजः ।
गजगामी गजोद्धारी कामी कामकलानिधिः ॥ ८ ॥

[आदिकर्ता] मुख्यकर्ता (संहारादिकारक) " अत्ता चराचरग्रहणात् " इति सूत्रात् । [महीभर्ता] श्रीराम आदि रूपसे पृथ्वीका धारण पोषण करनेवाले. [सर्वसागरसिन्धुजः] जिससे संपूर्ण सागर (समुद्र) तथा सिंधु (नदी) ये उत्पन्न हुए हैं. [गजगामी] गजतुल्यगमनवाले १ गजके ऊपर बैठकर जहां तहां गमन करनेवाले २ [गजोद्धारी] ग्राहके मुखसे गजका उद्धार करनेवाले. कामी जनोंको अपने २ कर्मोंमें प्रवृत्त करनेवाले. [कामकलानिधिः] कामशास्त्रोक्त सिंह विक्रमादिक सोलह (१६) बंध, शृंगार (१६) आश्लेषादि आठ (८) मैथुन आभ्यंतर और बाह्य ये दो (२) प्रकारके भेद, श्रवणादिक चतुर्विध (४) दर्शन और विभवादिक पांच (५) भाव, और हेलादिक तेरह (१३) भाव ऐसे कामकलाओंके आधार ॥ ८ ॥

कलङ्करहितश्चन्द्रो बिम्बास्यो बिम्बसत्तमः ।
मालाकारकृपाकारः कोकिलस्वरभूषणः ॥ ९ ॥

[कलङ्करहितः] दूर करदिया है सत्राजित्का स्यमंतकमणि प्रयुक्त कलंक जिसने. [चन्द्रः] ८० संपूर्णोंको आनंद करने-

वाले. [बिम्बास्यः] बिंबकी तुल्य मनोहर है सर्वकालमें मुख जिनका. [बिम्बसत्तमः] बिंब नाम प्रतिबिंब अर्थात् अवतारक देव तिनमें अत्यंतश्रेष्ठ श्रीकृष्णमूर्ति. [मालाकारकृपाकारः] मालाके करनेवालेके ऊपर कृपा करनेवाले. [कोकिलस्वरभूषणः] जिसकरके कोकिलोंका स्वर भूषित है १ जिसका कोकिलोंका स्वरही कर्णभूषण है ॥ ९ ॥

रामो नीलाम्बरो देवो हली दुर्दान्तमर्दनः ।
सहस्राक्षपुरीभेत्ता महामारीविनाशनः ॥ १० ॥

[रामः] जिसमें सनकादिक योगिजन रमण करें. [नीलाम्बरः] बलभद्ररूपसे नीलवस्त्र स्वीकार करनेवाले. [देवः] अपनी इच्छाकरके सब जगह क्रीडा करनेवाले. [हली] सांवर्तकहलको धारण करनेवाले. [दुर्दान्तमर्दनः] नाग्निजितीके स्वयंवरमें कठोर दंतोंवाले वृषभों (बैलों) का मर्दन करनेवाले. (उनकी नासिकाओंमें नाथ डालनेवाले) [सहस्राक्षपुरीभेत्ता] ७० सत्यभामाके मनोरथ पूर्ण करनेके लिये पारिजात (कल्पवृक्ष) के हरणसमयमें इंद्रपुरीका भेदन करनेवाले. [महामारीविनाशनः] अपने नामस्मरणमात्रसे विषूचिका और अकालमृत्यु आदि रोगोंका नाश करनेवाले ॥ १० ॥

शिवः शिवतमो भेत्ता बलारातिप्रयोजकः ।
कुमारीवरदायी च वरेण्यो मीनकेतनः ॥ ११ ॥

[शिवः] कल्याणगुणविशिष्ट अर्थात् अप्राकृतगुणोंसे युक्त.

[शिवतमः] मंगलोंकेभी मंगलस्वरूप. [भेत्ता] अपनी भक्ति-करनेवाले पुरुषोंकी संपूर्ण आपत्ति दूर करनेवाले. [बलारातिप्रयोजकः] वृष्टि आदि कर्मोंके वास्ते इंद्रके प्रयोजक (आज्ञा देनेवाले). [कुमारीवरदायी] कन्याओंको वर देनेवाले. [वरेण्यः] स्वरूप, गुण, दिव्यमंगलविग्रह और सौंदर्य, सौकुमार्य, माधुर्य, लावण्य आदि विग्रहगुण इन्होंकरके ब्रह्मादिस्तंभपर्यंत वरणीय (आश्रयणीय) अर्थात् आश्रय करनेको योग्य. [मीनकेतनः] प्रद्युम्न है व्यूहअवतार जिनका ॥३१॥

नरो नारायणो धीरो धीरापतिरुदारधीः ।
श्रीपतिः श्रीनिधिः श्रीमान्मापतिः पतिराजहा १२

[नरः] भक्तोंके मनोरथको सिद्ध करनेवाले १ विप्र आदिकोंका पूजन करके नम्र होनेवाले २ निर्विकार ३. [नारायणः] ८० नरोंसे उत्पन्न होनेवाले तत्त्वोंके स्थान १ उक्ततत्त्व है स्थान जिसका २. [धीरः] बुद्धिको देनेवाले १ बुद्धिके प्रेरक २. [धीरापतिः] धीर (स्वधर्मनिष्ठभयरहित) पुरुषोंकी चारों ओरसे रक्षा करनेवाले. [उदारधीः] उदार (दानशूर) पुरुषोंके अर्थ देनेकी है बुद्धि जिनकी. [श्रीपतिः] लक्ष्मीजीके पति. [श्रीनिधिः] शोभाके समुद्र. [श्रीमान्] नित्य श्रीवाले. [मापतिः] मानके पति (पालक) अर्थात् सत्पुरुषोंके मानस्वरूप. [पतिराजहा] संपूर्णपालकोंके शिरोमणि अर्थात्

१ राजपतिपदं हन्ति गच्छतीति ।

जिनकी अपेक्षासे इतर कोई उत्कृष्ट पालक नहीं ॥ १२ ॥

वृन्दापतिः कुलं ग्रामी धाम ब्रह्म सनातनः ।
रेवतीरमणो रामः प्रियश्चञ्चललोचनः ॥ १३ ॥

[वृन्दापतिः] वृंदा (राजकन्या, तुलसी, श्रीराधा) इन्होंके पति नाम स्वामी. [कुलम्] ९० बलिराजाके पाससे पृथ्वीको ग्रहण करनेवाले. [ग्रामी] स्वरब्रह्मस्वरूप. "सप्तस्वरास्त्रयो ग्रामा मूर्च्छनास्त्वेकविंशति" रिति रत्नाकरवचनात्। [धाम] तेजस्वरूपवाले १ जगत्के संहारसमय नश्वर जो चराचर तिसके बीजको आधारभूत नौका उसके कर्णधार (नावडिया) स्वरूप अर्थात् जगत्के रक्षक २. [ब्रह्म] स्वरूप गुण शक्ति आदिकोंसे बृहत्तम अर्थात् परब्रह्मस्वरूप. [सनातनः] सदा नूतन किशोरस्वरूप. [रेवतीरमणः] बलभद्ररूपसे रेवतीके भर्ता. [रामः] गोपकन्याओंमें क्रीडा करनेवाले. [प्रियः] संपूर्णोंके प्रीतिके आश्रय. [चञ्चललोचनः] अतिचंचलनेत्र हैं जिनके ॥ १३ ॥

रामायणशरीरोयं रामी—

[रामायणशरीरः] रामचरितका प्रतिपादक है शरीर जिनका १ सौंदर्य, सौकुमार्य, लावण्य, माधुर्य आदि गुणोंवाली स्त्रियोंके गमनयोग्य शरीर है जिनका २. [रामी] १०० नित्यलील अर्थात् नित्यलीला करनेवाले.

इति श्रीगोपालसहस्रनामस्तोत्रस्य प्रथमं शतकं समाप्तम् ॥ १ ॥

अथ श्रीगोपालनामसहस्रस्य द्वितीयशतकम् ।

राम: श्रियःपतिः ।
शर्वरः शर्वरी सर्वः सर्वत्रशुभदायकः ॥ १४ ॥

[रामः] जगत्के पालक. [श्रियःपतिः] शोभाके पालक. [शर्वरः] आश्रित पुरुषोंके अशुभों (अमंगलों) को दूर करनेवाले. [शर्वरी] निशारूप (संपूर्णप्राणिमात्रको स्वप्नसुख देनेंवाले). [सर्वः] संपूर्णोंको जाननेवाले १ संपूर्णोंमें व्याप्त २ " असतश्च सतश्चैव सर्वस्य प्रभवाप्ययात् । सर्वदा सर्वज्ञानाच सर्वमेनं प्रचक्षते " इति व्यासोक्तेः । संपूर्णोंका नाश करनेवाले. यहभी अर्थ यहां जानना क्यौं कि सर्वधातु हिंसार्थक होनेसे. [सर्वत्रशुभदायकः] संपूर्णकालोंमें पुरुषोंको शुभ देनेवाले. " स्मृतमात्रोऽपि यः पुंसां तनोति शुभसंततिम् । अशुभानि निराचष्टे ब्रह्म तन्मण्डलं विदुः " इति वैष्णवोक्तेः ॥ १४ ॥

राधाराधयिता राधी राधाचित्तप्रमोदकः ।
राधारतिसुखोपेतो राधामोहनतत्परः ॥ १५ ॥

[राधाराधयिता] राधाका अनुनयरूप आराधन करनेवाले. [राधी] राधाका नित्य संबधवाले. " राधया माधवो देवो माधवेन च राधिका । विभ्राजते० " इति श्रुतेः । १ ब्राह्मणोंका आराधन (सन्मान) करनेवाले २. [राधाचित्तप्रमोदकः] राधाके चित्तको प्रसन्न करनेवाले. [राधार-

१ आराधी ऐसा पदच्छेद करनेसे यह अर्थ है ।

तिसुखोपेतः] ११० राधाके रतिसुखकरके युक्त अर्थात् अत्यंत आनंद माननेवाले. [राधामोहनतत्परः] श्रीराधाको मोहन करनेमें दत्तचित्त नाम दिया है चित्त जिन्होंने ॥ १५ ॥

राधावशीकरो राधाहृदयाम्भोजषट्पदः ।
राधालिङ्गनसंमोहो राधानर्तनकौतुकः ॥ १६ ॥

[राधावशीकरः] अपने प्रभावकरके तथा अपने दृष्टिपात करनेसे राधाको वश करनेवाले. [राधाहृदयाम्भोजषट्पदः] राधाके हृदयकमलके विषैं भ्रमरकी तुल्य रस ग्रहण करनेवाले. [राधालिङ्गनसंमोदः] रतिसमय राधाके आलिंगन (स्पर्श) करनेसे उत्पन्न है आनंद जिनको. [राधानर्तनकौतुकः] राधाके संग नर्तन (नाचने) में विद्यमान है क्रीडा जिनकी १ राधाके मुखचुंबनमें है कौतुक जिनको ॥ १६ ॥

राधासंगतिसंप्रीतो राधाकामफलप्रदः ।
वृन्दापतिः कोकनिधिः कोकशोकविनाशनः ॥१७॥

[राधासंगतिप्रीतः] राधाकी संगति (समागम) में सुंदर है प्रीति जिनकी १ राधाके भावसे सुप्रसन्न २. [राधाकामफलप्रदः] राधाके वांछितफलको देनेवाले. [वृन्दापतिः] वृन्दा (जलंधर) के कांताके पालक (अत्याग्रही) अर्थात् उसके ऊपर आग्रह करनेवाले १ गोपसमूहोंका चारों तरफसे पालन करनेवाले २. [कोकनिधिः] कामशास्त्रके निधि १

---

१ राधाचुम्बनकौतुकः ऐसे पाठसे यह अर्थ है ।
२ राधासंभावसंप्रीतः ऐसे पाठसे यह अर्थ है ।

अन्नमयकोश आदिकोंके आधारभूत २. [कोकशोकवि-नाशनः] १२० चक्रवाकोंको कांताका विरहरूप जो शोक तिसका सूर्यरूपसे उदय होकर नाश करनेवाले ॥ १७ ॥

चन्द्रापतिश्चन्द्रपतिश्चण्डकोदण्डभञ्जनः ।
रामो दाशरथी रामो भृगुवंशसमुद्भवः ॥ १८ ॥

[चन्द्रापतिः] चंद्रावलीसखीके पति. [चन्द्रपतिः) चंद्र-वंशमें उत्पन्न होनेवाले यदुके पति. [चण्डकोदण्डभञ्जनः] रुद्र-धनुषका छेदन करनेवाले. [रामः] योगियोंके चित्तोंमें रमण कर-नेवाले. [दाशरथिः] दशरथके पुत्र. [रामः] र (रवि) अ (अग्नि) म (चंद्र) ये हैं विभूति जिनकी. [भृगुवंशसमुद्भवः] परशुरामरूपसे भृगुवंशमें अपनी इच्छासे उत्पन्न होनेवाले ॥ १८ ॥

आत्मारामो जितक्रोधो मोहो मोहान्धभञ्जनः ।
वृषभानुभवो भावी काश्यपिः करुणानिधिः ॥ १९ ॥

[आत्मारामः] अपने आपमेंही रमण करनेवाले १ राधा-के संग रमनेवाले २ " आत्मा तु राधिका तस्य तयैव रम-णादसौ । आत्माराम इति प्रोक्तो मुनिभिर्गूढवेदिभिः ॥ " इति स्कन्दोक्तेः । [जितक्रोधः] क्रोधको जीतनेवाले. [मोहः] १३० प्राणिमात्रको मोहन करनेवाले अर्थात् मोहस्वरूप. " यो मोहयति भूतानि मोहरूपेण केशवः । सर्गस्य वर्धनार्थाय तस्मै मोहात्मने नमः ॥ " इति स्मृतेः । [मोहान्धभञ्जनः] स्त्री पुत्र

१ कोशनिधिः इस पाठका यह अर्थ है ।

आदिमें जो मोह सोही हुआ अंध (ज्ञानशक्तिका आच्छादक अंधकार) तिसके नाश करनेवाले. [वृषभानुभवः] वृषभानुसे है जन्म जिनका अर्थात् राधास्वरूप. "राधा कृष्णात्मिका नित्यं कृष्णो राधात्मको ध्रुवमि" त्युक्तेः। १ वृषभ (बैल) रूपसे आनेवाला जो असुर उसको देखकर अहो! यह बैल नहीं है किंतु असुर है ऐसा निश्चय करनेवाले २. [भावी] दिष्टरूप अर्थात् प्राणियोंको तत्तत्कर्मका फल देनेवाले. [काश्यपिः] कश्यप प्रजापतिके पुत्र, " आदित्यानामहं विष्णुः " इति स्मृतेः। [करुणानिधिः] करुणासमुद्र ॥ १९ ॥

कोलाहलो हली हालो हली हलधरप्रियः।
राधामुखाब्जमार्तण्डो भास्करो रविजो विधुः॥२०॥

[कोलाहलः] एकीभावको आकर्षण करनेवाले अर्थात् मेघरूप. [हली] हलरूप आयुधको धारण करनेवाले. [हालः] हलसे उत्पादित यवादिस्वरूप. "ओषधीनामहं यवः" इति श्रुतेः। [हली] जीवनका साधन जो सस्य तिसके उत्पादक १ कार्ष्णायस लोहकी फालरूपसे पृथ्वीको विलेखन (भेदन) करनेवाले. "अहं कार्ष्णायसो भूत्वा कर्षामि पृथिवीमिमाम्" इति स्मृतेः। [हलधरप्रियः] १४० हलको धारण करनेवाले बलदेवजीके अत्यंतप्रीतिके विषय १ हलधर है प्रिय जिनको २ कर्षक है प्रिय जिनको ३. [राधामुखाब्जमार्तण्डः] श्रीराधाके मुखकमलके प्रकाश करनेमें सूर्यरूप. [भास्करः]

लोकके प्रकाश करनेमें हेतु (कारण). [रविजः] रामस्वरूपसे सूर्यवंशमें उत्पन्न होनेवाले. [विधुः] चंद्ररूप. "नक्षत्राणामहं शशी" इति स्मृतेः ॥ २० ॥

विधिर्विधाता वरुणो वारुणो वरुणीप्रियः ।
रोहिणीहृदयानन्दी वसुदेवात्मजो बली ॥ २१ ॥

[विधिः] जगत्‌के विधान (रचन) करनेवाले. [विधाता] विचित्र (नाना प्रकारके) कर्मवाले जीवोंको फल देनेवाले १ विश्वको कार्यमें नियुक्त करनेवाले २ [वरुणः] वरुणस्वरूप. "वरुणो यादसामहम्" इति स्मृतेः । १ व (यमादिकोंसे ताडन करावनेवाले) रु (संहारसमयमें आर्तशब्द करावनेवाले) न (भक्तोंको मोक्ष देनेवाले) तीनों अक्षर मिलकर उक्तअर्थ सिद्ध हुआ २. [वारुणः] वरुणसे उत्पन्न होनेवाला जो जल तत्स्वरूपवाले. "आपः पुरुषवीर्याः स्थ" इति स्मृतेः । [वरुणीप्रियः] वरुणकन्याके प्रिय १ वरुणके प्रिय २. [रोहिणीहृदयानन्दी] १५० रोहिणीके हृदयको सुख देनेवाले. [वसुदेवात्मजः] वसुदेवकी आत्मासे (देहसे) उत्पन्न होवेवाले. [बली] विश्वको धारण करनेकी शक्तिवाले ॥ २१ ॥

नीलाम्बरो रौहिणेयो जरासन्धवधोऽमलः ।
नागो जवाम्भो विरुदो विरुहो वरदो बली ॥ २२ ॥

[नीलाम्बरः] निरंतर पृथिवीरूप वस्त्रको धारण करनेवाले (विराट्स्वरूप). [रौहिणेयः] रोहिणीके पुत्र. [जरा-

संधवधः] भीमसेनके द्वारा जरासंधको मारनेवाले. [अमलः] निर्मलस्वरूप. [नागः] बहिर्मुखपुरुषोंके विषैं गमन नहीं करनेवाले अर्थात् तिनके हृदयमें स्थिति नहीं करनेवाले. [जवाम्भः] अंतर्मुखपुरुषोंके हृदय विषैं शीघ्र प्रकाश करनेवाले. "गुरुवेणवकृष्णैकजीवनोन्तर्मुखः स्मृतः" इत्युक्तेः । १ अंज (ब्रह्मा) है नाभिमें जिनके २. [विरुदः] अपने बहिर्मुख (विपरीत) पुरुषोंको रुवावनेवाले. [विरुहः] १६० धर्मके नाशका जब अवसर आता है तिस कालमें अवतार लेनेवाले. "यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत" इति स्मृतेः । [वरदः] ईप्सित वस्तु देनेवाले. [बली] बला (लक्ष्मी) वाले ॥ २२ ॥

गोपथो विजयी विद्वाञ्शिपिविष्टः सनातनः ।
पर्शुरामवचोग्राही वरग्राही शृगालहा ॥ २३ ॥

[गोपथः] ज्ञान है प्राप्तिका मार्ग जिनका. [विजयी] ज्ञान, बल, ऐश्वर्य आदि गुणोंकरके संपूर्णोंसे उत्कृष्टतासे रहनेवाले १ सर्वत्र है विजय जिनका २. [विद्वान्] सर्वज्ञ (सर्ववस्तुओंको जाननेवाले). [शिपिविष्टः] शिपि (पशु) तिनमें यज्ञ रूपसे रहनेवाले अर्थात् यज्ञस्वरूप. "यज्ञो वै विष्णुः" इति स्मृतेः । १ शिपि (रश्मि) तिन्होंके विषैं प्रकाशप्रदस्वरूपसे प्रविष्ट २. [सनातनः] ऋषियोंके स्वरूपसे रहनेवाले ऋषिस्वरूप. [पर्शुरामवचोग्राही] पर्शुरामजीके वचनोंको ग्रहण करनेमें है शील

---

१ अजनाभः इस पाठान्तरसे यह अर्थ है ।

(स्वभाव) जिनका. [वरग्राही] मधुकैटभ ये दो दैत्योंसे
ग्रहण करनेको शील (स्वभाव) वाले. " भवेतामद्य मे तुष्टौ म
वध्यावुभावपि " इति स्मृतेः । [शृगालहा] १७० मिथ्
वासुदेवरूप शृगालको मारनेवाले ॥ २३ ॥

दमघोषोपदेष्टा च रथग्राही सुदर्शनः ।
वीरपत्नीयशस्त्राता जराव्याधिविघातकः ॥ २४

[दमघोषोपदेष्टा] दम (इंद्रियका रोकने) का जो श्रुतिप्रसि
घोष तिसके उपदेष्टा अर्थात् राक्षस, भूत, देव इन्होंके ताईं दया
दान दमका उपदेश करनेवाले. [रथग्राही] अर्जुनके सारथ
[सुदर्शनः] शोभन है दर्शन जिनका. [वीरपत्नीयशस्त्राता
द्रौपदीके यशके रक्षक १ विप्रोंकी पत्नियोंके यशकी रक्षा करने
वाले २. [जराव्याधिविघातकः] जरा नाम मृगव्याधसे व्याधिस्वरू
संसारका घात करानेवाले १ जराप्रयुक्तव्याधिका नाश कर
नेवाले २ ॥ २४ ॥

द्वारकावासतत्त्वज्ञो हुताशनवरप्रदः ।
यमुनावेगसंहारी नीलाम्बरधरः प्रभुः ॥ २५ ॥

[द्वारकावासतत्त्वज्ञः] द्वारकाके आवासका जो तत्
(जलस्तंभादि) तिसको जाननेवाले १ द्वारकाही है आवा
(स्थान) जिनका तिन पुरुषोंके मध्यमें तत्त्वज्ञ (तिन्हों
शिक्षक) २ [हुताशनवरप्रदः] अग्निके अर्थ वर (दाह
शक्ति) को देनेवाले. " विष्णुश्च दाहिकीं शक्तिं ददौ तस

१ विप्रपत्नीयशस्त्राता इस पाठान्तरका यह अर्थ है । २ पारधी

शिवाज्ञया " इति ब्रह्मवैवर्तात् । [यमुनावेगसंहारी] बलभद्रस्वरूपसे यमुनाके वेग (प्रवाह) को रोकनेवाले. [नीलाम्बरधरः] निरंतर गौओंके आच्छादनयोग्य कंबलकूं धारण करनेवाले अर्थात् सर्वविद्वन्मुकुटमणि. [प्रभुः] १८० मदीयोयमिति (यह हमारा है) ऐसे प्रकारसे स्वीकार करनेवाले १ उत्कृष्टतासे प्रजाकी रक्षा करनेवाले ॥ २५ ॥

विभुः शरासनो धन्वी गणेशो गणनायकः ।
लक्ष्मणो लक्षणो लक्ष्यो रक्षोवंशविनाशनः ॥ २६ ॥

[विभुः] बहुत प्रकारसे होनेवाले. "एकोऽहं बहु स्याम्" इति श्रुतेः । १ भक्तोंको अभीष्ट देनेवाले २. [शरासनः] नाना प्रकरकी पीडा करनेवाले शरोंपर स्थिति करनेवाले १ शरं रहते हैं जिसमें सो कहिये शरासन अर्थात् तूणीर, उसको धारण करनेवाले २. [धन्वी] धनुषधारी. [गणेशः] गौ और गोपियोंके जो गण (समूह) तिसके स्वामी. [गणनायकः] गौ और गोपियोंके प्रापक. [लक्ष्मणः] संपूर्णोंको जाननेवाले. [लक्षणः] हस्तचरणोंमें शुभ चिह्नवाले. [लक्ष्यः] अवधिरूप. "प्रणवो धनुः शरो ह्यात्मा ब्रह्म तल्लक्ष्यमुच्यते । अप्रमत्तेन वेद्धव्यं शरवत्तन्मयो भवेत् " इति श्रुतेः । [रक्षोवंशविनाशनः] राक्षसोंके वंशका नाश करनेवाले ॥ २६ ॥

वामनो वामनीभूतोऽवामनो वामनारुहः ।
यशोदानन्दनः कर्त्ता यमलार्जुनमुक्तिदः ॥ २७ ॥

---

१ शरासनी इस पाठान्तरका यह अर्थ है ।

[वामनः] १९० बलिका निग्रह करनेवाले १ देवतों उपासनीय २ " मध्ये वामनमासीनं विश्वेदेवा उपासत " इ श्रुतेः। [वामनीभूतः] अद्भुतरूप. [अवामनः] बडे विग्रहवा " तोये तु पतिते हस्ते वामनोभूदवामनः। सर्वदेवमयं रूपं द यामास वै विभुः " इति हरिवंशोक्तेः। [वामनारुहः] सब जनं अद्भुतरूपसे प्रादुर्भूत होनेवाले. [यशोदानन्दनः] पुत्रभावक यशोदाके हर्षकी वृद्धि करनेवाले. [कर्ता] जगत्के अभिाव निमित्तोपादानकारण. [यमलार्जुनमुक्तिदः] एकसंग उत्पन्न होनेवाले अर्जुननामक वृक्षोंको मुक्ति देनेवाले ॥ २७ ॥

उलूखली महामानी दामबद्धाह्वयी शमी।

[उलूखली] बंधनके आधारभावसे उलूखलका स्वीका नेवाले. [महामानी] संपूर्ण मनुष्योंसे अत्यंत उत्कृष्ट है मान नका. [दामबद्धाह्वयी] दाम (रज्जु) करके बद्ध नाम बंधेहुए इस प्रकार व्यासादिकोंके वाणीके गोचर. [शमी] २०० भक्तों सब आपदा शांत करनेवाले १ शांतिकरके उपलक्षित कारुण्य वात्सल्य, दया, तितिक्षा, सौशील्य आदि कल्याणगुणोंके स

इति श्रीगोपालनामसहस्रस्य द्वितीयं शतकं समाप्तम् ॥ २ ॥

---

१ जैसे ऊर्णनाभि (मकडी) अपने गृह करनेमें उपादान और निमित्त कारण है तैसेही ब्रह्म सृष्टिका उपादान और निमित्त कारण है।

अथ श्रीगोपालनामसहस्रस्य तृतीयशतकम् ।

भक्तानुकारी भगवान् केशवो बलधारकः ॥ २८ ॥

[भक्तानुकारी] भक्तोंके ऊपर अनुग्रह करनेका है शील जिनका. [भगवान्] नित्य षडैश्वर्ययुक्त. [केशवः] ब्रह्मा और शंकर इनके प्रेरक. "क इति ब्रह्मणो नाम ईशोऽहं सर्वदेहिनाम्। आवां तवाङ्गसंभूतौ तस्मात्केशवनामवान्" इति स्मृतेः । १ प्रशस्त (श्रेष्ठ) केश (बाल) वाले २ [बलधारकः] बल पौरुष) भीम आदि पुरुषोंको धारण करानेवाले ॥ २८ ॥

केशिहा मधुहा मोही वृषासुरविघातकः ।
अघासुरविघाती च पूतनामोक्षदायकः ॥ २९ ॥

[केशिहा] केशिनामक दैत्यको मारनेवाले. [मधुहा] मधुनामक दैत्यको मारनेवाले. [मोही] जिनके विषैं भक्तोंका मोह (स्नेह) विद्यमान है १ जिनका भक्तोंके विषैं स्नेह २. [वृषासुरविघातकः] वृषासुरको मारनेवाले. [अघासुर-विघाती] अघासुरको मारनेवाले. [पूतनामोक्षदायकः] २१० पूतनाको मोक्ष देनेवाले ॥ २९ ॥

कुब्जाविनोदी भगवान् कंसमृत्युर्महामखी ।
अश्वमेधो वाजपेयो गोमेधो नरमेधवान् ॥ ३० ॥

[कुब्जाविनोदी] कुब्जाके साथ विहार करनेवाले. [भग-

वान्] प्रशंसित ऐश्वर्यवाले. [कंसमृत्युः] कंसको मारनेवाले. [महामखी] बलिकर्म-स्वधा-स्वाहा-स्वाध्याय-अतिथिपूजनआदिरूप महायज्ञवाले. [अश्वमेधः] प्राजापत्यस्वरूप. " यज्ञो वै विष्णुः " इति श्रुतेः। [वाजपेयः] बार्हस्पत्यस्वरूप. [गोमेध] गोमेधस्वरूप. [नरमेधवान्] नरयज्ञवाले ॥ ३० ॥

कन्दर्पकोटिलावण्यश्चन्द्रकोटिसुशीतलः ।
रविकोटिप्रतीकाशो वायुकोटिमहाबलः ॥ ३१ ॥

[कन्दर्पकोटिलावण्यः] करोडोंही कामदेवके तुल्य सौंदर्यरूपवाले. [चन्द्रकोटिसुशीतलः] २२० करोडों चंद्रके तुल्य शीतल गुणवाले. [रविकोटिप्रतीकाशः] करोडों सूर्यके तुल्य प्रकाशवाले. [वायुकोटिमहाबलः] करोडोंही पवनके तुल्य बडे बलवाले ॥ ३१ ॥

ब्रह्मा ब्रह्माण्डकर्ता च कमलावाञ्छितप्रदः ।
कमली कमलाक्षश्च कमलामुखलोलुपः ॥ ३२ ॥

[ब्रह्मा] प्रजाकी वृद्धि करने और करानेवाले. [ब्रह्माण्डकर्ता] सकल ब्रह्मांडोंके करनेवाले. [कमलावाञ्छितप्रदः] लक्ष्मीको वांछित देनेवाले. [कमली] नाभिमें है कमल जिनके १ कमला (लक्ष्मी) जीके नित्ययोगवाले. [कमलाक्षः] कमलकी समान सुशीतल है तापके हरनेवाले नेत्र जिनके. [कमलामुखलोलुपः] लक्ष्मीजीके मुखपर वारंवार दृष्टि देनेवाले अर्थात् आसक्त ॥ ३२ ॥

१ संबंध.

कमलाव्रतधारी च कमलाक्षः पुरंदरः।
सौभाग्याधिकचित्तोऽयं महामायी महोत्कटः ३३॥

[कमलाव्रतधारी] लक्ष्मीके व्रतको धारण करनेवाले. [कमलाक्षः] २३० कमलसमान नेत्रवाले १ आश्रितोंके रक्षाके लिये प्रतिक्षण लक्ष्मीजीके विषैही है नेत्र जिनके. [पुरन्दरः] व्रतोंके शत्रुओंके पुरको विदारण करानेवाले. [सौभाग्याधिकचित्तः] प्रशस्त (श्रेष्ठ) चित्तवाले. [महामायी] अचिंत्य संकल्पोंको धारण करनेवाले. "मायां तु प्रकृतिं विद्यान्मायिनं तु महेश्वरम्" इस श्रुतिसे मायाशब्द संकल्पका बोधक है क्यौं कि "मायावयुनम्" इस प्रमाणसे. [महोत्कटः] संपूर्णोंको उल्लंघन करनेवाले ॥ ३३ ॥

ताडकारिः सुरत्राता मारीचक्षोभकारकः।
विश्वामित्रप्रियो दान्तो रामो राजीवलोचनः॥३४॥

[ताडकारिः] ताडका नाम राक्षसीके शत्रु. [सुरत्राता] देवतोंके रक्षक. [मारीचक्षोभकारकः] मारीच नाम राक्षसके ऊपर क्षोभ करनेवाले. [विश्वामित्रप्रियः] विश्वामित्रऋषिके प्रिय अर्थात् सुख देनेवाले. [दान्तः] जितेन्द्रिय. [रामः] २४० र (विश्वको कुक्षिमें धारण करनेवाले) अम (मुक्तपुरुषोंको प्राप्य) दोनों शब्द मिलकर जगज्जन्मादिकर्ता और मुक्तप्राप्य ऐसा अर्थ भया. [राजीवलोचनः] कमलसमान नेत्रवाले. "सत्पुण्डरीकनयनं मेघाभम्" इति श्रुतेः॥ ३४ ॥

लङ्काधिपकुलध्वंसी विभीषणवरप्रदः ।
सीतानन्दकरो रामो वीरो वारिधिबन्धनः ॥ ३५ ॥

[लङ्काधिपकुलध्वंसी] रावणके कुलका नाश करनेवाले. [विभीषणवरप्रदः] विभीषणको वर (लंकाका राज्याभिषेक) देनेवाले. [सीतानन्दकरः] जानकीको आनंद करनेवाले. [रामः] रमणीय १ रमा (लक्ष्मी) के रमणीय अप्राकृत गुणवाले २. [वीरः] विमुखपुरुषोंको कपावनेवाले अर्थात् अतिबलयुक्त १ वि (पक्षी) ईर (गमनका साधन) है जिनके अर्थात् गरुडवाहन. [वारिधिबन्धनः] समुद्रके ऊपर सेतु (पुल) को बांधनेवाले ॥ ३५ ॥

खरदूषणसंहारी संकेतपुरवासवान् ।
चन्द्रावलीपतिः कूलः केशिकंसवधोऽमलः ॥ ३६ ॥

[खरदूषणसंहारी] खर तथा दूषण इन्होंका संहार करनेवाले. [संकेतपुरवान्] संकेत (गोलोकश्वेतद्वीपवैकुंठ आदि) पुरमें निवास करनेवाले. [चन्द्रावलीपतिः] २५° श्रीराधाकी अत्यंत प्रियसखी. जो चन्द्रावली तिसके रक्षक. [कूलः] यमुनाका तटही है क्रीडाका स्थान जिनका १ कूल (योगमायारूप) है आवरण जिनके. " नाहं प्रकाशः सर्वस्य योगमायासमावृतः " इत्युक्तेः। २ [केशिकंसवधः] केशी तथा कंसका जिनसे वध (मृत्यु) है. [अमलः] शुद्ध (वैषम्यनैर्घृण्य आदि दोषरहित) १ मृत्युरहित २. ॥ ३६ ॥

१ अमर इस पाठांतरसे यह अर्थ है ।

माधवो मधुहा माध्वी माध्वीको माधवीविभुः ।
मुञ्जाटवीगाहमानो धेनुकारिर्धरात्मजः ॥ ३७ ॥

[माधवः] मा (लक्ष्मी) धव (स्वामी) १ मधुवंशमें होनेवाले २. [मधुहा] मधु (श्रीराधाका मुखरूपी कमलका मकरंद नाम रस) को प्राप्त होनेवाले अर्थात् श्रीराधाजीके अधरोष्ठरसका स्वीकार करनेवाले. [माध्वी] मधुरतावाले. [माध्वीकः] मुरलीकरके मधुरगान करनेवाले. [माधवीविभुः] वसंतलताके विभु नाम व्यापक. [मुञ्जाटवीगाहमानः] मुंजाटवीनामक रमणीयवनविशेषका अवगाहन करनेवाले अर्थात् तिसमें संचार करनेवाले. [धेनुकारिः] २६० धेनुकनामक असुरके शत्रु. [धरात्मजः] धरा (यशोदा) के पुत्र श्रीराधाकृष्ण ॥ ३७ ॥

वंशीवटविहारी च गोवर्धनवनाश्रयः ।
तथा तालवनोद्देशी भाण्डीरवनशङ्खहा ॥ ३८ ॥

[वंशीवटविहारी] वंशीवटमें विहार करनेवाले. [गोवर्धनवनाश्रयः] गौओंके तृण चरनेके लिये गोवर्धनवनका आश्रय करनेवाले. [तालवनोद्देशी] अपने आश्रित गोपबालकोंको तालफल खवानेके लिये तालवनको जानेमें संकेतवाले. [भाण्डीरवनशङ्खहा] जिस कालीयसे भांडीरवनमें जानेको व्रजवासी शंका करते रहे तिस कालीयको तिस स्थानसे निकालनेवाले ॥ ३८ ॥

तृणावर्तकृपाकारी वृषभानुसुतापतिः ।
राधाप्राणसमो राधावदनाब्जमधुव्रतः ॥ ३९ ॥

[तृणावर्तकृपाकारी] तृणावर्तके ऊपर कृपा करनेवाले. [वृषभानुसुतापतिः] वृषभानु नाम गोपकी सुता (राधा) के पति. [राधाप्राणसमः] राधा है प्राणतुल्य जिनको १ राधाको प्राणसमान प्रिय २. [राधावदनाब्जमधुव्रतः] राधामुखकमलमें भ्रमरकी नाईं अतिलुब्ध ॥ ३९ ॥

गोपीरञ्जनदैवज्ञो लीलाकमलपूजितः ।
क्रीडाकमलसंदोहो गोपिकाप्रीतिरञ्जनः ॥ ४० ॥

[गोपीरञ्जनदैवज्ञः] २७० गोपियोंके रंजन करनेमें तीनों कालमें उचित समस्त शृंगाररस दिखानेवाले. [लीलाकमलपूजितः] लीला (लीलादेवी अर्थात् श्रीराधिका) के कमलोंकरके पूजित. [क्रीडाकमलसंदोहः] क्रीडाके लिये कमलोंका संदो(समूह) जिनके. [गोपिकाप्रीतिरञ्जनः] गोपियोंको प्रीतिपूर्वक रंजन करनेवाले अर्थात् गोपियोंको नाना प्रकार रागयुक्त करनेवाले ॥ ४० ॥

रञ्जको रञ्जनो रङ्गो रङ्गी रङ्गमहीरुहः ।
कामः कामारिभक्तोऽयं पुराणपुरुषः कविः ॥ ४१

[रञ्जकः] भक्तोंके मनको रंजन करनेवाले अर्थात् अ नेमें अनुरागयुक्त करनेवाले. [रञ्जनः] अपने अनुरागसे भक्तों मनको खैंचनेवाले. [रङ्गः] जिसकेविषैं भक्तोंका मन र (आसक्त) है. [रङ्गी] अनेक प्रभाववाले. [रङ्गमहीरुहः रंगभूमिमें " मल्लानामशनिः " इत्याद्युक्त नाना भावोंके अनुसा प्रादुर्भूत होनेवाले. [कामः] शील, सौंदर्य, सौकुमार्य, औद

आदि गुणोंकरके अत्यंत कमनीय (प्रिय) है १ 'कामयति उत्पादयति प्रजा इति कामः' ऐसी व्युत्पत्तिसे कामदेवस्वरूप "प्रजनश्चास्मि कन्दर्पः" इति स्मृतेः । २ मुमुक्षुपुरुषोंके कामनाके गोचर ३. [कामारिभक्तः] २८० कामारि (शिव है भक्त जिनका. [पुराणपुरुषः] पुरातन (प्राचीन) अर्थात् जूने पुरुष. [कविः] क्रांतदर्शी (दृष्टिके अविषय पदार्थोंको देखनेवाले) ॥ ४१ ॥

नारदो देवलो भीमो बालो बालमुखाम्बुजः ।
अम्बुजो ब्रह्म साक्षी च योगी दत्तवरो मुनिः ॥ ४२ ॥

[नारदः] अपने भक्तोंका अज्ञान दूर करनेवाले १ अपने भक्तोंको ज्ञान देनेवाले २ तिन्होंका ज्ञानोपदेशसे मनका शोधन तथा स्वरूपकी सिद्धि करनेवाले ३ चराचरविश्वका पालनक-रनेवाले ४. [देवलः] देवतोंको स्वीयभाव (अपनात) से स्वीकार करनेवाले. [भीमः] अतिबलवाले १ असुरोंको भय देनेवाले २. [बालः] शिशुरूपसे वटपत्रके पुट (द्रोण) में सोनेवाले. [बालमुखाम्बुजः] बालककी नाई है अंबुजतुल्य मुख जिनका. [अम्बुजः] जलमें उत्पन्न होनेवाले मत्स्य, कूर्म अवतार. [ब्रह्म] बृहद्गुणसे वेदांतशास्त्रसेही वेद्य (जानने योग्य). [साक्षी] २९० साक्षात् (प्रत्यक्ष) देखनेवाले. [योगी] समाधिमें चित्तको अंतर्मुख (हृदयके भीतर) लगा-नेवाले यद्यपि सब जगह उदासीनभी है तथापि अपने भक्तोंके हृदयके विषैं नित्य युक्त होनेवाले २ योग (संयमन)

करनेवाले अर्थात् इंद्रियोंको रोकनेवाले ३. [दत्तवरः] भक्तोंके अर्थ वर देनेवाले. [मुनिः] श्रुत अर्थका उपपत्ति (युक्तियों) करके विचार करनेका है शील (स्वभाव) जिनका ॥ ४२ ॥

ऋषभः पर्वतो ग्रामो नदीपवनवल्लभः ।
पद्मनाभः सुरज्येष्ठो ब्रह्मा–

[ऋषभः] श्रेष्ठ. [पर्वतः] गोवर्धनस्वरूप १ मेरुस्वरू " मेरुः शिखरिणामहम् " इति स्मृतेः । २. [ग्रामः] संपू भूतोंके प्रेरक तथा आधार. [नदीपवनवल्लभः] यमुनाके समी वन (पुलिन) के स्वामी १ यमुनाके समीप वन है प्रि जिनको २. [पद्मनाभः] पद्म है नाभिमें जिनके. [सुरज्येष्ठः देवतोंमें अग्रगणनीय (प्रथम गिननेमें आवें). [ब्रह्मा] ३० चतुर्मुखके अंतर्यामी हुए विश्वकी रचना करनेवाले.

इति गोपालनामसहस्रस्य तृतीयं शतकं समाप्तम् ॥ ३ ॥

अथ श्रीगोपालनामसहस्रस्य
चतुर्थशतकम् ।

रुद्रोऽहिभूषितः ॥ ४३ ॥

[रुद्रः] अपने आश्रित पुरुषोंके दुःखका नाश करनेवाले संहारकालमें प्रजाको रुवावनेवाले २. [अहिभूषितः] कालीय दमनकालमें उसके फणमंडलमध्यमें रहनेसे कालीयकरके भूषि

१ अपने पादचिह्नकरके भूषित किया है अहि (कालीय) जिसने ॥ ४३ ॥

गणानां त्राणकर्ता च गणेशो ग्रहिलो ग्रही।
गणाश्रयो गणक्रोधी क्रोडीकृतजगत्त्रयः ॥ ४४ ॥

[गणानां त्राणकर्ता] गोगोपियोंकी रक्षा करनेवाले. [गणेशः] गोगोपियोंके नियंता (मालिक). [ग्रहिलः] सूर्यादि ग्रह नियम्य (आधीन) है जिसके. [ग्रही] अष्टम आदि अशुभस्थान करके वर्जित है सूर्य आदि ग्रह जिसके १ भक्तोंके अर्पित पत्र पुष्प आदिकोंका नित्य ग्रहण करनेवाले. " यद्ब्रह्मा ऋषयश्चैव स्वयं पशुपतिश्च यत् । शेषाश्च विबुधा दैत्या गन्धर्वा नागराक्षसाः ॥ ये हव्यं कव्यं च सततं विधियुक्तं प्रयुञ्जते । ताः सर्वा शिरसा देवो हरिर्गृह्णाति वै स्वयम् ॥ " इति नारायणोक्तेः। [गणाश्रयः] देवगणोंके आश्रय. [गणक्रोधी] असुरोंके गणोंपर क्रोध करनेवाले १ देवगणोंके ऊपर अव्याहत (जो अन्यथा न होवे) है आज्ञा जिनकी. " ब्रह्मादयो यत्कृतसेतुपालाः " इति स्मरणात्। [क्रोडीकृतजगत्त्रयः] क्रोडीकृत (गोदमें किये) है तीनों जगत् जिन्होंने ॥ ४४ ॥

यादवेन्द्रो द्वारकेन्द्रो मथुरावल्लभो धुरी।
भ्रमरः कुन्तली कुन्तीसुतरक्षी महामखी ॥ ४५ ॥

[यादवेन्द्रः] ३१० यादवोंमें अग्रगण्य. [द्वारकेन्द्रः] द्वारकाके ईश. [मथुरावल्लभः] जिस ब्रह्मज्ञानकरके संपूर्ण जगत्का

तत्त्वपूर्वक निश्चय होताहै वह ब्रह्मज्ञानका सारभूत है जिस पुरीमें सो मथुरापुरी है नित्य अतिप्रिय जिनको. "मथुरायां स्थितिर्ब्रह्मन् सर्वदा मे भविष्यति। मथुरायां विशेषेण मां ध्यायन्मोक्षमश्नुते ॥ मथुरा भगवान्यत्र नित्यं सन्निहितो हरिः" इति श्रुतिस्मृतिभ्याम्। [धुरी] सर्वजगत्का रक्षण करनेमें भर नाम भा जिनका. [भ्रमरः] नर्तन करते हुए गानेवाले. [कुन्तली] उत्तम केशोंको धारण करनेवाले. [कुन्तीसुतरक्षी] कुंतीसुतों (पांडवों) की रक्षा करनेका शील (स्वभाव) है जिनका. [महामखी] वैदिक, तांत्रिक, मिश्र ये तीन प्रकारका मख (सपर्यात्मक पूजन) वाले ॥ ४५ ॥

यमुनावरदाता च कश्यपस्य वरप्रदः ।
शङ्खचूडवधो दामी गोपीरक्षणतत्परः ॥ ४६ ॥

[यमुनावरदाता] यमुनाके अर्थ वर देनेवाले. [कश्यपस्य वरप्रदः] कश्यपके पूर्वजन्ममें सुतपनामको वर देनेवाले. [शंखचूडवधः]३२० शंखचूडनामक दैत्यका वध करनेवाले. [दामी] उदरमें दाम (जेवडी) है जिनके १ गौओंके पाद (पग) बंधन करनेकी रज्जु (जेवडी) विद्यमान है जिनके २. [गोपीरक्षणतत्परः] गोपियोंकी रक्षा करनेमें तत्पर अर्थात् जीत है निद्रा जिन्होंने ॥ ४६ ॥

पाञ्चजन्यकरो रामी त्रिरामी वनजो जयः ।
फाल्गुनः फाल्गुनसखा विराधवधकारकः ॥ ४७

[पाञ्चजन्यकरः] पांचजन्य (शंख) है कर (हस्त) में जिनके. [रामी] रामा (रमण करनेवाली लक्ष्मी) है नित्य विद्यमान जिनके १ सब जगह अंतर्यामिस्वरूपसे रमण (रहना) जिनका २. [त्रिरामी] गोकुल, मथुरा, द्वारका ये तीन स्थानोंमें अतिशयकरके क्रीडा करनेवाले. [वनजः] वनमें होनेवाले नृसिंह, वराह, मत्स्य, कूर्म. [जयः] जिसके पूजनसे भगवद्भक्त कामक्रोध आदिको जीतलेतेहैं. [फाल्गुनः] अर्जुन है विभूति जिनकी. "पाण्डवानां धनंजयः" इति स्मृतेः। [फाल्गुनसखा] अर्जुनका सखा. [विराधवधकारकः] ३३० विराधनामक असुरका श्रीरामरूपसे वध (नाश) करनेवाले॥४७॥

रुक्मिणीप्राणनाथश्च सत्यभामाप्रियंकरः।
कल्पवृक्षो महावृक्षो दानवृक्षो महाफलः॥४८॥

[रुक्मिणीप्राणनाथः] रुक्मिणीके प्राणनाथ (पति). [सत्यभामाप्रियंकरः] सत्यभामाका पारिजात आदिके अर्पण करनेसे प्रिय करनेवाले. [कल्पवृक्षः] भक्तोंके अर्थ सब काम (मनोरथ) देनेवाले. [महावृक्षः] आप संपूर्णोंके कारण हो और कार्यकारणका है अभेद इससे समस्त जगत्स्वरूप. [दानवृक्षः] देयवस्तुके दानमें आत्मपर्यंत (अपना आपा) देनेवाले, [महाफलः] संसारसे मोक्षरूप (छुटाना) है फल जिससे॥ ४८॥

अङ्कुशो भूसुरो भावो भामको भ्रामको हरिः।
सरलः शाश्वतो वीरो यदुवंशी शिवात्मकः॥४९॥

[अङ्कशः] बालकरूपसे अंक (गोद) में सोनेवाले १ ब्रह्मादिकोंके नियामक २. [भूसुरः] पृथ्वीमें सबसे प्रथम पूजनीय अर्थात् ब्राह्मणस्वरूप, "सदाहं द्विजरूपेण विचरामि महीतले" इति पुराणात्। [भावः] संपूर्णोंकी ब्रह्मादिकद्वारा उत्पत्ति करानेवाले. [भ्रामकः] ३४० अपनेसे बहिर्मुख (विपरीत) अर्थात् अन्यथा चलनेवाले पुरुषोंको नाना योनियोंमें भ्रमावनेवाले १ दैत्योंको क्रोध करावनेवाले २. [भ्रामकः] अपनी अचिंत्य लीलाकरके ब्रह्मादिदेवतोंको भ्रमावनेवाले. [हरिः] ध्यान करनेवाले पुरुषोंके मन तथा पाप इनको हरनेवाले. "हरिर्हरति पापानि दुष्टचित्तैरपि स्मृतः।" इति स्मृतेः। १ ब्रह्माआदि देवतोंकाभी हरण (संहार) करनेवाले. "ब्राह्मणमिन्द्रं रुद्रं च यमं वरुणमेव च। प्रसह्य हरते यस्मात् हरिरित्यभिधीयते॥" इति वचनात्।२. [सरलः] कोमल स्वभाववाले. [शाश्वतः] शश्वत (सबसे प्रथम) होनेवाले अर्थात् सबसे जूने. [वीरः] प्राणियोंके अन्तर्यामी होकर व्याप्त होनेवाले. [यदुवंशी] यदुवंशमें होनेवाले. [शिवात्मकः] शिव (महादेव) के हृदय. "शिवस्य हृदयं विष्णुः" इत्युक्तेः।१ कल्याणस्वरूप है आत्मा (दिव्यमंगलविग्रह) जिनका॥ ४९॥

प्रद्युम्नो बलकर्ता च प्रहर्ता दैत्यहा प्रभुः।
महाधनो महावीरो वनमालाविभूषणः॥ ५०॥

[प्रद्युम्नः] अतिशयकरके स्वर्गमें जो अभ्यासके गोचर अर्थात् कामदेवस्वरूप १ सर्वको व्याप्त होकर भर्गरूपसे आदित्य-

स्वरूप २ प्र (प्रकृष्ट) है द्युम्न (बल) नाम विश्वके धारण करनेका सामर्थ्य जिनका ३ प्रकृष्ट है द्युम्न (द्रव्य) जिसके. [बलकर्ता] गोवर्धन धारण करनेमें बल करनेवाले ४ [प्रहर्ता] ३५० ध्यान करनेवाले भक्तजनोंके सब क्लेशोंको अतिशयकर हरनेवाले. [दैत्यहा] दैत्योंको मारनेवाले. [प्रभुः] जिससे सब चिदचिदात्मक[1] प्रपंच उत्पन्न होताहै. "अहं सर्वस्य प्रभवः" इति स्मृतेः। [महाधनः] जिससे धनिलोगोंको बहुत धनकी प्राप्ति है १ बहुत है विभूति जिनके २. [महावीरः] सबको जीतनेवाले. [वनमालाविभूषणः] पत्रपुष्पादिकोंसे रचित[2] चरणपर्यंत पडनेवाली वनमाला है भूषण जिनका ॥ ५० ॥

तुलसीदामशोभाढ्यो जलंधरविनाशनः ॥
शूरः सूर्योऽमृतण्डश्च भास्करो विश्वपूजितः॥५१॥

[तुलसीदामशोभाढ्यः] तुलसीदलकी माल्यकरके जो अत्यंत शोभा तिसकरके युक्त. [जलंधरविनाशनः] जलंधरके नाश करनेवाले [शूरः] पराक्रमशाली १ अपने भक्तोंको पराक्रमयुक्त करनेवाले २ [सूर्यः] प्रपंचकी उत्पत्ति करनेवाले १ कर्ममें[3] लोकको प्रवृत्त करनेवाले २ कोटिसूर्यके तुल्य प्रकाशस्वरूप हुए जगत्का प्रकाश करनेवाले ३. [अमृतण्डः] ३६० अमृत (जो मृत नहीं होवे) स्वरूप अंड अर्थात् संपूर्ण भूतोंमें जो नष्ट नहीं होवे. "यः स सर्वेषु भूतेषु

१ चित्-जीव अचित्-प्रकृति। २ बनाई हुई। ३ सन्ध्यावन्दन आदि कर्म करनेमें।

नश्यत्सु न विनश्यति।" इति स्मृतेः। मृकण्डऋषिरूप१.[भास्करः] संपूर्ण जगत्के प्रकाशक. "यस्य भासा सर्वमिदं विभाति" इति श्रुतेः। [विश्वपूजितः] विश्वसे पूजित ॥ ५१ ॥

रविस्तमोहा वह्निश्च वाडवो वडवानलः।
दैत्यदर्पविनाशी च गरुडो गरुडाग्रजः ॥ ५२ ॥

[रविः] मुक्तपुरुषोंके प्राप्य १ संहारकालमें विश्वको अपनेमें लीन करनेवाले २. [तमोहा] अपने आश्रितपुरुषोंका अज्ञान दूर करनेवाले. "तेषामेवानुकम्पार्थमहमज्ञानजं तमः। नाशयाम्यात्मभावस्थो ज्ञानदीपेन भास्वता" इति स्मृतेः। [वह्निः] भक्तोंके अर्पित तुलसीपुष्पादिकोंको धारण करनेवाले १ भक्तोंको मोक्ष देनेवाले २. [वाडवः] वडवामें होनेवाला जो अग्नि सो जिनकी विभूति है. [वडवानलः] वडवासंबंधी जो अनल (अग्नि) तद्रूप अर्थात् दाहशक्ति देनेवाले. [दैत्यदर्पविनाशी] दैत्योंके दर्प (गर्व) का नाश करनेवाले. [गरुडः] गरुड जिनके वाहन. [गरुडाग्रजः] ३७० गरुडके अग्रज (भ्राता) ॥ ५२ ॥

गोपीनाथो महानाथो वृन्दानाथो विरोधकः।
प्रपञ्ची पञ्चरूपश्च लता गुल्मश्च गोपतिः ॥ ५३ ॥

[गोपीनाथः] सकलपुरुषोंको गुप्त करनेवाली (आवरण करनेवाली) जो प्रकृति (माया) तिसके नाथ १ गोपी (व्रजसुंदरी) तिनके स्वामी २. [महानाथः] लोकोंके नाथ जो ब्रह्मा-

१ मृकण्डः इस पाठका अर्थ है।

दिक देवता तिनके नाथ. [वृन्दानाथः] वृंदा (राजकन्या, वृंदावनाधिष्ठात्री देवता, श्रीराधा) तिन्होंके नाथ. [विरोधकृः] कौरव पांडवोंका परस्पर विरोध करावनेवाले. [प्रपञ्ची] अपने संकल्पकरके जगत्का विस्तार करनेवाले. [पञ्चरूपः] विष्णु, महेश, गौरी, सूर्य, गणेश ये पंचदेवोंमें श्रेष्ठ १ पर, व्यूह, विभव, अर्चावतार अंतर्यामिरूपसे रहनेवाले २. [लता] व्रजलतारूप. [गुल्मः] नूतन स्कंधरहित वृक्षस्वरूप. [गोपतिः] गो (पृथ्वी, स्वर्ग, क्रतु, श्रुति) के पति ॥ ५३ ॥

गङ्गा च यमुनारूपो गोदा वेत्रवती तथा ।
कावेरी नर्मदा तापी गण्डकी सरयूरजः ॥ ५४ ॥

[गङ्गा] ३८० गंगारूप विभूतिवाले अर्थात् सकलजगत्की रक्षाके लिये प्रवाहरूप. "स्रोतसामस्मि जाह्नवी" इति स्मृतेः। [यमुनारूपः] यमुनास्वरूप. [गोदा] पुण्यनदीविशेषस्वरूप. [वेत्रवती] वेत्रवतीरूप. [कावेरी] कावेरीरूप. [नर्मदा] नर्मदारूप. [तापी] तापीरूप. [गण्डकी] गण्डकीरूप. [सरयू] सरयूरूप. [रजः] रंजक तथा व्यापकस्वरूप. " आकृष्णेन रजसा वर्तमानः " इति श्रुतेः ॥ ५४ ॥

राजसस्तामसः सत्त्वी सर्वाङ्गी सर्वलोचनः ।
सुधामयोऽमृतमयो योगिनीवल्लभः शिवः ॥ ५५ ॥

[राजसः] ३९० रजोगुणके नियामक अर्थात् तदभिमानी चतुर्मुख काल दक्ष आदिद्वारा जगत्की रचना करनेवाले. [तामसः] तमोगुणके नियामक अर्थात् तदभिमानी रुद्रकाल आदिके

द्वारा संहार करनेवाले. [सत्त्वी] सत्वगुणके नियामक अर्थात् सत्त्वगुणोपहित कालमन्वादिद्वारा पालन करनेवाले. " ब्रह्मदक्षादयः कालस्तथैवाखिलजन्तवः । विभूतयो हरेरेता जगतः सृष्टिहेतवः ॥ विष्णुमन्वादयः कालः सर्वभूतानि च द्विज । स्थितेर्निमित्तभूतस्य हरेरेता विभूतयः ॥ रुद्रः कालोन्तकाद्याश्च समस्ताश्चैव जन्तवः । चतुर्धा प्रलयायैता जनार्दनविभूतयः ॥ " इति वैष्णवोक्तेः । [सर्वाङ्गी] सब जगत् है अंग (शरीर) जिनका. " यस्य आत्मा शरीरं यस्य पृथिवी शरीरम् " इति श्रुतेः । [सर्वलोचनः] संपूर्णोंको देखनेवाले. [सुधामयः] अमृतमय (चंद्रस्वरूप). [अमृतमयः] प्रचुर (अधिक) अमृतस्वरूप. [योगिनीवल्लभः] योगिनी (कात्यायनीके व्रतकरके दुर्बल हुए हैं अंग जिन्होंके ऐसी कुमारियोंके वल्लभ (प्रिय). [शिवः] एकवार जिसके उच्चारणसे पापराशिका नाश होता है इससे पापराशिके नाशक ॥ ५५ ॥

बुद्धो बुद्धिमतां श्रेष्ठो-

[बुद्धः] बुद्धावतार १ प्रशस्त बुद्धिवाले २. [बुद्धिमतां श्रेष्ठः]४०० बुद्धिवान् ब्रह्मादिक देवताओंमें श्रेष्ठ अर्थात् उन्होंके बुद्धिके प्रकाशक. " तं ह देवमात्मबुद्धिप्रकाश " मिति श्रुतेः ॥

इति श्रीगोपालनामसहस्रस्य चतुर्थशतकं समाप्तम् ॥ ४ ॥

---

१ यहां दोनों नामका अर्थ एकही है तथापि रूपके भेदसे शक्तिका भेद कोई वैयाकरण मानते हैं ।

अथ श्रीगोपालनामसहस्रस्य

पञ्चमशतकम् ।

विष्णुर्जिष्णुः शचीपतिः ॥

वंशी वंशधरो लोकविलोको मोहनाशनः ॥ ५६ ॥

[विष्णुः] जगत्को प्रकाश करनेवाले १ आश्रित पुरुषोंमें भक्तिसे प्राप्त होनेवाले २ समस्तोंको जाननेवाले ३ संपूर्णोंमें व्याप्त होनेवाले अर्थात् देश, काल, वस्तुके परिच्छेदरहित. "यच्च किंचिज्जगत्यस्मिन्दृश्यते श्रूयतेऽपि वा । अंतर्बहिश्च तत्सर्वं व्याप्य नारायणः स्थितः" इति श्रुतेः । ४ अंतर्यामिस्वरूपसे प्राणियोंमें प्रविष्ट ५ "तत्सृष्ट्वा तदेवानुप्राविशत् यत्प्रयन्त्यभिसंविशंति" इति श्रुतेः । "यस्माद्विष्टमिदं सर्वं तस्य शक्त्या महात्मनः । तस्मादेवोच्यते विष्णुर्विशेर्धातोः प्रवेशनात् ॥" इति वैष्णवोक्तेश्च । [जिष्णुः] असुरजनको जीतनेवाले. [शचीपतिः] इंद्रके अंतर्यामी. [वंशी] वंशी है विद्यमान जिनके. [वंशधरः] मुरलीको धारण करनेवाले. [लोकविलोकः] लोकोंको कृपाकरके देखनेवाले १ संपूर्णको देखनेवाले २ कृपाकरके अपने आत्माको दिखावनेवाले ३. [मोहनाशनः] मोहन (इंद्रजाल) में व्याप्त होनेवाले अर्थात् मंत्ररूप १ मोह (अज्ञान) का नाश करनेवाले २ ॥ ५६ ॥

---

१ लोकः; विलोकः इस पाठान्तरका यह अर्थ है ।

रवरावो रवो रावो बलो बालो बलाहकः ।
शिवो रुद्रो नलो नीलो लाङ्गुली लाङ्गुलाश्रयः॥५७॥

[रवरावः] तिस तिस स्वभावोंके अनुरूप मनुष्य पशु पक्षी-आदिकोंके शब्दको उच्चारण करावनेवाले १ ' रवेण शब्देन राव्यते ज्ञाप्यते ' इस व्युत्पत्तिसे वेदैकगम्य अर्थात् वेदसे जो जानेजाय. [रवः] शब्दस्वरूप १ मुक्तपुरुषोंके प्राप्य अर्थात् प्राप्तिके योग्य २ सर्वज्ञ ३. [रावः]४१० मेघमल्हारआदि राग-स्वरूप. " नादेन व्यज्यते वर्णः पञ्चवर्णात्पयद्वचः । वचसो व्यव-हारोऽयं नादाधीनमतो जगत् ॥ वीणावादनतत्त्वज्ञः श्रुतिजाति-विशारदः । तालज्ञश्चाप्रयासेन मोक्षमार्गं स गच्छति " इति संगी-तात्। १सर्वशास्त्रजन्य जो ज्ञान तिसके विषय २. [बलः] प्राणों-को धारण करावनेवाले. [बालः] बालककी नाईं संपूर्ण आश्रित-कजनोंके अत्यंत स्नेहके स्थान १ गोपोंके बालक ईश्वर अर्थात् क्रीडा करावनेमें प्रेरणा करनेवाले २. [बलाहकः] मेघकी नाईं भक्तोंका योग क्षेम करनेवाले. " योगक्षेमं वहाम्य-हम् " इति स्मरणात् । [शिवः] शिवा (पार्वती) है विभूति जिनकी. [रुद्रः] अभक्तोंको नरकपात आदि व्याधियोंसे रुदन करवानेवाले अर्थात् रुवावनेवाले. [नलः] [नीलः] [लाङ्गुली] [लाङ्गुलाश्रयः] नल—नील—हनुमान् आदि वानरोंको सेतुबन्धन सामर्थ्य तथा अतिबल देनेसे तिन्होंके निया-मक अर्थात् तिन्होंमें अतिस्नेह परवशसे तिनका आत्मीय-भावसे अंगीकार करनेवाले ॥ ५७ ॥

पारदः पावनो हंसो हंसारूढो जगत्पतिः ॥
मोहनी मोहनो माया महामायी महासुखी ॥ ५८ ॥

[पारदः] ४२० संसाररूपसमुद्रसे आश्रितपुरुषोंको कर्मसमाप्ति देनेवाले. [पावनः] जिसके ध्यानकीर्तनसे भक्तजन पवित्र होतेहैं १ अपने सिद्धभक्ति करनेवाले भक्तोंको पवित्र करनेवाले २. [हंसः] भक्तोंका संसार दूर करनेवाले हंसावतार सनक—सनंदन—सनातन—सनत्कुमार इन्होंको उपदेश करनेवाले. [हंसारूढः] आत्मस्वरूप जो जीव तिसपर आरोहण करनेवाले. चतुर्थाश्रमस्वरूप. " आश्रमाणामहं तुर्यः " इति श्रुतेः। [जगत्पतिः] जगत्के पालक. [मोहनी] मोहनी अवतारसे असुरोंको मोह करावनेवाले. [मोहनः] अपने सौंदर्यगुणसे जगत्को मोहन करावनेवाले अर्थात् त्रिलोकीमें सुंदर. "पुंसां मोहनरूपाय दृष्टिचित्तापहारिणे।" इति वचनात्। [माया] विचित्रकार्यकारी अर्थात् अचिंत्यशक्तिस्वरूप. [महामायी] अपमित है कृपा जिनकी. [महासुखी] आसन, परिधान, भूषण, यान[1], गान, सुंदररूप ये हैं लक्षण जिनके अर्थात् अपरिमित आनंदवाले ॥ ५८ ॥

वृषो वृषाकपिः कालः कालीदमनकारकः ।
कुब्जाभाग्यप्रदो वीरो रजकक्षयकारकः ॥ ५९ ॥

[वृषः] ४३० भक्तोंको अभीष्ट देनेवाले. [वृषाकपिः] धर्मस्वरूप हुए असुरोंको कपावनेवाले. "कपिर्वराहः श्रेष्ठश्च धर्मश्च

१ वाहन।

वृष उच्यते। तस्माद्वृषाकपिः प्राह कश्यपो मां प्रजापतिः ॥" इति व्यासोक्तेः। अर्थात् धर्मस्वरूप वराह. [कालः] आयुका परिच्छेद (आयु इतना है) करनेवाले. [कालीदमनकारकः] यमुनाका बलभद्ररूपसे दमन करनेवाले अर्थात् हलसे अपने सन्मुख करनेवाले. [कुब्जाभाग्यप्रदः] कुब्जाको भाग्य (रूप) देनेवाले. [वीरः] विक्रम पराक्रमवाले. [रजकक्षयकारकः] रजक (धोबी) का नाश करनेवाले अर्थात् इसको मारकर धौतवस्त्र धारण करनेवाले ॥ ५९ ॥

कोमलो वारुणीराजा जलजो जलधारकः ।
हारकः सर्वपापघ्नः परमेष्ठी पितामहः ॥ ६० ॥

[कोमलः] मधुरमूर्ति. [वारुणीराजा] शतभिषानक्षत्रमें प्रकाश होनेवाले अर्थात् गोविंदाख्य १ वरुणके जो भाग तथा अपत्य तिनको करनेवाले २ जलमें प्रकाशित होनेवाले ३. [जलजः] मत्स्यरूप. [जलधारकः] ४४० जलही है स्थान जिसका अर्थात् जलशायी. [हारकः] आश्रित पुरुषोंके तीनों ताप (आध्यात्मिक, आधिभौतिक, आधिदैविक) दूर करनेवाले. [सर्वपापघ्नः] संपूर्णपापोंका नाश करनेवाले. [परमेष्ठी] परमवैकुंठलोकमें स्थित होनेवाले. [पितामहः] जगद्गुरु ब्रह्मा तिसकेभी गुरु ॥ ६० ॥

खड्गधारी कृपाकारी राधारमणसुन्दरः ।
द्वादशारण्यसंभोगी शेषनागफणालयः ॥ ६१ ॥

१ वारुणः राजा इस पाठान्तरके यह दो अर्थ हैं । २ मनःकृत देहकृत, ग्रहकृत ।

[खड्गधारी] नंदक नामक खड्गको धारण करनेवाले. [कृपाकारी] भक्तोंके ऊपर कृपा करनेका है शील (स्वभाव) जिनका. [राधारमणसुन्दरः] राधाके संग रमण करनेमें निपुण. [द्वादशारण्यसम्भोगी] बारह (१२) वनमें विहार करनेवाले. [शेषनागफणालयः) शेषनागके फणही है आलय (निवासस्थान) जिनका ॥ ६१ ॥

कामः श्यामः सुखश्रीदः श्रीहः श्रीदः पतिः कृती ।
हरिर्नारायणो नारो नरोत्तम इषुप्रियः ॥ ६२ ॥

[कामः] ४५० मुमुक्षुपुरुषोंकी कामनाके गोचर अर्थात् स्थान१ मुमुक्षुपुरुषोंके कमनीय (अत्यंत सुंदर) प्रतीत होनेवाले२. [श्यामः] नवीन मेघके समान कांतिवाले अर्थात् मेघश्याम. "मेघश्यामं महाबाहुम्" इति वचनात् । [सुखश्रीदः] सुख तथा श्री (सौभाग्य) को देनेवाले. [श्रीहः] श्री (श्रीति) तिसमें है ईहा (इच्छा) जिसकी अर्थात् चेतनमात्रपर श्रीति करनेवाले. [श्रीदः] श्रीति देनेवाले. [पतिः] सर्वपालक. [कृती] जिससे संपूर्ण कार्य निष्पन्न (सिद्ध) होते हैं. [हरिः] दुष्ट जनोंका नाश करनेवाले नरसिंहस्वरूप १ हरितवर्णवाले. "हराम्यघं हि स्मर्तॄणां हविर्भागं क्रतुष्वहम् । वर्णतश्च हरिः श्रेष्ठस्तस्माद्धरिरहं स्मृतः" इति भगवदुक्तेः २. [नारायणः] न (नहीं है) अर (दुःख) जिन्होंके ऐसे जो नार नाम

१ भद्र, श्री, लोह, मांडीर, महाताल, खदीर, काम, बहुल, कुमुद, काम्य, मधु, वृंदावन ।

मुक्तजीव तिन्हींके आश्रय अर्थात् मुक्तपुरुषोंको अपना सुखानुभव देनेवाले १ प्रलयकालमें संपूर्ण जीवोंके स्थान. “ यत्प्रयन्त्यभिसंविशन्ति ” इति श्रुतेः। “ नराणामयनं यस्मात्तस्मान्नारायणः स्मृतः ” इति ब्रह्मवैवर्तवचनात् । [नारः] नरके अपत्य संततिरूप. [नरोत्तमः] ४६० नरोंमें उत्तम (श्रेष्ठ). [इषुप्रियः] अश्वोंके चलानेमें कुशल १ स्वसंकल्पसे प्रीति करनेवाले ॥ ६२॥

गोपालीचित्तहर्ता च कर्ता संसारतारकः ।
आदिदेवो महादेवो गौरीगुरुरनाश्रयः ॥ ६३ ॥

[गोपालीचित्तहर्ता] वंशीके शब्दसे गोपस्त्रियोंके चित्तको हरनेवाले. [कर्ता] संपूर्णकारकस्वरूप. [संसारतारकः] अपने भक्त जनोंको संसाररूपी समुद्रसे पार करनेवाले. [आदिदेवः] आदिकारणदेव. [महादेवः] सर्वश्रेष्ठदेवस्वरूप. [गौरीगुरुः] गोपकन्याके पति. “ जारः कनीनां पतिर्जनीनाम् ” इति श्रुतेः। अर्थ कन्याओंके जार नाम मित्र, और पराई स्त्रियोंके संग क्रीडा करनेवाले. [अनाश्रयः] नहीं है अन्य कोई आश्रय जिसका अर्थात् अपने स्वरूपमें आपही स्थित. “ स भगवान्कस्मिन्प्रतिष्ठितः ? स्वे महिम्नि ” इति श्रुतेः ॥ ६३ ॥

साधुर्माधुर्विधुर्धाता त्राताऽक्रूरपरायणः ।
रोलम्बी च हयग्रीवो वानरारिर्वनाश्रयः ॥ ६४ ॥

[साधुः] भक्तोंके अभीष्ट (मनोवांछित) सिद्ध करनेवाले [माधुः] ४७० मा (लक्ष्मी) को धारण करनेवाले. विधुः संपूर्ण जगत्को विधान करनेवाले. [धाता] अनंतरूपसे विश्व

को धारण तथा पालन करनेवाले. [त्राता] जगत्की रक्षा करनेवाले. [अक्रूरपरायणः] अक्रूर है पितृव्यभावसे परम आश्रय जिनका १ सात्त्विकपुरुषोंके स्थान २. [रोलम्बी] रोलंब नाम भ्रमर तिससे सेवित जो कल्पवृक्षके पुष्प तिन पुष्पोंसे बनाये हुए शिरोभूषण वह है मस्तकमें जिनके १ दूतभावसे आनेवाला उद्धवरूप है भ्रमर जिनके। २ भ्रमराकार है बाल जिनके ३. [हयग्रीवः] हय (अश्व) की नाईं है ग्रीवा (नाड) जिनकी अर्थात् हयग्रीवावतार १ मधु तथा कैटभदैत्योंको मारनेवाले २. [वानरारिः] बलभद्ररूपसे द्विविदनामक वानरके शत्रु. [वनाश्रयः] वृंदावनही है प्रतिदिन रहनेका स्थान जिनका. "वृन्दावनं परित्यज्य पादमेकं न गच्छति" इत्युक्तेः ॥ ६४ ॥

वनं[1] वनी वनाध्यक्षो महाबन्धो महामुनिः ।
स्यमन्तकमणिप्राज्ञो विज्ञो विघ्नविघातकः ॥ ६५ ॥

[वनम्] श्रीवृंदावनस्वरूप. "मन्त्री वृन्दावनं ध्यायेत्सर्वदेवनमस्कृतम् । सर्वर्तुकुसुमोपेतं पतत्रिगणनादितम्॥" इति गौतमीयतन्त्रात् । [वनी] ४८० नित्यविहारके लिये चैत्रवनादिक है विद्यमान जिनके. [वनाध्यक्षः] वनोंके अध्यक्ष (पालक). [महाबन्धः] वडा है "वृन्दावनं परित्यज्य पादमेकं न गच्छति" इत्युक्त प्रतिज्ञारूप बंध करनेवाले. [महामुनिः] व्यासादिरूप बडे मुनि. "कृष्णद्वैपायनं व्यासं विद्धि नारायणं स्वयम्" इति स्मृतेः। [स्यमन्तकमणिप्राज्ञः] स्यमंतकमणिका प्रभाव जाननेवाले.

---

१ बलं बली बलाध्यक्षो महामध्यः इत्यपि पाठः ।

[विज्ञः] विशेषरूपसे सब वस्तुको जाननेवाले. "यः सर्वज्ञः सर्ववित्" इति श्रुतेः । [विघ्नविघातकः] स्मृतिमात्रसेही अपने आश्रित पुरुषोंके विघ्न निवारण करनेवाले. "अशुभानि निराचष्टे तनोति शुभसंततिम् । स्मृतिमात्रेण यत्पुंसां ब्रह्म तन्मङ्गलं विदुः ॥" इति वैष्णवोक्तेः ॥ ६५ ॥

गोवर्द्धनो वर्द्धनीयो वर्द्धनीवर्द्धनप्रियः ।
वर्द्धन्यो वर्द्धनो वर्द्धी वर्द्धिष्णुः सुमुखः प्रियः ॥६६॥

[गोवर्द्धनः] गो (भूमि) का भार दूर करके भूमिको हर्ष करनेवाले १ गौओंकी तथा वाणीकी अनंत लीलासे वृद्धि करनेवाले २. [वर्द्धनीयः] निरंतर सब पुरुषोंके सेवनीय होनेसे वृद्धिके योग्य. [वर्द्धनीवर्द्धनप्रियः] जिसकरके जो पुरुष वृद्धिको अर्थात् कीर्तिको प्राप्त होताहै सो कहिये वर्द्धनी नाम संपत् तिसकी वृद्धि करनेवाले हुए संपूर्ण पुरुषोंको प्रिय अर्थात् सुख देनेवाले. [वर्द्धन्यः] ४९० सर्व पूज्य होनेसे वर्द्धनार्ह (वृद्धिके योग्य). [वर्द्धनः] अपने भक्तोंके सुखकी वृद्धि करनेवाले. [वर्द्धी] द्रव्यादिरूप. [वर्द्धिष्णुः] जगत्की वृद्धि करनेमें शील (स्वभाव) वाले. [सुमुखः] शोभन है मुख जिनका. [प्रियः] भक्तिसे प्रीतिके आश्रय ॥ ६६ ॥

वर्द्धितो वृद्धको वृद्धो वृन्दारकजनप्रियः ।
गोपालरमणीभर्ता—

[वर्द्धितः] यशोदा आदिने स्तनपानसे पालित. "अहोति धन्या व्रजगोरमण्यः स्तन्यामृतं पीतमतीव ते मुदा" इति

भागवतात् । [वृद्धकः] ज्ञान, वय करके अपने आत्माको स्पृहणीय करावनेवाले. "पितामहस्य जगतो माता धाता पितामहः । वेदैश्च सर्वैरहमेव वेद्यो वेदान्तकृद्वेदविदेव चाहम् ॥" इति स्वगानात् । [वृद्धः] ब्रह्मरुद्रादिकोंकाभी जनक नाम कारण. "यो ब्रह्माणं विदधाति पूर्वम्" इति श्रुतेः । [वृन्दारकजनप्रियः] देवगणोंके प्रीतिके विषय. [गोपालरमणीभर्ता] ५०० गोपालोंकी रमणी (स्त्रियां) तिनके धारण पोषण करनेवाले.

इति श्रीगोपालनामसहस्रस्य पञ्चमं शतकम् ॥ ५ ॥

अथ श्रीगोपालनामसहस्रस्य षष्ठं शतकम् ।

साम्बकुष्ठविनाशनः ॥ ६७ ॥

[साम्बकुष्ठविनाशनः] सांबको किसीके शापसे पूर्व कुष्ठ रोग होता भया तिस कुष्ठका नाश करनेवाले ॥ ६७ ॥

रुक्मिणीहरणप्रेमी प्रेमी चन्द्रावलीपतिः ।
श्रीकर्ता विश्वभर्ता च नारायण नरो बली ॥ ६८ ॥

[रुक्मिणीहरणप्रेमी] रुक्मिणीके हरनेमें है प्रीति जिनकी. [प्रेमी] भक्तोंके विषैं है अत्यंत प्रीति जिनकी. [चन्द्रावलीपतिः] शिरके भूषणपर स्थित जो मयूरचंद्रकी पंक्ति तिसके रक्षक. [श्रीकर्ता] संपत्तिके कर्ता. [विश्वभर्ता] विश्वके

१ इच्छाका विषय ।

धारक पोषक. [नारायणनरः] सर्वांतर्यामी नरस्वरूप. [बली] विश्वरचना आदि सामर्थ्यवाले ॥ ६८ ॥

गणो गणपतिश्चैव दत्तात्रेयो महामुनिः ।
व्यासो नारायणो दिव्यो भव्यो भावुकधारकः ६९॥

[गणः] देव मनुष्य आदियोंके यूथ (समूह) है नियम्य (आज्ञाकारी) जिसके. [गणपतिः] ५१० नंदसुनंदआदिकोंके पति. [दत्तात्रेयः] दत्तात्रयरूपसे अवतार लेनेवाले. [महामुनिः] शुकादिरूप महामुनि. [व्यासः] कृष्णावतार. [नारायणः] नरसे उत्पन्न होनेवाले जो तत्त्व तिन्होंके स्थान १ जलशायी २. [दिव्यः] स्वर्ग आदिके पालक. [भव्यः] भूमिके हित अर्थात् अवतार लेकर हित करनेवाले. [भावुकधारकः] मन्वादिरूपसे व्यवस्था करावनेवाले ॥ ६९ ॥

स्वः श्रेयः शं शिवं भद्रं भावुकं भविकं शुभम् ।
शुभात्मकः शुभः शास्ता प्रशस्तो मेघनादहा ७०

[स्वः] स्वर्ग तथा अपवर्गस्वरूप. स्वर् अव्यय, स्वर्ग तथा परलोकका बोधक है. [श्रेयः] संपूर्णोंसे प्रशस्य. [शम्] ५२० सुखरूप. [शिवम्] मोक्ष देनेवाले १ सुख देनेवाले २ " पुण्डरीकद्रुमे काले मोक्षे क्षेमे सुखे जले । शिवं वेदान्तरे वेदे गुग्गुलौ वालके हरे ॥ " इत्यभिधानात् । [भद्रम्] मंगलस्वरूप १ संपूर्णोंसे श्रेष्ठ २. [भावुकम्] संपूर्णोंको पित्रादिद्वारा उत्पन्न करावनेवाले. [भविकम्] जिससे संपूर्ण जगत् होता है

१ वैकुंठ । २ स्तुतिके योग्य ।

[शुभम्] जिससे संपूर्ण जगत् की शोभा होतीहै. [शुभात्मकः] शुभ है विग्रह जिनका. [शुभः] जिनके विषैं संपूर्ण शोभित है. [शास्ता] शिक्षक अर्थात् शास्त्रद्वारा जनावनेवाले. [प्रशस्तः] संपूर्ण पुरुषोंके स्तुतिके विषय. [मेघनादहा] ५३० मेघनाद (रावणपुत्र) को मारनेवाले लक्ष्मणस्वरूप ॥ ७० ॥

ब्रह्मण्यदेवो दीनानामुद्धारकरणक्षमः ।
कृष्णः कमलपत्राक्षः कृष्णः कमललोचनः ॥ ७१ ॥

[ब्रह्मण्यदेवः] ब्राह्मणोंके देवता. [दीनानामुद्धारकरणक्षमः] दीनपुरुषोंके उद्धार करनेमें श्रमरहित १ आलस्यरहित २. [कृष्णः] परब्रह्मस्वरूपसे संपूर्णोंके आधार. " ब्रह्मणो वाचको कोयमृकारोऽनन्तवाचकः । शिवस्य वाचकः षश्च णकारो धामवाचकः ॥ अकारो विष्णोर्वचनः श्वेतद्वीपनिवासिनः । नरनारायणार्थस्य विसर्गो वाचकः स्मृतः ॥ सर्वेषां तेजसां राशिः सर्वमूर्तिस्वरूपकः । सर्वाधारः सर्वबीजस्तेन कृष्ण इति स्मृतः ॥ " इति ब्रह्मवैवर्तवचनकदम्बात् । [कमलपत्राक्षः] कमलपत्रके समान शीतल (ठंडे) नेत्रवाले. [कृष्णः] भक्तोंके पापोंका नामोच्चारणद्वारा नाश करनेवाले. " प्रायश्चित्तान्यशेषाणि तपःकर्मात्मकानि च । यानि तेषामशेषाणां कृष्णानुस्मरणं परम् ॥ कृते पापेऽनुतापो वै यस्य पुंसः प्रजायते । प्रायश्चित्तं तु तस्यैकं कृष्णानुस्मरणं परम् ॥ कृष्णेति मङ्गलं नाम यस्य वाचा प्रवर्तते । भस्मीभवन्ति तस्याशु महापातककोटयः ॥ " इति स्मर-

१ छन्दोभङ्ग आर्षः ।

णात् । [कमललोचनः] लोचनोंके विषैं है शीतलजल जिनके ॥ ७१ ॥

कृष्णः कामी सदाकृष्णः समस्तप्रियकारकः ॥
नन्दो नन्दी महानादी मादी मादनकः किली॥७२॥

[कृष्णः] भक्तोंको अपने अधीन करनेवाले १ शत्रुओंका भेदन करनेवाले २ श्यामवर्णवाले ३. [कामी] नित्य विद्यमान है अप्राकृत भोग जिनके १ इच्छा पूर्ण करनेवाले २ स्वयम् आप अवाप्तसमस्तकाम ३. [सदाकृष्णः] मलिन नहीं है प्रभाव जिनका १ सत्पुरुषोंने अपने हृदयमें जो आकर्षण (स्थापन) किया २. [समस्तप्रियकारकः] ५४० समस्तपुरुषोंके प्रिय करनेवाले. [नन्दः] लोकमें शुभ कर्मोंकी वृद्धि करावनेवाले. [नन्दी] पितृभावसे नंदगोप है विद्यमान जिनके. [महानादी] बडी गंभीर है वेदरूप वाणी जिनकी. [मादी] विद्याधन कीर्ति आदिकरके असत्पुरुषोंको उन्माद करावनेवाले १ भक्तोंको हर्ष करावनेवाले २. [मादनकः] जिसकरके भक्तजन विवश होते हैं सो भक्तिरस कहिये. तिसकी कामना करनेवाले अर्थात् भक्तजन " भक्त्याहमेकया ग्राह्यः । भक्त्या मामभिजानाति " इत्युक्त प्रकारसे भक्तिरसको गानेवाले. [किली] विश्वका रचना संहार पालन इन्होंकरके क्रीडा करनेवाले ॥ ७२॥

मिली हिली गिली गोली गोली गोलालयो गुली ।
गुग्गुली मारकी शाखी वटः पिप्पलकः कृती॥७३॥

१ परिपूर्ण होनेसे जिनको किसी वस्तुकी चाहना नहीं।

[मिली] गोपोंके स्त्रियोंको तथा अपने भक्तोंको आलिंगन करनेमें शील (स्वभाव) है जिनका. [हिली] गोपस्त्रियोंके साथ नर्तन तथा गोपस्त्रियोंके हाव-भाव-कटाक्ष करनेमें है शील (स्वभाव) जिनका. [गिली] गोपियोंके दिये हुए नवनीत (माखन) आदिको भक्षण करनेका है शील (स्वभाव) जिनका १ भक्तदत्त पत्र-पुष्प-फल आदिकोंको ग्रहण करनेका है शील (स्वभाव) जिनका२ " तुलसीदलमात्रेण जलस्य चुलुकेन वा। विक्रीणीते स्वमात्मानं भक्तेभ्यो भक्तवत्सलः ॥" इति स्मरणात् । [गोली]५५० गौओंको ग्रहण करनेवाले गोपबालक वही है क्रीडा (खेलने) के साधन जिनके. [गोलः] गोपाल (गवालियों) के अर्थात् गोपालियोंके वेष धारण करनेवाले. [गोलालयः] गोलोक है आलय (स्थान) जिनका. [गुली] सब आपदोंसे भक्तोंकी रक्षा करनेवाले. [गुग्गुली] भक्तोंके विषैंही है प्रेम जिनका. [मारकी] वेणुवाले. [शाखी] शाखा है विद्यमान जिनके अर्थात् वेदस्वरूप. [वटः] अपनी शक्तिकरके संपूर्ण पुरुषोंको वेष्टन (लपेटन) करनेवाले. [पिप्पलकः] अश्वत्थस्वरूप. [कृती] जिससे संपूर्णवस्तु सिद्ध॥७३॥

म्लेच्छहा कालहर्ता च यशोदायश एव च ।
अच्युतः केशवो विष्णुर्हरिः सत्यो जनार्दनः॥७४॥

[म्लेच्छहा] ५६० म्लेच्छपुरुषोंको मारनेवाले कल्किअवतार. [कालहर्ता] कालके नाशक. [यशोदायशः] यशोदाके

यश (सौभाग्यरूप) [अच्युतः] उत्पत्त्यादिविकाररहित. " शाश्वतं सर्वमच्युतम् " इति श्रुतेः। [केशवः] केश (सूर्यादिसंक्रांतकिरण) है विद्यमान जिनके. " अंशवो ये प्रकाशन्ते मम ते केशसंज्ञिताः । सर्वज्ञाः केशवं ह्यस्मात् मामाहुर्द्विजसत्तमाः ॥ " इति महाभारतात् [विष्णुः] संहारकालमें विश्वको वियुक्त करनेहारे. [हरिः] अपने भक्तोंका संसार दूर करनेवाले. [सत्यः] यथार्थभाषणवाले. " पतेत् द्यौर्हिमवान् शीर्येत् पृथिवी शकलीभवेत् । शुष्येत्तोयनिधिः कृष्णे न मे मोघं वचो भवेत् ॥ " इत्युक्तेः। [जनार्दनः] जन नाम दैत्यों को मारनेवाले १ निःश्रेयसके लिये भक्तजनोंके याचनाके स्थान २ ॥ ७४ ॥

हंसो नारायणो नीलो लीनो भक्तिपरायणः ।
जानकीवल्लभो रामो विरामो विषनाशनः ॥ ७५ ॥

[हंसः] ' मुक्तैर्हन्यते प्राप्यते ' इस व्युत्पत्तिसे मुक्तपुरुषोंसे प्राप्त १ सर्वगत २. [नारायणः] ५७० जिससे जीवसमूहकी प्रवृत्ति अर्थात् सबके प्रवर्तक. [नीलः] संपूर्णोंके प्रेरण करनेवाले १ श्यामवर्णवाले २. [लीनः] ली नाम लीला तिसके इन नाम स्वामी १ अपनेमें संपूर्ण प्रपंचको लीन करनेवाले अर्थात् सर्वाधारक २. [भक्तिपरायणः] जिसके विषै भक्तिहि आश्रितपुरुषोंके प्राप्तिका साधन है अर्थात् भक्तिसेही लभ्य [जानकीवल्लभः] जानकीके प्रिय १ जानकी है प्रि

१ सब जगह व्याप्त । २ जगत्को ।

जिनको २. [रामः] संपूर्णोंके अंतर्यामी. [विरामः] जिससे वेद उपरामको प्राप्त, होरहेहैं अर्थात् जिसके स्वरूपका परिच्छेद करनेको वेद असमर्थ हैं. [विषनाशनः] विष नाम प्राणहर मृत्यु तिसके नाश करनेवाले १ यमुनाजलको विषरहित करनेवाले २. ॥ ७५ ॥

सहभानुर्महाभानुर्वीरभानुर्महोदधिः ।
समुद्रोऽब्धिरकूपारः पारावारः सरित्पतिः ॥ ७६ ॥

[सहभानुः] लक्ष्मीजीकरके सहित प्रकाशवाले. [महाभानुः] सूर्य आदिके प्रकाश करनेवाले. " तमेव भान्तमनुभाति सर्वम् " इति श्रुतेः । " यदादित्यगतं तेजो जगद्भासयतेऽखिलम् । यच्चन्द्रमसि यच्चाग्नौ तत्तेजो विद्धि मामकम् ॥ " इति स्मृतेः। [वीरभानुः] ५८० बलवान् पुरुषोंके विषैं प्रकाश करनेवाले. " यद्यद्विभूतिमत्सत्त्वं श्रीमदूर्जितमेव वा । तत्तदेवावगच्छ त्वं मम तेजोंऽशसंभवम् ॥ " इति वचनात् । [महोदधिः] महद्विभूतिस्वरूप उदक (जल) को धारण करनेवाले. [समुद्रः] ' मोदयति लोकान् इति मुद्रा ' ऐसे व्युत्पत्तिसे मुद्रा नाम लक्ष्मीका है लक्ष्मीके साथ रहनेवाले. [अब्धिः] सागररूप. " सरसामस्मि सागरः " इति स्मरणात् । [अकूपारः] कूर्मावतार. "ॐ नमो भगवतेऽकूपाराय " इति भागवतात् । [पारावारः] व्यापारोंकरके युक्त जगत्का आवरण करनेवाले. [सरित्पतिः] समुद्रांतर्यामी १ श्रीयमुनाके पति २. ॥ ७६ ॥

---

१ भगवान्का स्वरूप इतना है ऐसा कहना ।

गोकुलानन्दकारी च प्रतिज्ञापरिपालकः ।
सदारामः कृपारामो महारामो धनुर्धरः ॥ ७७ ॥

[गोकुलानन्दकारी] गोकुलमें आनंद करनेवाले. [प्रतिज्ञापरिपालकः] अपने संकल्पका परिपालन करनेवाले. [सदारामः] साधुपुरुषोंके विश्रामके स्थान १ सत्पुरुषोंमें है विश्रांति जिनकी २ भक्तोंके हृदयमें रमण है जिनका ३. [कृपारामः] ५९० कृपाकरके भक्तोंमें है रमण जिनका. [महारामः] भक्तपुरुषोंके मनोंका विहारस्थान १ पूज्य पुरुषोंमें चारों ओरसे है रमण जिसका २. [धनुर्धरः] शार्ङ्गधनुषको धारण करनेवाले ॥ ७७ ॥

पर्वतः पर्वताकारो गयो गेयो द्विजप्रियः ।
कमलाश्वतरो रामो रामायणप्रवर्तकः ॥ ७८ ॥

[पर्वतः] पर्व (पूर्णता) वाले १ सबको जाननेवाले २ सब जगह गमन करनेवाले ३. [पर्वताकारः] गोवर्धनरूप [गयः] गायन (गाना) है प्रिय जिनको. "मद्भक्ता यत्र गायन्ति तत्र तिष्ठामि नारद" इति स्मृतेः । [गेयः] गानेको योग्य [द्विजप्रियः] द्विज (ब्राह्मण) है प्रिय जिनको. "विप्राः प्रिया मे सततं राजन्" इत्युक्तेः । [कमलाश्वतरः] कम (कमनीय) है अश्वतर. (उच्चैःश्रवा) जिनको. [रामः] र (कर्मफल देनेवाला) अम (संपूर्णोंको जाननेवाला) दोनों मिलकर कर्मफलको देनेवाले और सर्वज्ञ यह अर्थ भया

[रामायणप्रवर्तकः] ६०० वाल्मीकिद्वारा श्रीरामायणके प्रवर्तक ॥ ७८ ॥

इति श्रीगोपालनामसहस्रस्य षष्ठं शतकम् ॥ ६ ॥

अथ श्रीगोपालनामसहस्रस्य सप्तमं शतकम् ।

द्यौर्दिवो दिवसो दिव्यो भव्यो भाविभयापहः ।
पार्वतीभाग्यसहितो भर्ता लक्ष्मीविलासवान् ॥ ७९ ॥

[द्यौः] आकाशस्वरूप अर्थात् आकाशकी नाई सब जगह व्याप्त. " आकाशवत् सर्वगतश्च नित्यः " इति श्रुतेः । [दिवः] आकाशके रचनेवाले. "तस्माद्वा एतस्मादात्मन आकाशः संभूतः " इति श्रुतेः । [दिवसः] प्रकाशरूप. [दिव्यः] संपूर्ण पुरुषोंके स्तुतियोग्य. [भव्यः] सदा एकरससे रहनेवाले. [भाविभयापहः] भक्तपुरुषोंके भावि होनेवाले संसारभयको दूर करनेवाले. [पार्वतीभाग्यसहितः] पार्वतीके सौभाग्यकरके युक्त रहनेवाले. [भर्ता] भक्तोंके ऋणको धारण करनेवाले अर्थात् तिन्होंके ऋणी. [लक्ष्मीविलासवान्] लक्ष्मीके संग है विलास (क्रीडा) जिनका ॥ ७९ ॥

विलासी साहसी सर्वी गर्वी गर्वितलोचनः ।
मुरारिर्लोकधर्मज्ञो जीवनो जीवनान्तकः ॥ ८० ॥

[विलासी] ६१० गोपियोंके संग विलास करनेका शील

(स्वभाव) जिनका. [साहसी] धृष्टतावाले. [सर्वी] संपूर्ण वस्तुवाले. [गर्वी] मेरेसे उपरांत कोईभी नहीं है ऐसा गर्ववाले. " मत्तः परतरं नान्यत् " इत्युक्तेः । [गर्वितलोचनः] गर्वयुक्तलोचनवाले. [मुरारिः] मुरदैत्यके वैरी. [लोकधर्मज्ञः] वर्ण तथा आश्रम इन्होंके कर्तव्य आचारोंको जनावनेवाले. [जीवनः] संपूर्णलोगोंके प्राण धारण करावनेवाले. [जीवनान्तकः] कालस्वरूप. " कालोऽस्मि लोकक्षयकृत् प्रवृद्धः " इति स्मृतेः ॥ ८० ॥

यमो यमारिर्यमनो यामी यामविघातकः ।
वंशुली पांशुली पांसुः पाण्डुरर्जुनवल्लभः ॥ ८१ ॥

[यमः] धर्म तथा अधर्मके फल देनेसे यमराजस्वरूप. " यमः संयमतामहम् " इति स्मृतेः । [यमारिः] ६२० भक्तोंके यमयातनाको दूर करनेवाले. [यमनः] संपूर्ण कृत्योंसे उपरामको प्राप्त होकर भक्तोंके ताईं अपना आत्मा देनेवाले १ भक्तोंको संसारसे उपरामको प्राप्त करनेवाले २. [यामी] उपरामवाले. [यामविघातकः] भक्तिसे भक्तोंके विषैं उपरतिका नाश करनेवाले १ याम नाम प्रहरोंका सूर्यआदिद्वारा नाश करनेवाले २. [वंशुली] वेणुको धारण करनेवाले १ वंशुला नाम वंशमें होनेवाली रुक्मिणी आदि है विद्यमान जिनके २ [पांशुली] अति सौंदर्ययुक्त विग्रहका दर्शन करवाकर साध्वी स्त्रियोंको पांशुला करनेवाले अर्थात् अपनेमें आसक्त करनेवाले. [पांशुः

१ वैराग्यका

भक्तोंके विरोधियोंका नाश करनेवाले. [पाण्डुः] गोओंको चरावनेके समय धूलिकरके युक्त है अंग जिनका १ 'पण्डयति सर्वं जानाति' इस व्युत्पत्तिसे संपूर्णवस्तुको अशेषविशेषरूपसे जाननेवाले २. [अर्जुनवल्लभः] अर्जुनके प्रिय १ अर्जुन है प्रिय जिनको २. ॥ ८१ ॥

ललिताचन्द्रिकामाली माली मालाम्बुजाश्रयः ।
अम्बुजाक्षो महायक्षो दक्षश्चिन्तामणिः प्रभुः ॥८२॥

[ललिताचन्द्रिकामाली] मनोहर भक्तोंके मनको आनंद करनेवाली है वैजयंती माला जिनकी. [माली] ६३० पत्रपुष्पोंकी बनाई हुई है माला जिनकी १ शोभावाले २. [मालाम्बुजाश्रयः] कमलोंकरके ग्रथित (गुथी) हुई है माला जिनकी. [अम्बुजाक्षः] कमलके तुल्य हैं नयन जिनके १ लक्ष्मीके विषैं हैं नयन जिनके २. [महायक्षः] सबके पूजन योग्य. [दक्षः] विश्वके रचना आदि कर्मको शीघ्र करनेवाले १ दक्षादिद्वारा विश्वकी रचना करावनेवाले २ संहारकालमें प्रजाको डसनेवाले ३. [चिन्तामणिः] भक्तोंके मनोरथ पूर्ण करनेवाले. [प्रभुः] अघटितघटना[1] करनेमें समर्थ ॥ ८२ ॥

मणिर्दिनमणिश्चैव केदारो बदरीश्रयः ।
बदरीवनसंप्रीतो व्यासः सत्यवतीसुतः ॥ ८३ ॥

[मणिः] सबके प्रकाशक १ संपूर्णोंके शिरोभूषण २. [दिनमणिः] दिनके प्रकाशक सूर्यरूप. "सूर्यो यथा सर्वलो-

१ जो न होय सो होना।

कस्य चक्षुर्न लिप्यते चाक्षुषैर्बाह्यदोषः । एकस्तथा सर्वभूतान्तरात्मा न लिप्यते लोकदुःखेन बाह्यः॥" इति श्रुतेः । [केदारः] के (समुद्रजलमें) शंखासुरका दारण (नाश) करनेवाले. [बदरीश्रयः] ६४० बदरिकाश्रमवासी नरनारायणरूप. [बदरीवनसंप्रीतः] चतुर्मुखब्रह्माके ताईं वेदको देनेवाले १ वनमें प्रीतिवाले २. [व्यासः] वेदोंका विभाग करनेवाले १ प्रलयमें सबोंको ग्रहण करनेवाले २ संपूर्णोंके अंतर्यामिस्वरूपसे रहनेवाले ३. [सत्यवतीसुतः] सत्यवतीके पुत्र व्यास. "मुनीनामप्यहं व्यासः" इति स्मृतेः ॥ ८३ ॥

अमरारिनिहन्ता च सुधासिन्धुविधूदयः ।
चन्द्रो रविः शिवः शूली चक्री चैव गदाधरः॥८४॥

[अमरारिनिहन्ता] देवतोंके अरि नाम शत्रु दैत्य तिनके मारनेवाले. [सुधासिन्धुविधूदयः] अमृतसमुद्रमें चंद्रमाकी नाईं उदय है जिनका १ अमृतसमुद्रके रत्न २. [चन्द्रः] जगत्को आनंदित करनेवाले. [रविः] मुक्तपुरुषोंके प्राप्य १ वेदरूपसे कहनेवाले २ सर्वत्र जाननेवाले ३. [शिवः] भक्तोंके दुःखोंको दूर करनेवाले अर्थात् मंगलमूर्ति. [शूली] असुरोंको व्यथा करनेवाले. [चक्री] ६५० लोककी रक्षाके लिये मनसे भी अधिक है गमन जिसका ऐसे सुदर्शनचक्रको धारण करनेवाले. " जलस्वरूपमत्यन्तं जवेनान्तरितानलम् । चक्रस्वरूपं च मनो धत्ते विष्णुः करे स्थितम् " इति वैष्णवोक्तेः । [गदाधरः] कौमोदकी नामक गदाको धारण करनेवाले ॥ ८४ ॥

श्रीकर्ता श्रीपतिः श्रीदः श्रीदेवो देवकीसुतः।
श्रीपतिः पुण्डरीकाक्षः पद्मनाभो जगत्पतिः॥ ८५॥

[श्रीकर्ता] भक्तोंको मोक्षसंपत् देनेवाले. [श्रीपतिः] समुद्रमथनसमय समुद्रसे निकलनेवाली जो लक्ष्मी सब ब्रह्मा आदि देवतोंको छोडकर वरती भई तिस (लक्ष्मी) के पति. [श्रीदः] ब्रह्मादिकोंके ताईं संपत्ति देनेवाले. [श्रीदेवः] श्रीसहित क्रीडा करनेवाले. [देवकीसुतः] 'देवैः कायते गीयते' इस व्युत्पत्तिसे देवकी नाम माया 'सा सूयते प्रेर्यतेऽनेनेति सुतः' प्रेरक अर्थात् मायाके प्रेरक. [श्रीपतिः] श्री (स्वाभाविक भक्तसंपद्रूप शोभा) तिसकी रक्षा करनेवाले. [पुण्डरीकाक्षः] हृत्कमलमें व्याप्त होनेवाले. [पद्मनाभः] हृदयकमलकी नाभि नाम कर्णिका तिसमें रहनेवाले. [जगत्पतिः] ६६० जगत्के पालक॥ ८५॥

वासुदेवोऽप्रमेयात्मा केशवो गरुडध्वजः।
नारायणः परंधाम देवदेवो महेश्वरः॥ ८६॥

[वासुदेवः] अपनी विभूतियोंकरके समस्त विश्वको आच्छादन करनेवाले अर्थात् ढकनेवाले १ संपूर्ण भूतोंमें वास करनेवाला जो हो सो कहिये वासु और अपने भक्तोंके शत्रुओंको जो रुवावे सो कहिये देव दोनों मिलकर वासुदेव यह नाम है. "छादयामि जगत्सर्वं भूत्वा सूर्य इवांशुभिः। सर्वभूताधिवासश्च वासुदेवस्ततः स्मृतः॥ वसनात्सर्वभूतेषु वसुत्वाद्देवयोनिषु। वासुदेवस्ततो ज्ञेयो मुनिभिस्तत्त्वदर्शिभिः॥ सर्वत्रासौ समस्तं च

५

वसत्यत्रेति वै यतः । ततः स वासुदेवोऽसौ विद्वद्भिः परिकीर्तितः ॥ सर्वाणि तत्र भूतानि वसन्ति परमात्मनि । भूतेषु स च सर्वेषु वासुदेवस्ततः स्मृतः ॥" इति वचनकदम्बात् । २ वासु (ब्रह्मांड) को प्रकाशित करनेवाले ३ ब्रह्मांडमें क्रीडा करनेवाले ४. [अप्रमेयात्मा] अप्रमेय (परिच्छेदरहित) है विग्रह तथा स्वरूप जिनका. [केशवः] क (ब्रह्मा) ई (रमा) ईश (रुद्र) ये हैं वंशमें जिनके १ केशिदैत्यको मारनेवाले २ "यस्मात्त्वयैष दुष्टात्मा हतः केशी जनार्दन । तस्मात्केशवनाम्ना त्वं लोके ज्ञेयो भविष्यसि ॥" इति वैष्णवोक्तेः । [गरुडध्वजः] 'ग्रसत्यज्ञानम्' इस व्युत्पत्तिसे गरुड नाम ज्ञान सोही है ध्वज (मोक्षमार्गको जनानेवाला) जिनका अर्थात् ज्ञानगम्य. [नारायणः] जीवसमूहको साक्षात् देखनेवाले. [परंधाम] परम उत्कृष्ट प्रकाशस्वरूप १ समस्त जगतके आधार २ " परं ब्रह्म परं ज्योतिः परं धाम " इति श्रुतेः । [देवदेवः] देवतोंके स्तुतिके स्थान. [महेश्वरः] ब्रह्मादिक देवतोंके प्रभु ॥ ८६ ॥

चक्रपाणिः कलापूर्णो वेदवेद्यो दयानिधिः ।
भगवान्सर्वभूतेशो गोपालः सर्वपालकः ॥ ८७ ॥

[चक्रपाणिः] हस्तमें है सुदर्शनचक्र जिनके. [कलापूर्णः]
६७० सोलह कलोंकरके पूर्ण. [वेदवेद्यः] वेदोंकरके वेद्य (जाने जावे). [दयानिधिः] दयाके समुद्र. [भगवान्] श्रीयुक्त. [सर्वभूतेशः] संपूर्ण प्राणियोंके नियंता (मालक).

१ परमात्माका स्वरूप कोई प्रमाणका गोचर नहीं । २ आधीन ।

[गोपालः] अपनी किरणोंकरके जगत्का पालन करनेवाले. "अग्नौ प्रास्ताहुतिः सम्यगादित्यमुपतिष्ठते । आदित्याज्जायते वृष्टिर्वृष्टेरन्नं ततः प्रजाः ॥ " इति श्रुतेः । [सर्वपालकः] समस्त पुरुषोंका पित्रादिरूपसे रक्षण करनेवाले ॥ ८७ ॥

अनन्तो निर्गुणो नित्यो निर्विकल्पो निरञ्जनः ।
निराधारो निराकारो निराभासो निराश्रयः ॥ ८८ ॥

[अनन्तः] देश, काल, गुण, स्वरूप इन्होंसे परिच्छेदरहित अर्थात् जिनके गुणोंका परिच्छेद नहीं है. " गन्धर्वाप्सरसः सिद्धाः किन्नरोरगचारणाः । नान्तं गुणानां गच्छन्ति तेनानन्तोऽयमव्ययः ॥ " इति वैष्णवोक्तेः । [निर्गुणः] प्राकृतगुणोंकरके रहित. " सत्त्वादयो न सन्तीशे यत्र च प्राकृता गुणाः " इति वैष्णवोक्तेः । " योसौ निर्गुण इत्युक्तः शास्त्रे च जगदीश्वरः । प्राकृतैर्हेयसंयुक्तैर्गुणैर्हीनत्वमुच्यते ॥ " इति पाद्मोक्तेश्च । [नित्यः] नित्य (जिनका नाश नहीं होवे) है बुद्धि, संकल्प, यत्न, जिसके. [निर्विकल्पः] १८० भेदरहित. [निरञ्जनः] कर्म और कर्मसंबंधसे होनेवाले जो देहइंद्रियरूप प्रकृतिसंबंध सोही कहिये अंजन तिससे रहित अर्थात् अप्राकृत दिव्यमंगलविग्रहवाले. [निराधारः] नहीं है अन्य कोई आधार जिनका. [निराकारः] अप्राकृत आकारवाले. [निराभासः] स्वयंप्रकाशस्वरूप. [निराश्रयः] नहीं है अन्यकी अपेक्षा जिनको ॥ ८८ ॥

---

१ पृथक् सिद्ध भेद ।

पुरुषः प्रणवातीतो मुकुन्दः परमेश्वरः ।
क्षणावनिः सार्वभौमो वैकुण्ठो भक्तवत्सलः ॥ ८९ ॥

[पुरुषः] संपूर्णोंके शरीरोंमें अंतर्यामिस्वरूपसे स्थित होनेवाले १ बहुतफल देनेवाले २ भवनोंको संहारकालमें नाशको प्राप्त करनेवाले ३. [प्रणवातीतः] प्रणव (ओंकार) करके प्रतिपादित. " ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म, एकाक्षरं परं ब्रह्म " इत्यादि श्रुतेः । [मुकुन्दः] भक्तोंको मुक्ति तथा भक्तिरस देनेवाले. [परमेश्वरः] पर (उत्कृष्ट) मा (लक्ष्मी) के स्वामी. [क्षणावनिः] ६९० उत्सवके आधार १ उत्सवके रक्षक २ भक्तोंके उत्सवको वधावनेवाले ३ अभक्तपुरुषोंके उत्सवका नाश करनेवाले ४ धर्मग्लानि आदि समयमें प्रकाश होनेवाले ५ उत्सवप्रिय ६. [सार्वभौमः] संपूर्ण पृथ्वीके ईश्वर अर्थात् चक्रवर्ती राजा. [वैकुण्ठः] नित्यमुक्तपुरुषोंके नियंता (मालक) १ ज्ञान देनेवाले २ नहीं है नाश जिसका ऐसा जो स्थानविशेष अर्थात् वैकुंठलोक तिसमें वास करनेवाले ३. [भक्तवत्सलः] भक्त जो है सोही वत्स अर्थात् अपने पोष्य तिन्होंको माताकी नाईं ग्रहण करनेवाले अर्थात् भक्तोंके दोषोंको भोग्यरूप माननेवाले ॥ ८९ ॥

विष्णुर्दामोदरः कृष्णो माधवो मथुरापतिः ।
देवकीगर्भसंभूतो यशोदावत्सलो—

[विष्णुः] पृथ्वी आकाशमें व्याप्त होकर स्थित है अधिक कांति जिनकी. " व्याप्य मे रोदसी पार्थ कान्तिरभ्यधिका

स्थिता । क्रमणाद्वाप्यहं पार्थ विष्णुरित्यभिधीयते " इति भारतोक्तेः । [दामोदरः] यशोदासे दामकरके उदरमें बद्ध अर्थात् बंधे हुए. " तयोर्मध्यगतो बद्धो दाम्ना गाढं तथोदरे । ततो हि दामोदरतां स ययौ दामबन्धनात् ॥" इति ब्रह्मपुराणात् । १ लोकके आश्रय. " दामानि लोका इत्युक्ताः सन्ति यस्योदरान्तरे । तेन दामोदरः प्रोक्तः श्रीधरस्तत्समाश्रितः ॥ " इति व्यासोक्तेः । २ [कृष्णः] व्यासस्वरूप. "कृष्णद्वैपायनं व्यासं विद्धि नारायणं स्वयम् ।" इत्याद्युक्तेः । [माधवः] मा (विद्या) के पति. " मा विद्या च हरेः प्रोक्ता तस्या ईशो यतो भवान् । तस्मान्माधवनामासि धवः स्वामीति शब्दितः ॥" इति हरिवंशोक्तेः । राधाके पति २ [मथुरापतिः] मथुरापुरीके पति. [देवकीगर्भसम्भूतः] देवकीके गर्भसे उत्पन्न होनेवाले. [यशोदावत्सलः] ७०० यशोदा है माताकी नाई अतिप्रिय जिनको.

इति श्रीगोपालनामसहस्रस्य सप्तमं शतकम् ॥ ७ ॥

अथ श्रीगोपालनामसहस्रस्य

अष्टमं शतकम् ।

हरिः ॥ ९० ॥

[हरिः] संहारकालमें विश्वको अपनेमें लीन करनेवाले १ सृष्टिकालमें दुष्टपुरुषोंका नाश करनेवाले २ ॥ ९० ॥

शिवः संकर्षणः शम्भुर्भूतनाथो दिवस्पतिः।
अव्ययः सर्वधर्मज्ञो निर्मलो निरुपद्रवः ॥ ९१ ॥

[शिवः] जिसमें संपूर्ण जगत् सुखपूर्वक स्थित है १ जो अपनेमें संपूर्ण जगत्को शयन करवावे सो कहिये शिव २. [संकर्षणः] संहारकालमें प्रजाका आकर्षण करनेवाले. [शंभुः] लोगोंके सुखके वास्ते प्रकाश करनेवाले १ सुख देने तथा दिवावनेवाले २. [भूतनाथः] प्राणियोंके स्वामी १ मांगनेवालोंकी याच्ञा (मांगना) पूर्ण करनेवाले २. [दिवस्पतिः] स्वर्गके पति. [अव्ययः] जो नाशआदि विकारोंको प्राप्त नहीं होवे. [सर्वधर्मज्ञः] संपूर्ण लौकिक, वैदिक धर्मोंको जाननेवाले तथा जनावनेवाले. [निर्मलः] गणिका-गज-गृध्र आदिकोंको निर्मल करनेवाले अर्थात् पतितपावन. [निरुपद्रवः] ७१० दूर है दुष्टकृत्य जिन्होंसे १ अपने भक्तोंको उपद्रवशून्य करनेवाले ॥ ९१ ॥

निर्वाणनायको नित्यो नीलजीमूतसन्निभः।
कलाक्षयश्च सर्वज्ञः कमलारूपतत्परः ॥ ९२ ॥

[निर्वाणनायकः] मोक्षको देनेवाले. [नित्यः] सदा स्थिर रहनेवाले १ मूर्खजनोंका त्याग करनेवाले २. [नीलजीमूतसन्निभः] मेघश्याम. [कलाक्षयः] निवासभूत १ समुद्र है निवासस्थान जिनका २. [सर्वज्ञः] संपूर्ण ज्ञानयोगको जनावनेवाले. [कमलारूपतत्परः] लक्ष्मीके रूपमें दत्तचित्त अर्थात् चित्त देनेवाले ॥ ९२ ॥

हृषीकेशः पीतवासा वसुदेवप्रियात्मजः।
नन्दगोपकुमारार्यो नवनीताशनो विभुः ॥ ९३ ॥

[हृषीकेशः] इंद्रियोंके नियंता. [पीतवासाः] पीत (पीला) है वस्त्र जिनका. [वसुदेवप्रियात्मजः] वसुदेवके प्रिय नाम प्रीतिके उत्पादक पुत्र १ वसुदेवकी प्रिया देवकीके पुत्र २. [नन्दगोपकुमारार्यः] ७२० नंदगोपके श्रेष्ठकुमार १ गोपकुमारोंके स्वामी २. [नवनीताशनः] नवनीत (माखन) को खानेवाले. [विभुः] संपूर्ण जगत्में व्याप्त १ नाना प्रकारके स्वरूपसे होनेवाले २ जगत्के पालन करनेवाले ३ विशेषरूपसे जगत्के प्रकाश करनेवाले ॥ ९३ ॥

पुराणपुरुषः श्रेष्ठः शङ्खपाणिः सुविक्रमः।
अनिरुद्धश्चक्ररथः शार्ङ्गपाणिश्चतुर्भुजः ॥ ९४ ॥

[पुराणपुरुषः] 'भक्तानां पुरीणि बहूनि पापानि स्यतीति' इस व्युत्पत्तिसे भक्तोंके पापोंको दूर करनेवाले सबसे जूने. [श्रेष्ठः] सबसे उत्तम. [शंखपाणिः] पाणि (हस्त) में है शंख जिनके अर्थात् शंखधारी. [सुविक्रमः] शोभन है पराक्रम जिनका. [अनिरुद्धः] जो किसीसेभी नहीं रुके. [चक्ररथः] चक्रको चलावनेवाले १ कालचक्र, जगच्चक्र, युगचक्र इन्होंकरके क्रीडा करनेवाले २. [शार्ङ्गपाणिः] शार्ङ्गनामक धनुष है हस्तमें जिनके. [चतुर्भुजः] ७३० चार भुजोंवाले १ धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन्होंके पालक अर्थात् तिस तिस अधिकारि-

योंको तत्तत् वांच्छित वस्तु देनेवाले २ स्वेदज, उद्भिज्ज, अंडज, जरायुज इन्होंको कालरूपसे भक्षण करनेवाले ॥ ९४ ॥

गदाधरः सुरार्तिघ्नो गोविन्दो नन्दकायुधः ।
वृन्दावनचरः शौरिर्वेणुवाद्यविशारदः ॥ ९५ ॥

[गदाधरः] भक्तोंकी रक्षाके लिये तथा असुरोंके नाशके लिये कौमोदकीनामक गदाको धारण करनेवाले. [सुरार्तिघ्नः] देवतोंकी पीडा दूर करनेवाले. [गोविन्दः] वेदवाणियोंकरके सज्जनोंके ताईं अपने स्वरूपको जनावनेवाले. [नन्दकायुधः] नंदकनामक आयुध है जिनका. [वृन्दावनचरः] वृंदावनमें विहार करनेवाले. [शौरिः] शूरकुलमें उत्पन्न होनेवाले १ असज्जनपुरुषोंको गर्वयुक्त करनेवाले २ शूरका पुत्र वसुदेव तिसको अपने अवतारसे संताप करावनेवाले. [वेणुवाद्यविशारदः] वंशीके बजानेमें कुशल ॥ ९५ ॥

तृणावर्तान्तको भीमसाहसो बहुविक्रमः ।
शकटासुरसंहारी बकासुरविनाशनः ॥ ९६ ॥

[तृणावर्तान्तकः] तृणावर्तका नाश करनेवाले. [भीमसाहसः] इतर पुरुषोंको स्पृहणीय[1] और इंद्र आदिको भय करनेवाला है साहस (बलात्कारसे गोवर्द्धनोद्धारणादि कार्य) जिनका. [बहुविक्रमः] ७४० सबसे अधिक है पराक्रम जिनका. [शकटासुरसंहारी] शकटासुरका संहार करनेवाले. [बकासुरविनाशनः] बकासुरका नाश करनेवाले ॥ ९६ ॥

१ इच्छाके योग्य ।

धेनुकासुरसंहारी पूतनारिर्नृकेसरी ।
पितामहो गुरुः साक्षी प्रत्यगात्मा सदाशिवः॥९७॥

[धेनुकासुरसंहारी] धेनुकासुरको मारनेवाले. [पूतनारिः] पूतनाके वैरी. [नृकेसरी] पुरुषोंमें श्रेष्ठ. [पितामहः] पित्रादिकोंकोभी पूज्य. [गुरुः] अपने शरणागतपुरुषोंके अज्ञानरूपी अंधकारको दूर करनेवाले. "गुशब्दस्त्वन्धकारः स्याद्रुशब्दस्तन्निरोधकृत् । अन्धकारविरोधित्वाद्गुरुरित्यभिधीयते॥" इति स्मृतेः। [साक्षी] संपूर्ण पदार्थोंको साक्षात् देखनेवाले. [प्रत्यगात्मा] जीवके अंतर्यामी १ 'प्रतिशरीरमञ्चति सर्वं जानाति' इस व्युत्पत्तिसे शरीर २ के प्रति संपूर्णोंको जाननेवाले आत्मा (व्यापकस्वरूप) [सदाशिवः] ७५० संपूर्ण देशकालमें भक्तोंका जिससे मंगल होता है अर्थात् भक्तोंके मंगल करनेवाले ॥ ९७ ॥

अप्रमेयः प्रभुः प्राज्ञोऽप्रतर्क्यः स्वप्नवर्द्धनः ।
धन्यो मान्यो भवो भावो धीरः शान्तो जगद्गुरुः ९८

[अप्रमेयः] जो किसीसेभी नहीं मपे १ सकल प्रमाणोंका अगोचर २. [प्रभुः] सबसे उत्कृष्ट होकर रहनेवाले. [प्राज्ञः] अप्रतिहत है आज्ञा जिनकी. [अप्रतर्क्यः] तर्कका अगोचर अर्थात् जिसके स्वरूपविचारमें तर्क नहीं चलता. [स्वप्नवर्द्धनः] स्वप्नोंकी वृद्धि करावनेवाले. [धन्यः] स्वयं कृतार्थ अर्थात् कृतकृत्य. [मान्यः] संपूर्ण ब्रह्मादिदेवतोंके पूजनीय. [भवः] जिससे संपूर्ण जगत् उत्पन्न होताहै. [भावः] सत्तास्वरूप. [धीरः] ७६० बुद्धिप्रेरक.

[शान्तः] शांतिवाले अर्थात् सहनशील. [जगद्गुरुः] सबलोगोंके पूजनीय ॥ ९८ ॥

अन्तर्यामीश्वरो दिव्यो दैवज्ञो देवसंस्तुतः ।
क्षीराब्धिशयनो धाता लक्ष्मीवाँल्लक्ष्मणाग्रजः॥९९॥

[अन्तर्यामी] सबके भीतर बैठे हुए सबका नियमन करनेवाले. [ईश्वरः] अन्यथा करनेको तथा सुलटा करनेको समर्थ १ षडैश्वर्ययुक्त २. [दिव्यः] अप्राकृत है जन्मकर्म जिनके " जन्मकर्म च मे दिव्यमेवं यो वेत्ति तत्त्वतः " इति स्मृतेः । [दैवज्ञः] दैव (अदृष्ट) को जाननेवाले. [देवसंस्तुतः] देवतोंके भले प्रकारसे स्तुतिके विषय. [क्षीराब्धिशयनः] क्षीरसमुद्रमें सोनेवाले. [धाता] शेषरूपसे पृथ्वीको धारण करनेवाले १ अनेकरूप धारण कर विश्वका पोषण करनेवाले २ [लक्ष्मीवान्] ७७० वक्षःस्थलमें विद्यमान है लक्ष्मी जिनके. [लक्ष्मणाग्रजः] श्रीरघुनाथस्वरूपसे श्रीलक्ष्मणजीसे प्रथम अवतार लेनेवाले ॥ ९९ ॥

धात्रीपतिरमेयात्मा चन्द्रशेखरपूजितः ।
लोकसाक्षी जगच्चक्षुः पुण्यचारित्रकीर्तनः॥ १०० ॥

[धात्रीपतिः] वसुमतिके पति. [अमेयात्मा] नहीं परिमाण करनेमें आता है आत्मस्वरूप जिनका. [चन्द्रशेखरपूजितः] महादेवसे पूजित. [लोकसाक्षी] लोकोंके शुभद्रष्टा अर्थात् शुभ करनेवाले. [जगच्चक्षुः] जगत्को नेत्रकी नाईं अत्यंतप्रिय. [पुण्यचारित्रकीर्तनः] पवित्र है चरित्रकीर्तन जिनका॥ १००॥

कोटिमन्मथसौन्दर्यो जगन्मोहनविग्रहः ।
मन्दस्मिततनो गोपगोपिकापरिवेष्टितः ॥ १०१ ॥

[कोटिन्मथसौन्दर्यः] असंख्यकामदेवके समान है सौंदर्य जिनका. [जगन्मोहनविग्रहः] जगत्को मोहन करनेवाला है दिव्यमंगलविग्रह (देह) जिनका. [मन्दस्मिततनः] ७८० मंद मंद मुसकानसे स्वल्प हँसनेको विस्तार करनेवाले. [गोपगोपिकापरिवेष्टितः] गोप (जीव) गोपिका (प्रकृति) इन्होंकरके चारों तरफसे परिवारे हुए जीव तथा प्रकृति ये हैं विभूति जिनकी ॥ १०१ ॥

फुल्लारविन्दनयनश्चाणूरान्ध्रनिषूदनः ।
इन्दीवरदलश्यामो बर्हिबर्हावतंसकः ॥ १०२ ॥

[फुल्लारविन्दनयनः] फूले हुए कमलकी तुल्य है नेत्र जिनके. [चाणूरान्ध्रनिषूदनः] चाणूर नामक मल्लको तथा आन्ध्रदेशमें होनेवाले मुष्टिकको मारनेवाले. [इन्दीवरदलश्यामः] नीलकमलके दलकी नाईं श्यामवर्णवाले. [बर्हिबर्हावतंसकः] मयूरपक्षोंका है शिरोभूषण जिनका ॥ १०२ ॥

मुरलीनिनदाह्लादो दिव्यमाल्याम्बरावृतः ।
सुकपालयुगः सुभ्रूयुगलः सुललाटकः ॥ १०३ ॥

[मुरलीनिनदाह्लादः] वंशीके शब्दकरके अत्यंत है हर्ष जिनको. [दिव्यमाल्याम्बरावृतः] अप्राकृत माल्य (शिरपर

धारण करनेकी पुष्पमाला) और अंवर (वस्त्र) इन्होंकरके आवृत (वेष्टित). [सुकपोलयुगः] सुंदर है कपोलयुग जिनके. [सुभ्रूयुगलः] सुंदर है भ्रुकुटियोंका युगल (जोडा) जिनका. [सुललाटकः] ७९० सुंदर है ललाट (तिलकस्थान) जिनका ॥ १०३ ॥

कम्बुग्रीवो विशालाक्षो लक्ष्मीवाञ्छुभलक्षणः ।
पीनवक्षाश्चतुर्बाहुश्चतुर्मूर्तिस्त्रिविक्रमः ॥ १०४ ॥

[कम्बुग्रीवः] शंखकी नाईं तीन वलियोंकरके युक्त है ग्रीवा (नाड) जिनकी. [विशालाक्षः] विशाल (विस्तीर्ण) है नयन जिनके. [लक्ष्मीवान्] लक्ष्मीके पति. [शुभलक्षणः] शुभ है करचरणादि चिह्न जिनके. [पीनवक्षाः] पुष्ट है वक्षः-स्थल जिनका. " कक्षा कुक्षिश्च वक्षश्च कर्णस्कन्धललाटकम् । षडुन्नतं भवेद्यस्य राज्यं तस्य विनिर्दिशेत् ॥ " इत्युक्तेः । [चतुर्बाहुः] चार है बाहु (भुजा) जिनके. [चतुर्मूर्तिः] राम, कृष्ण, प्रद्युम्न, अनिरुद्ध ये हैं मूर्ति जिनकी. [त्रिविक्रमः] तीन है पादविक्षेप (तीन पैंडसे भूमिका मापना) जिनका १ त्रिलोकीको नापनेवाले २ " त्रीणि पदानि विक्रम " इति श्रुतेः । " त्रिरित्येव त्रयो लोकाः कीर्तिता मुनिसत्तमैः । क्रमति तांस्तथा सर्वांस्त्रिविक्रम उदाहृतः ॥" इति हरिवंशोक्तेः । ३ तीनों लोकमें है पराक्रम जिनका ४ ॥ १०४ ॥

कलङ्करहितः शुद्धो—

[कलङ्करहितः] अच्युतवीर्य होनेसे कलंकहीन. " पत्न्यस्तु

षोडश सहस्रमनङ्गबाणैर्यस्येन्द्रियं विमथितुं कुहकैर्न शेकुः" इति भागवतात्। [शुद्धः] ८०० निर्विकार.

इति श्रीगोपालनामसहस्रस्य अष्टमं शतकं संपूर्णम् ॥ ८ ॥

अथ श्रीगोपालनामसहस्रस्य
नवमं शतकम्।

दुष्टशत्रुनिबर्हणः।
किरीटकुण्डलधरः कटकाङ्गदमण्डितः ॥ १०५ ॥

[दुष्टशत्रुनिबर्हणः] दुष्ट (गो, विप्र, देवता इन्होंके वैरी) और शत्रु (रावणादिक) इन्होंके नाशक. [किरीटकुण्डलधरः] मुकुट कुंडल धारण करनेवाले. [कटकाङ्गदभूषितः] कटक (रत्नजडित कडा) अंगद (बाजुबंद) इन्होंकरके भूषित ॥ १०५ ॥

मुद्रिकाभरणोपेतः कटिसूत्रविराजितः।
मञ्जीररञ्जितपदः सर्वाभरणभूषितः ॥ १०६ ॥

[मुद्रिकाभरणोपेतः] मुद्रिकाभरण (अँगूठी) करके युक्त. [कटिसूत्रविराजितः] सुवर्णमय कटिसूत्रकरके शोभित. [मञ्जीररञ्जितपदः] पादभूषणोंकरके राग (लाली) युक्त है चरण जिनके. [सर्वाभरणभूषितः] उक्त भूषणोंसे और अतिरिक्त नाना प्रकारके भूषणोंसे अलंकृत ॥ १०६ ॥

विन्यस्तपादयुगलो दिव्यमङ्गलविग्रहः ।
गोपिकानयनानन्दः पूर्णचन्द्रनिभाननः ॥ १०७ ॥

[विन्यस्तपादयुगलः] रासमें नृत्ययुक्त है चरणयुगल जिनका अर्थात् आश्रितपुरुषोंके परवश हुए रासमंडलमें नाचनेवाले. [दिव्यमङ्गलविग्रहः] अप्राकृत है मंगलरूप विग्रह जिनका. [गोपिकानयनानन्दः] ८१० गोपियोंके नयनोंको आनंद देनेवाले. [पूर्णचन्द्रनिभाननः] पूर्णमासीके चंद्रकी नाई प्रकाशित है मुखारविंद जिनका ॥ १०७ ॥

समस्तजगदानन्दः सुन्दरो लोकनन्दनः ।
यमुनातीरसंचारी राधामन्मथवैभवः ॥ १०८ ॥

[समस्तजगदानन्दः] समस्तजगत्को आनंद देनेवाले. [सुन्दरः] सुंदर वेशवाले. [लोकनन्दनः] अपनी कृपासे लोगोंको समृद्धियुक्त करनेवाले. [यमुनातीरसञ्चारी] यमुनाके तीरविषै भले प्रकार विहार करनेका शील (स्वभाव) जिनका. [राधामन्मथवैभवः] राधाके अर्थ विद्यमान है कामसंपत्ति जिनकी ॥ १०८ ॥

गोपनारीप्रियो दान्तो गोपीवस्त्रापहारकः ।
शृङ्गारमूर्तिः श्रीधामा तारको मूलकारणः ॥ १०९ ॥

[गोपनारीप्रियः] गोपस्त्रियोंके प्रीतिके जनक. [दान्तः] जितेंद्रिय नाम इंद्रियोंको जीतनेवाले. [गोपीवस्त्रापहारकः] गोपियोंके वस्त्रनको चोरनेवाले. [शृङ्गारमूर्तिः] ८२० शृंगारके स्वयं (आप) मूर्ति. (श्रीधामा] शोभाके धाम (गृह). [तारकः]

संसारसे भक्तोंको पार करनेवाले. "क्लीमोङ्काररूपः यः एतां तार-ब्रह्मणो नित्यमधीते स पाप्मानं तरति स मृत्युं तरति स भ्रूणहत्यां तरति स संसारं तरति" इति श्रुतेः। [मूलकारणः] संपूर्ण जगत्के मूलकारण ॥ १०९ ॥

सृष्टिसंरक्षणोपायः क्रूरासुरविभञ्जनः।
नरकासुरसंहारी मुरारिर्वैरिमर्दनः ॥ ११० ॥

[सृष्टिसंरक्षणोपायः] सृष्टिमें भक्तोंके रक्षणके उपाय. [क्रूरासुरविभञ्जनः] प्रह्लाद बलि भिन्न क्रूर असुरोंके भंजन (नाश) करनेवाले. [नरकासुरसंहारी] नरकासुरके संहार करनेवाले. [मुरारिः] मुर (भक्तक्लेशविशेष) के अरि (शत्रु). [वैरिमर्दनः] भक्तोंके वैरि जो काम, क्रोध आदि तिन्होंके नाश करनेवाले ॥ ११० ॥

आदितेयप्रियो दैत्यभीकरो यदुशेखरः।
जरासन्धकुलध्वंसी कंसारातिः सुविक्रमः ॥ १११ ॥

[आदितेयप्रियः] देवताओंके प्रिय. [दैत्यभीकरः] ८३० दैत्योंको भय करनेवाले. [यदुशेखरः] सब यादवोंके भूषणरूप. [जरासन्धकुलध्वंसी] जरासंधके कुलको नाश करनेवाले १ जरासंध नाम देहोंका कुल नाम समूह तिनके नाशक २. [कंसारातिः] देवताओंके सुखको नाश करनेवाला कंस तिसके अराति (शत्रु). [सुविक्रमः] अत्यंत है सुंदर प्रताप जिनका ॥ १११ ॥

पुण्यश्लोकः कीर्तनीयो यादवेन्द्रो जगन्नुतः।
रुक्मिणीरमणः सत्यभामाजाम्बवतीप्रियः ॥११२॥

[पुण्यश्लोकः] पवित्र है यश जिनका. "जगज्जन्मपलध्वंसिश्रवणस्मृतिकीर्तनाः । मलमूत्रादिरहिताः पुण्यश्लोका इति स्मृताः॥" इत्युक्तेः। [कीर्तनीयः] स्तुतियोग्य. [यादवेन्द्रः] यादवोंके स्वामी. [जगन्नुतः] जगत्में संपूर्णोंसे स्तुत. [रुक्मिणीरमणः] रुक्मिणीके संग रमण करनेवाले. [सत्यभामाजाम्बवतीप्रियः] ८४० सत्यभामा और जांबवती इन्होंपर प्रीति करनेवाले ॥ ११२ ॥

मित्रविन्दानाग्नजितीलक्ष्मणासमुपासितः ।
सुधाकरकुलेजातोऽनन्तप्रबलविक्रमः ॥ ११३ ॥

[मित्रविन्दानाग्नजितीलक्ष्मणासमुपासितः] मित्रविंदा, नाग्नजिती, लक्ष्मणा इन्होंसे भले प्रकारसे उपासनाके विषय. [सुधाकरकुलेजातः] चंद्रकुलमें प्रादुर्भूत होनेवाले. [अनन्तप्रबलविक्रमः] अनंत नाम असीम (अवधिरहित) है पापनाशनसामर्थ्य निरतिशय प्रताप जिनका. "नाम्नोऽस्ति यावती शक्तिः पापनिर्हरणे हरेः । तावत्कर्तुं न शक्नोति पातकं पातकी नरः ॥ हत्यायुतं पानसहस्रमग्रं गुर्वङ्गनाकोटिनिषेवणं च। स्तेयान्यसंख्यानि हरेः प्रियेण गोविन्दनाम्ना निहतानि मन्ये ॥" इति स्मृतेः ॥११३॥

सर्वसौभाग्यसंपन्नो द्वारकापट्टने स्थितः ।
भद्रासूर्यसुतानाथो लीलामानुषविग्रहः ॥ ११४ ॥

[सर्वसौभाग्यसम्पन्नः] पुत्र, वित्त, आदियोंसे संपन्न नाम युक्त. [द्वारकापट्टने स्थितः] श्रीद्वारकाके प्रासाद (हर्म्य मेहेल) में स्थित. [भद्रासूर्यसुतानाथः] लक्ष्मणा और यमुना इन्होंके

स्वामी. [लीलामानुषविग्रहः] लीलाकरके अथवा लीलाके अर्थ मानुषदेहको धारण करनेवाले ॥ ११४ ॥

सहस्रषोडशस्त्रीशो भोगमोक्षैकदायकः ।
वेदान्तवेद्यः संवेद्यो वैद्यो ब्रह्माण्डनायकः ॥ ११५ ॥

[सहस्रषोडशस्त्रीशः] सोलह हजार स्त्रियोंके पति. [भोगमोक्षैकदायकः] भोग और मोक्ष (संसारसे निवृत्ति) के मुख्यदाता. [वेदान्तवेद्यः] ८५० वेदान्तशास्त्रसे जो जानेजाय. [संवेद्यः] मोक्षार्थिपुरुषोंने जाननेको योग्य. [वैद्यः] मुक्तप्राप्य १ संसाररोगचिकित्सक होनेसे धन्वन्तरिरूप २ [ब्रह्माण्डनायकः] ब्रह्मांडके नायक ॥ ११५ ॥

गोवर्द्धनधरो नाथः सर्वजीवदयाकरः ।
मूर्तिमान्सर्वभूतात्मा आर्तत्राणपरायणः ॥ ११६ ॥

[गोवर्द्धनधरः] गोवर्द्धनपर्वतको व्रजवासियोंके रक्षाकेलिये धारण करनेवाले. [नाथः] लोकोंके याचनाके स्थान १ दुष्टजनोंको संताप देनेवाले २ [सर्वजीवदयाकरः] संपूर्णजीवोंके ऊपर दया करनेवाले. [मूर्तिमान्] ब्रह्मादिकदेवतोंसे उत्तम है मूर्ति जिनकी. [सर्वभूतात्मा] संपूर्ण भूतोंके अंतर्यामी. [आर्तत्राणपरायणः] आर्त (गजराज द्रौपदी प्रभृतियों) के रक्षा करनेमें तत्पर ॥ ११६ ॥

सर्वज्ञः सर्वसुलभः सर्वशास्त्रविशारदः ।
षड्गुणैश्वर्यसंपन्नः पूर्णकामो धुरंधरः ॥ ११७ ॥

---

१ चराचरके ।

[सर्वज्ञः] ८६० संपूर्णपुरुषोंकूं वेदका तात्पर्य व्यासादि-द्वारा जनावनेवाले. [सर्वसुलभः] समस्तभक्तोंने सुखसे लभ्य. [सर्वशास्त्रविशारदः] संपूर्णशास्त्रोंमें निपुण. [षड्गुणैश्वर्यसम्पन्नः] संध्यादि गुण और अणिमादिक ऐश्वर्य इन्होंसे युक्त. [पूर्णकामः] परमानंदस्वरूप होनेसे पूर्ण सब मनोरथ जिनके १ भक्तोंके पूर्णकाम करनेवाले २ [धुरंधरः] संपूर्णजगत्के रक्षाभारको धारण करनेवाले ॥ ११७ ॥

महानुभावः कैवल्यनायको लोकनायकः ।
आदिमध्यान्तरहितः शुद्धसात्त्विकविग्रहः ॥११८॥

[महानुभावः] श्लाघनीय है अनुभाव जिनका अर्थात् पूजनीय गुणवाले. [कैवल्यनायकः] मोक्षके नायक १ क नाम जल तिसकेविषैं विद्यमान है बल जिन्होंका ऐसे जो मंडूक नाम मिंडकआदि जीव जंतु तिन्होंके नायक अर्थात् मत्स्यरूपी. [लोकनायकः] लोकके प्रभु. [आदिमध्यान्तरहितः] आदि, मध्य, अंत इन्होंकरके रहित अर्थात् सदा एकरूपसे रहनेवाले. [शुद्धसात्त्विकविग्रहः] ८७० निर्विकार है सात्त्विकविग्रह (देह) जिनका ॥ ११८ ॥

असमानः समस्तात्मा शरणागतवत्सलः ।
उत्पत्तिस्थितिसंहारकारणं सर्वकारणम् ॥ ११९ ॥

[असमानः] जो किसीकेभी समान नहीं. "न त्वत्सम-

१ मिलनेके योग्य । २ संधि, विग्रह, यान, आसन, द्वैध, आश्रय।
३ अणिमा महिमा चैव गरिमा लघिमा तथा ।
प्राप्तिः प्राकाम्यमीशित्वं वशित्वं चाष्टसिद्धयः ॥

श्चाभ्यधिकश्च दृश्यते" "न त्वत्समोऽस्त्यभ्यधिकः कुतोऽन्यः" इति श्रुतिस्मृतिभ्याम् । [समस्तात्मा] चराचरके अंतर्यामी. [शरणागतवत्सलः] शरणागतपुरुषोंके रक्षक. [उत्पत्तिस्थितिसंहारकारणम्] विश्वकी उत्पत्ति, स्थिति, संहार इन्होंके कारण. [सर्वकारणम्] संपूर्णजगत्के कारण जो ब्रह्मादिक देवता तिनकेभी कारण ॥ ११९ ॥

गम्भीरः सर्वभावज्ञः सच्चिदानन्दविग्रहः ।
विष्वक्सेनः सत्यसंधः सत्यवाक्सत्यविक्रमः १२०॥

[गम्भीरः] ब्रह्मादिकदेवतोंनें नहीं जानाजाताहै कर्म जिनका. [सर्वभावज्ञः] ब्रह्मादिक संपूर्ण जीवोंके अभिप्रायको जाननेवाले. "ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम्" इति स्मृतेः । [सच्चिदानन्दविग्रहः] सत्-ज्ञान-आनंदस्वरूप है विग्रह जिनका. [विष्वक्सेनः] चारों तरफ जानेवाली है सेना जिनकी. [सत्यसंधः] ८८० सत्य है प्रतिज्ञा जिनकी. [सत्यवाक्] यद्यपि भक्तकेलिये मिथ्या बोलभी देतेहैं तथापि अपने स्वभावसे सत्य बोलनेवाले. [सत्यविक्रमः] सत्य पराक्रमवाले ॥ १२० ॥

सत्यव्रतः सत्यरतः सत्यधर्मपरायणः ।
आपन्नार्तिप्रशमनो द्रौपदीमानरक्षकः ॥ १२१ ॥

[सत्यव्रतः] सत्य संकल्पवाले. [सत्यरतः] सत्यमें रत (प्रीतिमान). [सत्यधर्मपरायणः] सत्यधर्मही है प्रकृष्ट अयन (स्थान) जिनका १ सत्यधर्मपर (युधिष्ठिरादिक) पुरुषोंसे

प्राप्य २ [आपन्नार्तिप्रशमनः] शरणागतपुरुषोंकी आर्ति (दुःख) का नाश करनेवाले. [द्रौपदीमानरक्षकः] द्रौपदीके मानरक्षा करनेवाले ॥ १२१ ॥

कन्दर्पजनकः प्राज्ञो जगन्नाटकवैभवः ।
भक्तिवश्यो गुणातीतः सर्वैश्वर्यप्रदायकः ॥ १२२ ॥

[कन्दर्पजनकः] सौंदर्यके निधि होनेसे अपने दर्शनसे स्त्रियोंके कामवर्धक. [प्राज्ञः] उत्कृष्टतासे सबको जाननेवाले. [जगन्नाटकवैभवः] ८९० जगत्का नर्तन (नचाना) है वैभव जिनका. [भक्तिवश्यः] भक्तोंके अधीन. [गुणातीतः] प्राकृतगुणोंसे अतीत. [सर्वैश्वर्यप्रदायकः] ब्रह्मादिकदेवतोंकेताईं सब ऐश्वर्य देनेवाले ॥ १२२ ॥

दमघोषसुतद्वेषी बाणबाहुविखण्डनः ।
भीष्मभक्तिप्रदो दिव्यः कौरवान्वयनाशनः ॥ १२३ ॥

[दमघोषसुतद्वेषी] दमघोषसुत (शिशुपाल) के द्वेषी १ 'दम इन्द्रियनिग्रहः घोष्यते अनेन इति दमघोषः वेदः स सूयते पीड्यते' इस व्युत्पत्तिसे दमघोषसुत नाम पाखंड तिसके द्वेषी २. [बाणबाहुविखण्डनः] बाणासुरके बाहुओंको काटनेवाले. [भीष्मभक्तिप्रदः] भीष्मजीको भक्ति देनेवाले. [दिव्यः] दिव्य (अद्भुत लीलावाले). [कौरवान्वयनाशनः] कौरवोंके वंशका नाश करनेवाले ॥ १२३ ॥

कौन्तेयप्रियबन्धुश्च पार्थस्यन्दनसारथिः ।

[कौन्तेयप्रियबन्धुः] कुंतीके पुत्र युधिष्ठिरादिक है प्रिय-बँधु जिनके १ युधिष्ठिरादिकोंके प्रियबंधु २. [पार्थस्यन्दनसा-रथिः] ९०० अर्जुनके रथके सारथि अर्थात् अर्जुनके रथके घोडोंको छेडनेवाले.

इति श्रीगोपालनामसहस्रस्य नवमं शतकम् ॥ ९ ॥

अथ श्रीगोपालनामसहस्रस्य दशमं शतकम् ।

नरसिंहो महावीरः स्तम्भजातो महाबलः ॥१२४॥

[नरसिंहः] नरोंके मध्यमें उत्तम. [महावीरः] दुष्टपुरु-षोंको अत्यंत कँपावनेवाले. [स्तम्भजातः] स्तंभमें श्रीनरसिं-हरूपसे अवतार लेनेवाले. [महाबलः] बलवान् पुरुषोंमें अत्यंत बलवाले ॥ १२४ ॥

प्रह्लादवरदः सत्यो देवपूज्योऽभयंकरः ।
उपेन्द्र इन्द्रावरजो वामनो बलिबन्धनः ॥ १२५ ॥

[प्रह्लादवरदः] प्रह्लादको वर देनेवाले. [सत्यः] सत्पुरुषोंके अर्थ हित करनेवाले १ जिनका तीन्हों कालमें बाध नहीं २. [देव-पूज्यः] ब्रह्मादिकदेवतोंसे पूजनीय. [अभयंकरः] भक्तोंके ताईं अभय करनेवाले अर्थात् वैकुंठ देनेवाले. [उपेन्द्रः] इंद्रलोकसे ऊपर लोकमें रहनेवाले. [इन्द्रावरजः] ९१० इंद्रके अनुजभा-

ता. [वामनः] स्वल्प विग्रहवाले. [बलिबन्धनः] बलिको बांधनेवाले ॥ १२५ ॥

गजेन्द्रवरदः स्वामी सर्वदेवनमस्कृतः ।
शेषपर्यङ्कशयनो वैनतेयरथो जयी ॥ १२६ ॥

[गजेन्द्रवरदः] गजेंद्रको वर देनेवाले. [स्वामी] मदीयोऽयम् (यह हमारा है) ऐसा स्वीकार करनेवाले १ ऐश्वर्यवाले २. [सर्वदेवनमस्कृतः] संपूर्णदेवतोंके नमस्कारके स्थान. [शेषपर्यङ्कशयनः] शेषरूपी शय्यापर सोनेवाले. [वैनतेयरथः] गरुडजी है वाहन जिनके. [जयी] संपूर्णोंको जीतनेका शील (स्वभाव) वाले १ सबजगह है जय जिनका ॥ १२६ ॥

अव्याहतबलैश्वर्यसंपन्नः पूर्णमानसः ।
योगेश्वरेश्वरः साक्षी क्षेत्रज्ञो ज्ञानदायकः ॥१२७॥

[अव्याहतबलैश्वर्यसम्पन्नः] अखंडित बलऐश्वर्यसे युक्त. [पूर्णमानसः] १२० पूर्ण है मनका व्यापार जिनका. [योगेश्वरेश्वरः] योगेश्वर-सनत्कुमार- नारदप्रभृतिओंके ईश्वर. [साक्षी] ' अक्षैः सह वर्षते इति साक्षं क्रीडनं तदस्यास्तीति साक्षी ' ऐसे व्युत्पत्तिसे गोपोंके संग फाशोंसे क्रीडा करनेवाले. [क्षेत्रज्ञः] देहादिकको जाननेवाले अर्थात् सबके अंतर्यामी. [ज्ञानदायकः] ज्ञानके देनेवाले ॥ १२७ ॥

योगिहृत्पङ्कजावासो योगमायासमन्वितः ।
नादबिन्दुकलातीतश्चतुर्वर्गफलप्रदः ॥ १२८ ॥

[योगिहृत्पङ्कजावासः] योगियोंके हृदयरूपकमलमें रहने

वाले. [योगमायासमन्वितः] योगमाया (अपनी विचित्र कार्य करनेवाली अचिंत्य शक्ति) करके युक्त. [नादबिन्दुकलातीतः] नाद (स्वर) बिंदु (अनुस्वार विसर्ग) कला (मात्रा) इन्होंके समूहमें अतिशयकरके इतः (व्याप्त). [चतुर्वर्गफलप्रदः] धर्म, अर्थ, काम, मोक्षको देनेवाले ॥ १२८ ॥

सुषुम्णामार्गसंचारी देहस्यान्तरसंस्थितः ।
देहेन्द्रियमनःप्राणसाक्षी चेतःप्रदायकः ॥ १२९ ॥

[सुषुम्णामार्गसंचारी] इडा-पिंगलानाडियोंके मध्यमें रहनेवाली जो सुषुम्णानाडी उसके मार्गमें अंतर्यामिस्वरूपसे संचार करनेका है शील (स्वभाव) जिनका. [देहस्यान्तरसंस्थितः] १३० देहके मध्यमें अंतर्यामिस्वरूपसे सम्यक् (अच्छीतरहसे) स्थित. [देहेन्द्रियमनःप्राणसाक्षी] देह, इंद्रिय, मन, प्राण इन्होंके साक्षात् शुभ-अशुभ देनेवाले. [चेतःप्रसादकः] भक्तोंके चित्तको प्रसन्न करावनेवाले ॥ १२९ ॥

सूक्ष्मः सर्वगतो देही ज्ञानदर्पणगोचरः ।
तत्त्वत्रयात्मकोऽव्यक्तः कुण्डली समुपाश्रितः १३०॥

[सूक्ष्मः] अणुस्वरूप. "अणोरणीयान् महतो महीयान्" इति श्रुतेः। [सर्वगतः] संपूर्णोंमें व्याप्त होकर स्थित. "सर्वव्यापी सर्वभूतान्तरात्मा " इति श्रुतेः । [देही] जीवोंके अंतर्यामी. [ज्ञानदर्पणगोचरः] ज्ञानरूपी दर्पण (सीसा) के गोचर अर्थात् ज्ञानसे जो जानेजाय १ ज्ञानही है दर्पण जिन्होंका ऐसे जो योगिजन तिन्होंकूं ज्ञेय (जानेजाय) २. [तत्त्वत्रयात्मकः] जीव,

ईश्वर, प्रकृति इन्होंके घटक जो जीव-प्रकृति येही है शरीर जिनका. " यस्यात्मा शरीरं, यस्य पृथिवी शरीरम् " इति श्रुतेः। १ तत्त्वत्रय उपनिषदभाग तिससे प्रतिपाद्य २. [अव्यक्तः] गूढ. [कुण्डली] अप्राकृत कुंडल भूषणको धारण करनेवाले. [समुपाश्रितः] १४० भक्तोंकरके भलेप्रकारसे उपासित ॥ १३० ॥

ब्रह्मण्यः सर्वधर्मज्ञः शान्तो दान्तो गतक्लमः ।
श्रीनिवासः सदानन्दी विश्वमूर्तिर्महाप्रभुः ॥ १३१ ॥

[ब्रह्मण्यः] ब्रह्म (जीव, वेद, प्रकृति,) इन्होंके हित १ वैदिक २. [सर्वधर्मज्ञः] संपूर्णोंको धारण करनेवाला जो काल सो कहिये सर्वधर्म तिसको जाननेवाले. [शान्तः] सहनशील १ अपने भक्तोंको विषयसुखादिकमें आसक्तिरहित करनेवाले. [दान्तः] इंद्रियोंको रोकनेवाले. [गतक्लमः] संपूर्ण कार्य करनेमें गत दूर होगया है क्लम नाम श्रम जिनका. [श्रीनिवासः] लक्ष्मीका है निवास जिनके विषैं १ अपने आश्रितभक्तोंके विषैं निरंतर श्री (संपत्) का निवास करावनेवाले. [सदानन्दी] सदा सुखवाले. [विश्वमूर्तिः] विश्व है मूर्ति (शरीर) जिनकी १ विश्वरूप प्रतिमा है उपासनाका अधिष्ठान जिनका. [महाप्रभुः] सबके प्रभु (मालिक) ॥ १३१ ॥

सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् ।
समस्तभुवनाधारः समस्तप्राणरक्षकः ॥ १३२ ॥

[सहस्रशीर्षा] १५० " शतं सहस्रमयुतं सर्वमानन्त्यवाचकम् " इस वचनसे सहस्रशब्द अनंतका कहनेवाला है इससे

अनंत है शिर जिनके यह अर्थ भया. [पुरुषः] भक्तोंका पालन करनेवाले १ भक्तोंके मनोरथ पूर्ण करनेवाले २ संपूर्ण प्राणियेंमें प्राप्त होनेवाले अर्थात् व्याप्त ३. [सहस्राक्षः] अनंत नेत्रवाले. [सहस्रपात्] अनंत है चरण जिनके. [समस्तभुवनाधारः] सब भुवनों (लोकों) के आधार. [समस्तप्राणरक्षकः] सब-प्राणियोंके प्राणके रक्षक ॥ १३२ ॥

समस्तः सर्वभावज्ञो गोपिकाप्राणवल्लभः ।
नित्योत्सवो नित्यसौख्यो नित्यश्रीर्नित्यमंगलः १३३

[समस्तः] समस्त विश्व है रक्षणीय जिनका. [सर्वभावज्ञः] सब भावपदार्थोंकी उत्पत्ति जाननेवाले. [गोपिकाप्राणवल्लभः] गोपिका है प्राणतुल्य प्रिय जिनको १ गोपिकाओंके प्राणकी नाईं प्रिय. [नित्योत्सवः] नित्य (सदा) है नवीन (नये) चरित जिनके. [नित्यसौख्यः] ९६० नित्य सुखवाले. [नित्यश्रीः] सदा अपूर्व नवीन कांतिवाले. [नित्यमङ्गलः] सदा मंगलस्वरूप ॥ १३३ ॥

व्यूहार्चितो जगन्नाथः श्रीवैकुण्ठपुराधिपः ।
पूर्णानन्दघनीभूतो गोपवेषधरो हरिः ॥ १३४ ॥

[व्यूहार्चितः] चतुर्व्यूह (प्रद्युम्न, अनिरुद्ध, संकर्षण, वासुदेवस्वरूप) से पूजित. [जगन्नाथः] जगत्के नाथ १ जगत् की याचनाके विषय अर्थात् स्थान २. [श्रीवैकुण्ठपुराधिपः] श्रीवैकुंठविभूतिके मालिक. [पूर्णानन्दघनीभूतः] परिपूर्ण आनंद-मूर्ति. [गोपवेषधरः] लाठी और वेत इन्होंकरके गौओंके दो-

हनसमय भूषित है स्कंध (कंधा) और हस्त (हाथ) जिनके अर्थात् गौओंके चरावनेवाले पाली. [हरिः] भक्तोंको आनंदके प्रापक ॥ १३४ ॥

कलापकुसुमश्यामः कोमलः शान्तविग्रहः ।
गोपाङ्गनावृतोऽनन्तो वृन्दावनसमाश्रयः ॥ १३५ ॥

[कलापकुसुमश्यामः] कलाप (मयूरपिच्छ) का कुसुम नाम केशर अर्थात् चंद्राके ऊपरका रोम (बाल) उसकी तुल्य है श्यामवर्ण जिनका. [कोमलः] ९७० सुकुमार. [शान्तविग्रहः] शान्तमूर्त्ति. [गोपाङ्गनावृतः] गोपोंकी स्त्रियोंसे वेष्टित. [अनन्तः] नहीं परिच्छेद करनेमें आताहै गांभीर्य जिनका. [वृन्दावनसमाश्रयः] और जगहकी अपेक्षासे वृंदावनमेंही नित्य रहनेवाले ॥ १३५ ॥

गोपालकामिनीजारश्चौरजारशिखामणिः ।
परंज्योतिः पराकाशः परावासः परिस्फुटः ॥ १३६ ॥

[गोपालकामिनीजारः] गोपोंकी कामिनियों (स्त्रियों) का जार (मित्र). [चौरजारशिखामणिः] चौर और जार इन्होंके शिरोमणि (अग्रगण्य) चौर शब्दका अर्थ यहां सर्वथा चोरी करनेवालेका नहीं किंतु संग्रहरहित उदरके पूर्तिके लायक नवनीत (माखन) आदिका स्वीकार करनेवाले. और जारशब्दका अर्थ अपनी इच्छारहित गोपोंकी स्त्रियोंकी इच्छा पूर्ण करनेवाला ऐसा है १ अपने नामस्मरणमात्रसे भक्तोंके पापोंकी चोरी करनेवालोंमें शिरोमणि. “ नारायणो नाम नरो

नराणां प्रसिद्धचौरः कथितः पृथिव्याम् । अनेकजन्मार्जितपापसंचयं हरत्यशेषं स्मृतमात्र एव ॥" इत्युक्तेः । और जारशिखामणिका तात्पर्य यह है कि स्त्रियोंके साथ रमण करकेभी वीर्य त्याग नहीं किया. "आत्मन्यवरुद्धसौरतः" इति शुकोक्तेः ।२. [परंज्योतिः] सर्वोत्कृष्ट ज्योतिःस्वरूप. [पराकाशः] जीवोंके शिक्षक. [परावासः] उत्कृष्ट है स्थान जिनका. [परिस्फुटः]
९८० भक्तोंकी रक्षाके लिये सर्वत्र प्रादुर्भूत होनेवाले ॥१३६॥

अष्टादशाक्षरो मन्त्रोऽव्यापको लोकपावनः ।
सप्तकोटिमहामन्त्रशेखरो देवशेखरः ॥ १३७ ॥

[अष्टादशाक्षरः] अष्टादश (१८) अठारह संख्यांक है अक्षर जिसका ऐसा मंत्रस्वरूप देव. "कृष्णायेत्येकं पदं गोविन्दायेति द्वितीयं गोपीजनायेति तृतीयं वल्लभायेति तुरीयं स्वाहेति पंचममिति पञ्चपदीं जपन्पञ्चाङ्गं द्यावाभूमी सूर्याचन्द्रमसौ साग्नी तद्रूपतया ब्रह्म संपद्यते" इति तापनीश्रुतेः । [मन्त्रोऽव्यापकः] मंत्ररूप विग्रहवाले. [लोकपावनः] मंत्रमूर्तिसे लोक (जनों) को पावन करनेवाले. [सप्तकोटिमहामन्त्रशेखरः] सप्तकोटि महामंत्रोंके शिरोभूषण अर्थात् दशाक्षररूप. "गोपीजनवल्लभः ज्ञानेन तद्विज्ञानं भवति" इति तापनीश्रुतेः । [देवशेखरः] ब्रह्मादिकदेवतोंके शिरोभूषण. "एष सर्वेश्वरः" इति श्रुतेः ॥ १३७ ॥

---

१ मंत्र और देवतोंका अभेद है । २ गोपीजनवल्लभाय नमः । यह दशाक्षरी मंत्र है.

विज्ञानज्ञानसंधानस्तेजोराशिर्जगत्पतिः ।
भक्तलोकप्रसन्नात्मा भक्तमन्दारविग्रहः ॥ १३८ ॥

[विज्ञानज्ञानसंधानः] अनुभवात्मक ज्ञान और शास्त्रजन्य ज्ञान इन्होंसे जो जाने जाय १ शास्त्रजन्यज्ञानसे उत्पन्न होनेवाला जो आत्मयाथात्म्यज्ञान तिससे जो जाने जाय २. [तेजोराशिः] तेजके समूह अर्थात् कोटिसूर्यसेभी अधिक तेजवाले. [जगत्पतिः] श्रीलक्ष्मीजीके कटाक्षपातसे जगत्की रक्षा करनेवाले. [भक्तलोकप्रसन्नात्मा] भक्तजनोंके ऊपर प्रसन्न है मन जिनका. [भक्तमन्दारविग्रहः] ९९० अपने भक्तोंके कल्पवृक्षकी नाईं मनोरथ पूर्ण करनेवाला है विग्रह जिनका ॥ १३८ ॥

भक्तदारिद्र्यदमनो भक्तानां प्रीतिदायकः ।
भक्ताधीनमनाः पूज्यो भक्तलोकशिवंकरः ॥१३९॥

[भक्तदारिद्र्यदमनः] अपने भक्तोंके संसारसंबंधरूप दारिद्र्यका नाश करनेवाले. [भक्तानां प्रीतिदायकः] भक्तोंके अभीष्ट देनेवाले. [भक्ताधीनमनाः] भक्तोंके अधीन है मन जिनका. [पूज्यः] निष्काम-सकाम अधिकारिजनोंके पूजनीय. [भक्तलोकशिवंकरः] अपने आश्रितजनोंको शुभकार्योंमें मंगल करनेवाले ॥ १३९ ॥

भक्ताभीष्टप्रदः सर्वभक्ताघौघनिकृन्तनः ।
अपारकरुणासिन्धुर्भगवान्भक्ततत्परः ॥ १४० ॥

[भक्ताभीष्टप्रदः] अपने आश्रितजनोंको अभीष्ट (मोक्ष)

को देनेवाले. [सर्वभक्ताघौघनिकृन्तनः] संपूर्ण अपने भक्तोंके अघौघ (पापराशि) को काटनेवाले [अपारकरुणासिन्धुः] जिसका थाह नहीं ऐसा करुणासमुद्र अर्थात् गंभीरसमुद्र. [भगवान्] सर्वकारणों (ब्रह्मादिकों) के कारण. "मैत्रेय भगवच्छब्दः सर्वकारणकारणे" इति पराशरोक्तेः । [भक्ततत्परः] १०० भक्तिवाले पुरुष है पर (श्रेष्ठ) जिनके १ भक्तोंके विषैं तत्पर (दत्तचित्त) २ "तेषामहं समुद्धर्ता मृत्युसंसारसागरात्" इति स्मृतेः ॥ १४० ॥

इति श्रीगोपालनामसहस्रस्य दशमं शतकम् ॥ १० ॥

अथ फलश्रुतिश्लोकाः ।

इति श्रीराधिकानाथसाहस्रं नाम कीर्तितम् ।
स्मरणात्पापराशीनां खण्डनं मृत्युनाशनम् ॥ १ ॥

इतिशब्द यहां ग्रंथसमाप्तिका बोधक है. श्रीराधिकाके नाथ (श्रीगोपालजी) का हजारसंख्यावाला नाम (अभिधान) मैंने कहा, सो यह नामस्मरण पापराशियोंका छेदन और अकालमृत्युका नाश करनेवाला है ॥ १ ॥

वैष्णवानां प्रियकरं महारोगनिवारणम् ।
ब्रह्महत्या सुरापानं परस्त्रीगमनं तथा ॥ २ ॥
परद्रव्यापहरणं परद्वेषसमन्वितम् ।
मानसं वाचिकं कायं यत्पापं पापसंभवम् ।
सहस्रनामपठनात्सर्वं नश्यति तत्क्षणात् ॥ ३ ॥

और वैष्णवोंका प्रिय और महारोग (राजरोग आदि) का निवारण करनेवाला है यह नाम ब्रह्महत्या, मदिरापान, पराई स्त्रीसे गमन, परद्वेषसहित परद्रव्यको हरना, तथा मनसे, वाणीसे, शरीरसे जो प्रत्यवायजनक पाप होताहै सो ये सब गोपालसहस्रनामके पाठ करनेसे तत्क्षणही नाशको प्राप्त होतेहैं " कुर्वन्पापसहस्राणि भुञ्जानो वा यतस्ततः । पठन्नामसहस्रं तु दुर्गतिं न स गच्छति " इति स्कान्दोक्तेः ॥ २ ॥ ३ ॥

महादारिद्र्ययुक्तोऽसौ वैष्णवो विष्णुभक्तिमान् ।
कार्तिक्यां यः पठेद्रात्रौ शतमष्टोत्तरं क्रमात् ॥ ४ ॥
पीताम्बरधरो धीमान्सुगन्धैः पुष्पचन्दनैः ।
शतमष्टोत्तरं देवि पठेन्नामसहस्रकम् ॥ ५ ॥

बडे दारिद्र्ययुक्त विष्णुमंत्रोपासक और विष्णुभक्तिवाला अर्थात् अन्यदेवका भक्त न हो पीतांबरको धारण करनेवाला ऐसा बुद्धिमान् (अनुष्ठानकर्मज्ञ) श्रीकृष्णचंद्रकी भक्तिमें तत्पर होके जो कार्तिककी अमावास्याकी रात्रिमें बडे सुगंधवाले पुष्प तथा चंदनोंकरके श्रीगोपालसहस्रनामपुस्तकका पूजन कर श्रीगोपालसहस्रनामकी एक सौ आठ (१०८) आवृत्ति करे अर्थात् हे देवि ! जो गोपालसहस्रको एक सौ आठ बार पढे वह पुरुष अत्यंत दारिद्र्यसेभी छूट जाताहै ॥ ४ ॥ ५ ॥

चैत्रे शुक्ले च कृष्णे च कुहूसंक्रान्तिवासरे ॥ ६ ॥

---

१ कार्यसिद्धिमें विघ्न ।

पठितव्यं प्रयत्नेन त्रैलोक्यं मोहयेत्क्षणात् ।
तुलसीमालया युक्तो वैष्णवो भक्तितत्परः ॥ ७ ॥

पाठ करनेका कालविशेष दर्शातेहैं—चैत्रमासमें और सब अमावास्याओंमें और संक्रांतिके दिनमें सावधान होकर हे देवि! यह स्तोत्र पठनयोग्य है और तुलसीमालाकरके युक्त श्रीकृष्णचंद्रकी भक्तिमें तत्पर हुआ वैष्णव इस स्तोत्रको पढता हुआ त्रिलोकीको शीघ्रही मोहित करताहै ॥ ६ ॥ ७ ॥

रविवारे च शुक्रे च द्वादश्यां श्राद्धवासरे ।
ब्राह्मणं पूजयित्वा च भोजयित्वा विधानतः ॥ ८ ॥
पठेन्नामसहस्रं च ततः सिद्धिमवाप्नुयात् ।
महानिशायां सततं वैष्णवो यः पठेत्सदा ।
देशान्तरगता लक्ष्मीस्समायाति न संशयः ॥ ९ ॥

रविवारमें और सब मासकी शुक्लपक्षकी द्वादशीमें और श्राद्धके दिनमें ब्राह्मणका पूजन कर उसको विधिसे भोजन करवाकर जो श्रीगोपालसहस्रनामको पढे सो पुरुष तिस पाठसे सिद्ध मनोवांच्छित फलको प्राप्त होवे और जो वैष्णवजन रात्रिके मध्यमें निरंतर (विच्छेदरहित) इस स्तवका पाठ करे सो देशांतरको गयी हुई लक्ष्मीको प्राप्त होवे हे देवि! इसमें संशय नहीं ॥ ८ ॥ ९ ॥

त्रैलोक्ये च महादेव्यः सुन्दर्यः काममोहिताः ॥ १० ॥
मुग्धाः स्वयं समायान्ति वैष्णवं तं भजन्ति ताः ।
रोगी रोगात्प्रमुच्येत बद्धो मुच्येत बन्धनात् ॥ ११ ॥

और त्रिलोकीमें अतिसुंदर रूपवती इस स्तोत्रके पाठके प्रभावसे कामसे मोहित हुई मुग्धवधू अपनी इच्छासेही तिस वैष्णवजनको भजती है अर्थात् सेवन करती है और इस स्तोत्र-पाठके प्रभावसे रोगी रोगसे, बद्ध पुरुष संसारबंधनसे छूट जाता है ॥ १० ॥ ११ ॥

गुर्विणी जनयेत्पुत्रं कन्या विन्दति सत्पतिम् ।
राजा च वश्यतां याति किं पुनः क्षुद्रमानवाः॥१२॥
सहस्रनामश्रवणात्पठनात्पूजनात्प्रिये ।
धारणात्सर्वमाप्नोति वैष्णवो नात्रसंशयः ॥ १३ ॥

इस स्तोत्रके पाठके प्रभावसे गर्भवती स्त्री सुखपूर्वक पुत्रको उत्पन्न करे और कन्या श्रेष्ठपतिको प्राप्त होतीहै अर्थात् कन्या-को उत्तमपति मिलता है और राजाभी वशमें होजाताहै तो क्षुद्र-पुरुष वश होनेकी क्या बात है ! और श्रीगोपालसहस्रनाम-का स्वयं पाठ करनेसे अथवा दूसरेके मुखसे श्रवण करनेसे तथा पूजन करनेसे गृहमें पुस्तकसंग्रहसे वैष्णवजन अभीष्टको प्राप्त होताहै. प्रिये ! इसमें संशय नहीं ॥ १२ ॥ १३ ॥

वंशीवटे चान्यवटे तथा पिप्पलकेऽथवा ।
कदम्बपादपतले गोपालमूर्तिसन्निधौ ।
यः पठेद्वैष्णवो नित्यं स याति हरिमंदिरम् ॥ १४ ॥

जो वैष्णव वृंदावनमें स्थित अथवा कोई अन्य जगहसे वृंदावनमें चला आवे तो वंशीवटके अथवा अन्यवटके नीचे अथवा पीपलके नीचे अथवा कदंबवृक्षके नीचे अथवा अपनी

पूजित श्रीगोपालजीकी मूर्तिके सन्निधिमें जो नियमसे पाठ करे वह पुरुष वैकुंठलोकको प्राप्त होजावे ॥ १४ ॥

कृष्णेनोक्तं राधिकायै मयि प्रोक्तं तया प्रिये ॥ १५ ॥

हे प्रिये ! यह स्तोत्र राधिकाके ताईं श्रीकृष्णजीने प्रेमपूर्वक कहा और मेरे ताईं श्रीराधिकाजीने बडे अनुग्रहसे कहा ॥ १५ ॥

नारदाय पुरा प्रोक्तं नारदेन प्रकाशितम् ।
मया त्वयि वरारोहे प्रोक्तमेतत्सुदुर्लभम् ॥ १६ ॥

और नारदजीके ताईं पहिले श्रीकृष्णजीने यह स्तव कहा और नारदजीने लोकमें प्रकाशित किया. हे वरारोहे ! यह बडा दुर्लभ स्तव मैंनें तेरे ताईं बडी प्रीतिसे प्रकाशित किया ॥ १६ ॥

गोपनीयं प्रयत्नेन न प्रकाश्यं कथंचन ।
शठाय पापिने चैव लम्पटाय विशेषतः ॥ १७ ॥
न दातव्यं न दातव्यं न दातव्यं कदाचन ।
देयं शिष्याय शान्ताय विष्णुभक्तिरताय च ॥ १८ ॥

सो हे प्रिये ! बडे यत्नसे तू इस स्तोत्रको गुप्त रखना. शठ, साधुओंको ठगनेवाला, पापशील, स्त्रीरत इन पुरुषोंको कदाचिदभी तू नहीं कहना. हे भद्रे ! ऊपर कहे हुए पुरुषोंको यह स्तव नहीं देना, नहीं देना, नहीं देना. जो देवे तो शांत शिष्यको और विष्णुभक्तिमें जो रत पुरुष उसको यह स्तव प्रीतिसे देना ॥ १७ ॥ १८ ॥

गोदानब्रह्मयज्ञस्य वाजपेयशतस्य च ।
अश्वमेधसहस्रस्य फलं पाठे भवेद्ध्रुवम् ॥ १९ ॥

गोदानसहित ब्रह्मार्पित ज्ञानयज्ञका शत वाजपेययज्ञका हजार अश्वमेधयज्ञका फल इस स्तवके पाठसे निश्चित प्राप्त होताहै ॥ १९ ॥

मोहनं स्तम्भनं चैव मारणोच्चाटनादिकम् ।
यद्यद्वाञ्छति चित्तेन तत्तत्प्राप्नोति वैष्णवः ॥ २० ॥

विष्णुभक्त इस स्तवका पाठ करता हुआ मोहन, स्तंभन (रोकना), मारण, उच्चाटनादि और चित्तकरके जिस जिस फलकी इच्छा करे सो सो फल उसको प्राप्त होता है ॥ २० ॥

एकादश्यां नरः स्नात्वा सुगन्धिद्रव्यतैलकैः ।
आहारं ब्राह्मणे दत्त्वा दक्षिणां स्वर्णभूषणम् ॥ २१ ॥
तत आरम्भकर्ता स्यात्सर्वं प्राप्नोति मानवः ।
शतावृत्तिं सहस्रं च यः पठेद्वैष्णवो जनः ॥
श्रीवृन्दावनचन्द्रस्य प्रसादात्सर्वमाप्नुयात् ॥ २२ ॥

एकादशीतिथिमें सुगंधवाले द्रव्य तैलोंकरके जो कोई नर अभ्यंगस्नान करके ब्राह्मणके ताईं भोजन और सुवर्णदक्षिणा देकर स्तवको आरंभ करे तो यथोक्त फलको प्राप्त होताहै शत आवृत्ति किंवा हजार आवृत्तिसे जो वैष्णव पाठ करे वह संपूर्ण श्रीकृष्णजीके प्रसादसे अशेषफलको प्राप्त हो ॥ २१ ॥ २२ ॥

यद्गृहे पुस्तकं देवि पूजितं चैव तिष्ठति ॥ २३ ॥

न मारी न च दुर्भिक्षं नोपसर्गभयं क्वचित् ।
सर्पादिभूतयक्षाद्या नश्यन्ते नात्र संशयः ॥ २४ ॥

हे देवि ! जिसके गृहमें यह गोपालसहस्रनामका पुस्तक पूजित विराजमान है अर्थात् चंदन-तुलसी-पुष्प-धूप-दीपकरके अर्चित है तिस पुरुषके गृहमें मारी, दुर्भिक्ष्य, उपसर्ग (उत्पातादि) का भय नहीं होताहै और सर्प, भूत, यक्षादि सब नाशको प्राप्त होतेहैं इसमें संशय नहीं ॥ २३ ॥ २४ ॥

श्रीगोपालो महादेवि वसेत्तस्य गृहे सदा ।
यस्य गेहे सहस्रं च नाम्नां तिष्ठति पूजितम् ॥ २५ ॥

ॐ तत्सदिति श्रीसंमोहनतन्त्रे पार्वतीश्वरसंवादे
श्रीगोपालसहस्रनामस्तोत्रं संपूर्णम् ।

हे महादेवि ! जिसके गृहमें पूजित श्रीगोपालसहस्रनामका पुस्तकभी स्थित है और जो अभ्यस्त होय तो क्या बात है ! तिस पुरुषके गृहमें श्रीगोपालजी सदा निवास करते हैं ॥ २५ ॥

इति श्रीसंमोहनतन्त्रान्तर्गतपार्वतीश्वरसंवादीय-
श्रीगोपालसहस्रनाम्नः भाषाटीका समाप्ता ।

इति फलश्रुतिश्लोकाः ।

गोपाल हे परम हे भुवनैकबन्धो श्रीकृष्ण यादवपते करुणैकसिन्धो।
श्रीमन्मुकुन्द यदुनन्दन देवदेव रक्षस्व मां करुणयार्द्रदृशावलोक्य १

अतसीपुष्पसंकाशं राधावृक्षेषु संस्थितम् ।
वृन्दावननिकुञ्जस्थं सखीभिः शरणं वृणे ॥ २ ॥
श्रीमद्गोपालवेषस्य हरेर्नामसहस्रकम् ।
विवृतं भाषया विज्ञा यथापाठं यथामति ॥ ३
इदं तु स्वेच्छया सन्तः कृष्णपादानुरागिणः ।
क्षमध्वं यच्च चापल्यं मदीयं दीनवत्सलाः ॥ ४

महावनाख्यविदुषा ब्रिहाणीपुरवासिना ।
गोपालनामसाहस्रं भाषया विवृतं कृतम् ॥

माघ शुद्ध एकादशी शके १८१५ संवत् १९५०.

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-
गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास,
"लक्ष्मीवेंकटेश्वर" छापाखाना.
कल्याण-मुंबई.